शिक्षा और स्वतन्त्रता

(आधुनिक लोकतन्त्र में स्कूलों का योगदान)

लेखक

जेम्स बी० कॉनेण्ट

अनुवादक

विशालप्रसाद त्रिपाठी

1965

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

SHIKSHA AUR SWATANTRATA
(Hindi Version of '*Education and Liberty*')
by
James B. Conant

Rs. 2.00

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस,
काश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएं
हौज खास, नई दिल्ली
17, अशोक मार्ग, हजरत गंज, लखनऊ
चौड़ा रास्ता, धामानी मार्केट, जयपुर
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ़

प्रथम हिन्दी संस्करण : 1965
मूल्य : दो रुपये

मुद्रक :
पुरी प्रिंटर्स
नई दिल्ली-5

प्राक्कथन

कुछ वर्षों से मेरे मस्तिष्क में यह बात उठ रही थी कि संयुक्तराज्य तथा ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के कई देशों की माध्यमिक शिक्षा पर तुलनात्मक विचार करने का प्रयास करूँ। मुझे ऐसा लगा कि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के तरुणों को शिक्षित करने की प्रणाली के अध्ययन से संयुक्त राज्य के शिक्षा-जगत की कुछ समस्याओं पर प्रकाश पड़ जायगा, क्योंकि हमारे देश की भाँति इन देशों में भी जिन शैक्षिक परम्पराओं का विकास हुआ है उनका जन्म सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में इंगलैंड तथा स्काटलैंड में हुआ था। कारनेगी कारपोरेशन (Carnegie Corporation) के सौजन्य से मुझे जुलाई और अगस्त 1951 में एन्टीपोड्स (Antipodes) की यात्रा करने का अवसर मिला। इस यात्रा में मेरी आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के बहुत शिक्षकों से बातें हुईं। वर्जिनिया विश्वविद्यालय में पेज बारबर लैक्चर्स (Page Barbour Lectures) देने का निमन्त्रण मुझे शिक्षा और स्वतन्त्रता सम्बन्धी अपने कुछ अनुसन्धानों की समीक्षा करने का उपयुक्त अवसर प्रतीत हुआ। बात यह थी कि मैं उन बातों पर पुनः विचार करना चाहता था जिनको इस विश्वविद्यालय के जन्मदाता (Father of the University) शिक्षा सम्बन्धी अपनी रचनाओं द्वारा सबके सामने रख चुके थे। वर्जिनिया के श्रोता के लिये टॉमस जैफर्सन (Thomas Jefferson) की बात पुरानी हो सकती है किन्तु उन्होंने शिक्षा और स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा उसके फिर से पढ़ने मात्र से उत्तरी अमरीका की पिछले 15 वर्षों की उपलब्धि के स्थायी महत्त्व के विषय में आपका विश्वास ताजा हो उठता है।

1786 में जैफर्सन ने जार्ज वाशिंगटन (George Washington) को एक पत्र में लिखा, "यह मेरी दृढ़ धारणा है कि हमारी स्वतन्त्रता केवल जनता के हाथ में सुरक्षित रह सकती है, और वह भी ऐसी जनता के हाथ में जिसको

कुछ निश्चित कोटि की शिक्षा मिली हो ;"[1] अपने तीनों व्याख्यानों में मैंने इसी वाक्य को आधार बनाया। जैफर्सन का कथन, आज आधुनिक लोकतन्त्रों का मूल-मन्त्र बन गया है। इसको दृष्टि में रखकर इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि शताब्दी के मध्य में 'सभी युवकों को किस कोटि की शिक्षा' प्रदान की जाय जिससे भविष्य में हमारी स्वतन्त्रता जनता के हाथ सुरक्षित रह सके। यद्यपि वर्जिनिया की जनता के सामने जैफर्सन का उद्धरण प्रस्तुत करना मेरी धृष्टता थी; क्योंकि मैं उस समय के संघवाद के केन्द्र एडमसेज़ के कालेज (College of Adamses) का स्नातक रह चुका था, फिर भी मैंने अपने व्याख्यान उनके उद्धरण को पढ़ कर शुरू किये जिसमें उन्होंने संक्षेप में उन दो कर्तव्यों की चर्चा की थी जो अमरीकी लोकतन्त्र के स्कूलों में उनके समय से लेकर आज तक बने हुए हैं। 1779 में जो कुछ उन्होंने कर दिखाया तथा जिस पर प्रयत्न मात्र किया उसके विषय में जान एडम्स (John Adams) को उन्होंने 1813 में लिखा—

"स्वाधीनता की घोषणा के बाद अपने विधानमण्डल के पहले अधिवेशन में हमने एक क़ानून पास करवाया जिसके अनुसार उत्तराधिकार का सिद्धान्त समाप्त कर दिया गया। इसके बाद एक दूसरा क़ानून बना जिसने ज्येष्ठाधिकार का उन्मूलन किया। इसके अनुसार मृत व्यक्ति की सम्पत्ति उसके बच्चों या अन्य सम्बन्धियों में बाँट देने की व्यवस्था की गई। मेरे द्वारा तैयार किये गए इन क़ानूनों ने छद्म-कुलीनता को हमेशा के लिए खत्म कर दिया। एक दूसरा प्रस्ताव भी मैंने रखा था। यदि विधान मंडल उसे भी स्वीकार कर लेता तो मेरा कार्य समाप्त हो जाता। यह विद्या के अधिक व्यापक विस्तार के सम्बन्ध में एक बिल था। इसमें प्रत्येक देश को क़स्बों की भाँति पाँच या छः मील के क्षेत्र में विभक्त करने का सुझाव था। यह भी सुझाव था कि प्रत्येक क्षेत्र में एक निःशुल्क स्कूल हो जिसमें पढ़ना-लिखना तथा सामान्य अंकगणित सिखाया जाय। इसमें यह भी कहा गया था कि इन स्कूलों में से प्रत्येक वर्ष प्रजा के अत्यन्त योग्य व्यक्तियों (विद्यार्थियों) का चुनाव हो जो जिला स्कूलों में, सरकारी खर्च पर उच्चशिक्षा प्राप्त कर सकें तथा इन जिला स्कूलों से कुछ अत्यन्त होनहार

---

1. राय जै० हनी वेल 'दि एज्यूकेशनल वर्क्स आफ टामस जैफर्सन' (हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1931), पृ० 31।

छात्रों का चुनाव करने की व्यवस्था हो। अन्त में उसमें एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का सुझाव था जहाँ सभी उपयोगी विज्ञान पढ़ाये जा सकें। इस प्रकार इसके अनुसार, प्रत्येक वर्ग से योग्य तथा प्रतिभावान् व्यक्ति को खोजने तथा उनके द्वारा पूर्णतया तैयार किया जा सकता था जिससे आर्थिक तथा सामाजिक भेद समाप्त हो जाय और वे जनकार्यों में समानरूप से भाग ले सकें।"[1]

संयुक्तराज्य के निःशुल्क स्कूलों के दो उद्देश्य थे : विद्या का व्यापक विस्तार तथा 'योग्य एवं प्रतिभावान' व्यक्तियों के लिए पूरी शिक्षा। बीसवीं शताब्दी में इन उद्देश्यों की प्राप्ति कैसे हो सकती है? इसी प्रश्न को मैंने अपने तीनों व्याख्यानों में उठाया, जिनको प्रस्तुत करने का सौभाग्य मुझे टामस जैफर्सन के विश्वविद्यालय में मिला।

इन्हीं व्याख्यानों को दोहरा कर तथा इनमें कुछ नोट (पुस्तक के पीछे प्रकाशित) जोड़कर इनका विस्तार करके मैंने पुस्तक का आकार दे दिया। तीसरे व्याख्यान का उत्तरार्द्ध, जिसमें पब्लिक तथा प्राइवेट स्कूलों के सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है मेरे एक अभिभाषण पर आधृत है जो मैंने 7 अप्रैल, 1952 को बोस्टन में स्कूल प्रशासकों के अमरीकी संघ (American Association of School Administrators) की एक सभा में दिया था। **सैटरडे रिव्यू** तथा **आलुम्नी बुलेटिन** (Harvard Alumni Bulletin) में यह दो बार छपा तथा बड़े विवाद का विषय बना, विशेषतया उस हिस्से को लेकर जिसके शीर्षक दैनिक पत्रों में गलत छप गए थे। इसीलिए कुछ परिवर्तन करके तथा काफी नोट जोड़कर मैंने उस समस्या पर अपनी स्थिति स्पष्ट करने का प्रयास किया है जो कुछ अन्य समस्याओं के साथ आज अमरीकी जनता के सामने उपस्थित है। वह यह कि क्या हमने जनकोष के पोषण पर प्राइवेट स्कूलों के विकास का समर्थन किया है?[2]

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में ब्रिटिश तथा अमरीकी शिक्षा की तुलना प्रस्तुत की गई है। दूसरे अध्याय में अमरीका की विशेष देन चार वर्षीय लिबरल आर्टस् कालेज तथा माध्यमिक शिक्षा पर इसके प्रभाव की चर्चा है। तीसरा

---

1. वही, पृ० 89।

2. तीसरे अध्याय का सारांश वर्जिनिया क्वार्टरली रिव्यू में प्रकाशित हुआ है, जिल्द 28, अंक 4 (शरद, 1952) पृ० 500-517।

तथा अन्तिम अध्याय कुछ वर्तमान अमरीकी समस्याओं पर प्रभाव डालता है तथा कुछ समाधान भी प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त यह व्यापक हाईस्कूल के अद्वितीय स्वरूप पर बल देता है तथा साथ ही साथ उस पर अभी हाल में की गई कुछ आलोचनाओं पर विचार करता है।

मेरी गवेषणा का मूल विषय किशोरों की शिक्षा रही है। वस्तुतः, इस बात पर अब भी मतभेद है कि 12 से लेकर 20 साल तक के युवकों तथा युवतियों को शिक्षा प्रदान करके राष्ट्र की सेवा करने के लिये अत्यन्त उपयुक्त स्कूल का स्वरूप कैसा हो। छात्रों की संख्या में वृद्धि होने पर यह मतभेद और भी बढ़ जाएगा। यह बहुत शीघ्र होने वाला है। 1930 से लेकर 1939 तक जन्म-दर कम रही है यही कारण है कि आज कालेज आयुवर्ग के लड़के और लड़कियाँ उतने नहीं जितने एक दशक पहले थे। किन्तु 1940 के बाद जन्म-दर बढ़ गई हैं तथा आज भी वही स्थिति है। 8 वर्ष की आयु के बच्चे 10 से लेकर 18 वर्ष के बच्चों से कोई 50 प्रतिशत अधिक है। यह प्रश्न बड़ा रोचक है कि जन्म-दर फिर कम होगी या नहीं, पर इसका उतना महत्त्व नहीं है। चाहे यह बढ़े या नहीं, वास्तव में अब हमारे प्रारम्भिक स्कूल इस समस्या का सामना पहले से ही कर रहे हैं। हमारा विश्वास है कि विद्यार्थियों की संख्या में 10 वर्ष तक इसी प्रकार वृद्धि होती रहेगी।

अभी तक छात्रों की लहर केवल प्रारम्भिक विद्यालयों तक ही पहुँची है। प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में किसी भी सुझाव की आवश्यकता नहीं है। वर्षों पूर्व सभी अंग्रेज़ी भाषी राष्ट्रों में इसका बुनियादी स्वरूप निर्धारित कर दिया गया था। 5 से लेकर 15 वर्ष तक की आयु वाले अमरीकी बच्चों को पूर्ण-कालिक शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता के विषय में किसी को सन्देह नहीं है। एक बार निरक्षरता को समाप्त करने के निर्णय ले लेने के बाद कोई भी आधुनिक प्रजातन्त्र कम से कम बच्चों की सामान्य शिक्षा की योजना छोड़ नहीं सकता।

मैं प्रारम्भिक शिक्षा के महत्त्व को कम नहीं करना चाहता। लेकिन अत्यन्त गम्भीर समस्या तो तब आयेगी जब माध्यमिक स्कूल 1940 और 1950 के बाद की बढ़ी हुई जन्म-दर के प्रभाव से चिन्तित होंगे। इतने विशाल पैमाने पर निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा इसी शताब्दी की देन है। यह प्रणाली सभी

अंग्रेजी भाषी देशों में एक जैसी नहीं है। कम से कम संयुक्तराज्य की प्रणाली अन्य राष्ट्रों की प्रणालियों से बिलकुल भिन्न है।

जैसा कि हम भलीभाँति जानते हैं कि हमारे अमरीकी जनतन्त्र में हाई स्कूलों के उद्देश्य को लेकर बड़ा विवाद है। शिक्षक ही नहीं अभिभावक तथा नागरिक भी लगातार उनके उद्देश्यों तथा प्रणालियों पर कई दशकों तक अनुसन्धान करते रहे हैं। इनके विकास में इससे बड़ी सहायता मिली है। स्थानीय लोकसमाज ने अपने स्कूलों का स्वरूप-निर्धारण जितना यहाँ किया है उतना अन्य किसी भी देश में नहीं। यह हमारी करपोषित अमरीकी शिक्षा का बड़ा महत्त्वपूर्ण अंग है। लोकसमाज-उत्तरदायित्व का सूत्रपात करके हम बहुत कुछ राज्यारोपित एकरूपता से बच गए हैं। हमारे स्थानीय स्कूल महान् अनेकता को जन्म देते हैं जबकि उनका लक्ष्य लोकतान्त्रिक सहयोग की भावना का विकास करना है।

इस देश की जन-शिक्षा की विशिष्ट प्रणाली का विकास पिछले 75 वर्षों में हुआ। मैं समझता हूँ कि इसने हमको लोकतन्त्र के रूप में एक बहुत बड़ा साधन प्रदान किया है जिसने इस सम्प्रदाय बहुल राष्ट्र की सेवा की है। मैं समझता हूँ इसके अभाव में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रवास की देन विभिन्न राष्ट्रीय संस्कृतियों में सामंजस्य स्थापित होना कठिन था। मेरा विश्वास है कि अभी कहीं भी यह कार्य समाप्ति के निकट भी नहीं पहुँचा है। हमारे पब्लिक स्कूलों में आदर्शों का निस्सन्देह अभाव है। अतः अब प्रश्न यह उठता है कि हम अपने स्कूलों में सुधार करेंगे या नयी प्रणाली अपनायेंगे ? कुछ प्रभावशाली व्यक्ति परिवर्तन के समर्थक हैं। इसका निर्णय तो अमरीकी जनता करेगी, किन्तु समस्या के स्वरूप को समझना आवश्यक है। इस आशा से, कि तुलनात्मक अध्ययन से इस दिशा में कुछ लाभ होगा, मैंने इन व्याख्यानों को पहले लिखा और अब प्रकाशन के लिए तैयार किया है।

मैं वर्जिनिया विश्वविद्यालय का अत्यन्त आभारी हूँ कि उसने मुझे पेज बार्बर लैक्चर (Page-Barbour Lectures) देने के लिए आमंत्रित किया। साथ ही वहाँ एकत्रित श्रोतागण ने जो मेरी आवभगत तथा हार्दिक स्वागत किया उसके लिए मैं उनका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स

—जेम्स बी० कॉनेण्ट

विषय सूची

1

एंग्लो-सैक्सन परम्परा

इस अध्याय में मेरा विचार चार ब्रिटिश देशों तथा संयुक्तराज्य में माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति की समीक्षा करने का है। इसके लिए मैंने इंगलैंड, स्काटलैंड, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड को चुना है। कनाडा को मैंने इसलिए छोड़ दिया है कि एक तो उसके कुछ हिस्सों में द्विभाषीय संस्कृति की कठिनाई है; दूसरे वहाँ की शिक्षा-पद्धति पूरी-पूरी ब्रिटेन जैसी नहीं है। इस समीक्षा में और दूसरे अध्यायों में भी मेरे मन में वह पाठक रहा है जो शिक्षा के पेशे में नहीं है। यह अध्यापकों अथवा स्कूल-प्रशासकों के लिए कोई विद्वत्तापूर्ण प्रबन्ध नहीं; बल्कि शिक्षा-विषयक कुछ समस्याओं के स्पष्टीकरण का प्रयास है जिस पर ध्यान देना हर ज़िम्मेदार नागरिक का कर्तव्य है; क्योंकि हमारे पब्लिक-स्कूलों का भविष्य बहुत-कुछ अमरीकी जनता द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार निश्चित होगा।

आशा है कि कुछ पाठकों को यह महसूस होगा कि शिक्षा-सम्बन्धी प्रश्न उनमें न केवल नागरिक कर्तव्य की भावना अपितु बौद्धिक उत्कण्ठा भी जागृत करते हैं; क्योंकि यदि एक बार आप स्कूलों के विषय में, खास तौर से अध्यापन या कर के सन्दर्भ में सोचना बन्द कर दें और समाज तथा उसके युवक के सम्बन्ध को सामान्यरूप में सोचने लग जाएँ तो आप कुछ उत्तेजित हो उठेंगे। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है। प्रत्येक देश में इसका सम्बन्ध उस देश की वर्तमान राजनैतिक स्थिति, राष्ट्र के सामाजिक इतिहास तथा राष्ट्रीय आदर्शों से होता है। इस प्रकार शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करने वाला स्कूल के दायरे से बहुत दूर पहुँच जाता है। यहाँ तक कि इस पुस्तक में प्रस्तुत ऊपर की मीमांसा में भी आप देखेंगे कि किसी राष्ट्र के सामाजिक व्यवहार की विशेषता स्कूलों का स्वरूप निर्धारित करने में जितनी महत्त्वपूर्ण है उतना शिक्षा का कोई विशेष दर्शन स्वीकार करना नहीं।

अपने विषय पर आने के पूर्व मैं एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। मैं

यह नहीं मानता कि एक देश की शिक्षा पद्धति दूसरे देश में ज्यों की त्यों लागू हो सकती है। परन्तु मुझे सन्देह है कि द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी और जापान के साथ हमारे व्यवहारों में, कुछ हद तक विपरीत दृष्टिकोण अपनाया गया है। हमारे देश ने भी समय-समय पर ब्रिटिश या यूरोपियन शिक्षा-प्रणाली अपनाकर अधिक लाभ नहीं उठाया है। सामान्यतः, एक अच्छी शिक्षा-पद्धति की परिभाषा किसी समाज विशेष के सन्दर्भ में ही की जा सकती है। स्कूल पर उन परिवारों का प्रभाव पड़े बिना कहीं रहता जिनके बच्चे उसमें पढ़ते हैं। साथ ही साथ स्कूल पर उस समूचे सामाजिक ढांचे का असर भी अवश्य पड़ता है जिसमें आगे चलकर संभवतः उसके विद्यार्थियों को काम करना है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, मैं समझता हूँ, कि इस अध्याय में प्रस्तुत विवरण को संयुक्तराज्य में अपने चिन्तन के लिए एक प्रेरणा समझा जायगा न कि विदेशी शिक्षा-प्रणाली का अनुकरण अथवा खण्डन।

पहले हम इंगलैंड, स्काटलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा संयुक्तराज्य में माध्यमिक शिक्षा की स्थिति पर सरसरी दृष्टि से विचार करते हैं। यदि कोई पूरे समय के लिए स्कूल जाने वाले किशोरों की संख्या पर विचार करे तो उसे प्रतीत होगा कि संयुक्तराज्य और ब्रिटिश देशों में इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अन्तर है। संक्षेप में यह अन्तर हम इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं—**संयुक्तराज्य में 16 से 17 वर्ष तक के एक तिहाई से कम बालक और बालिकाएँ स्कूल नहीं जाते हैं जब कि चारों ब्रिटिश देशों में उसी आयु-वर्ग के एक तिहाई से कम (बालक और बालिकाएँ) स्कूल जाते हैं।** यह अन्तर और भी स्पष्ट हो जाता है जब हमारा ध्यान उस आयु पर जाता है जब इन राष्ट्रों का युवक-वर्ग अपनी पूर्णकालिक शिक्षा समाप्त कर देता है। कहना न होगा कि उस किसी भी राष्ट्र में आयु की ऐसी कोई सीमा नहीं है जिसके बाद पूर्णकालिक शिक्षा जारी न रखी जा सके। पर होता यह है कि उक्त प्रत्येक राष्ट्र में चौदह वर्ष से ऊपर के बालकों और बालिकाओं का कुछ प्रतिशत प्रति वर्ष स्कूल छोड़ देता है। विभिन्न आयु वर्गों (अर्थात् 13 वर्षीय 14 वर्षीय इत्यादि) में विभक्त हो जाने पर ये प्रतिशत दरें एक विशिष्ट स्थिति प्राप्त कर लेती हैं। वैसे तो इस स्थिति में हर देश में पिछले कुछ दशकों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं और अब भी हो रहे हैं: परन्तु, जैसा कि हम देखेंगे, इसमें वर्ष-प्रतिवर्ष कोई विशेष उतार-

चढ़ाव नहीं होता । अतः निम्न तालिका द्वारा उक्त पाँच देशों में किशोरों की शिक्षा के बारे में मौलिक अन्तर पूरा-पूरा स्पष्ट हो जाएगा ।

तालिका 1

चार ब्रिटिश देशों तथा संयुक्तराज्य में किशोर-शिक्षा की स्थिति

स्कूल वर्ष 1950 के प्रारम्भ में पूर्णकालिक शिक्षा के आयु-वर्ग का प्रतिशत मान

आयु वर्ग	इंगलैंड	स्काटलैंड	आस्ट्रेलिया*			न्यूजीलैंड	संयुक्त-राज्य‡
			(1)	(2)	(3)		
13	98†	98†	98†	98†	96	98†	95
14	98†	95	69	95	63	98	93
15	31	37	42	38	35	60	88
16	16	14	22	18	18	33	76
17‡	7.5	9	11	14	12	15	61

* (1) दक्षिणी आस्ट्रेलिया (2) न्यू साउथ वेल्स (3) विक्टोरिया

† ये 1940 के आंकड़े हैं ।

‡ विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की एक बहुत बड़ी संख्या इस आयु वर्ग में है, और इंगलैंड तथा न्यूजीलैंड को छोड़कर, यहाँ उनका परिगणन भी किया गया है ।

उपर्युक्त तालिका से लम्बे पाठ्यक्रम का अनुसरण करने वाले किशोरों की संख्या की दृष्टि से संयुक्तराज्य की विशिष्ट स्थिति का साफ पता चल जाता है। उदाहरण के लिए प्रथम पंक्ति : तेरह वर्षीय आयु वर्ग के आँकड़ों (अर्थात् तेरह से ऊपर और चौदह से नीचे के सभी बालक और बालिकाएँ उस तारीख को जिसके लिये ये आँकड़े वैध हैं) पर विचार कीजिए । यह स्पष्ट है कि आस्ट्रेलिया के उपर्युक्त तीन राज्यों में से एक को छोड़कर अन्य सभी देशों के बालक और बालिकाएँ कम से कम 14 वर्ष की आयु तक आवश्यक रूप से पूर्णकालिक शिक्षा प्राप्त करते हैं । वस्तुतः आस्ट्रेलिया के दो राज्यों को छोड़कर यही बात 15 वर्ष की आयु तक की शिक्षा के सम्बन्ध में भी लागू होती है। वास्तव में महत्त्व-

पूर्ण अन्तर तो 15 वर्ष के आयु-वर्ग में है। उससे भी अधिक उल्लेखनीय अन्तर विभिन्न देशों में 16 वर्ष के आयु वर्ग का प्रतिशतमान सूचित करने वाले आँकड़ों में मिलेगा।

न्यूजीलैंड की स्थिति उपर्युक्त सामान्य प्रतिशत दर के बहुत कुछ निकट है। और यदि आप 15 वर्षीय आयु वर्ग की तुलना पर दृष्टिपात करें तो आप देखेंगे कि इस दृष्टि से न्यूजीलैंड अन्य ब्रिटिश देशों के नहीं, अपितु संयुक्तराज्य के समान है। यह बात अनायास नहीं हो गई। लगभग दस वर्ष पूर्व न्यूज़ीलैंड की माध्यमिक शिक्षा के स्वरूप में बहुत विचार-विमर्श के बाद कुछ परिवर्तन किये गए थे। यह साम्य उन्हीं परिवर्तनों का प्रतिफलन है। इस पर हम आगे चलकर विचार करेंगे।

यदि यह विषमता ब्रिटेन और संयुक्तराज्य तक ही सीमित होती तो हम यह कह सकते थे कि यह अन्तर एक प्राचीन तथा नवीन सभ्यता का है। किन्तु यह सामान्य नियम आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड के आँकड़ों के सामने भी लड़खड़ा जाता है। अमरीकी शिक्षा-पद्धति की विशेषता की व्याख्या केवल नवीनता से नहीं होती; ना ही उन सम्मतियों के प्रवाह से होती है जो लगभग 1905 में समुदित हुई और जिनके परिणामस्वरूप विशेषतः पिछले 20 वर्षों में, समाज कल्याण के क़ानून बने। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड इस दिशा में बहुत आगे बढ़ गए हैं; यहाँ तक कि वहाँ कभी-कभी मजदूर-दल की सरकारें, एक पीढ़ी से भी अधिक समय से बीच-बीच में काम करती रही हैं। फिर भी उनकी शिक्षा का स्वरूप संयुक्तराज्य की अपेक्षा इंगलैंड से अधिक मिलता-जुलता है।

इस प्रश्न का, संभवतः, एक उत्तर नहीं कि हमारी अमरीकी शिक्षा का स्वरूप अन्य देशों से इतना भिन्न क्यों है? अगले अध्याय में हम एक कारण पर विचार करेंगे। वह कारण है—अमरीका के चारवर्षीय लिबरल आर्ट्स कालेज का प्रभाव, जिसकी समकक्ष संस्थाएँ दूसरे देशों में नहीं हैं। कालेज और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की संख्या की तुलना से संयुक्तराज्य की विशेष स्थिति और भी दृढ़ हो जाती है। अमरीका के कालेज-आयु के लगभग 20 प्रतिशत बालक और बालिकाएँ कम से कम एक साल तक पूरे समय के लिए कालेज या विश्वविद्यालय जाते हैं, जबकि अन्य किसी भी अंग्रज़ी-भाषी राज्य में यह संख्या 7 प्रतिशत से अधिक नहीं है। लेकिन उक्त प्रत्येक देश की माध्यमिक शिक्षा पर

विचार किए बिना अमरीकी कालेज की ब्रिटिश विश्वविद्यालय से विषमता दिखाना उलटी बात होगी—प्रत्येक राष्ट्र की समूची शिक्षा पद्धति का विकास उस देश के सामाजिक इतिहास के साथ हुआ है।

इंगलैंड

ब्रिटिश माध्यमिक शिक्षा की किसी भी प्रचार की समीक्षा का प्रारम्भ इंगलैंड से करना उचित होगा। वैसे इस प्रयास में कुछ कठिनाइयाँ हैं, क्योंकि इंगलैंड इस दृष्टि से इस समय संक्रान्तिकालीन स्थिति से गुजर रहा है। अभी तो नहीं पर कुछ वर्षों बाद यहाँ की स्थिति माध्यमिक शिक्षा के तुलनात्मक अध्ययन के लिए अधिक उपयुक्त होगी। कुछ ही दिनों की बात है स्काटलैंड के एक विश्वविद्यालय अधिकारी ने मुझे बताया कि 1944 के ऐक्ट के पहले इंगलैंड में किसी भी प्रकार की शिक्षापद्धति नहीं थी। हो सकता है इसमें कुछ अत्युक्ति हो किन्तु 1946 में इंगलैंड और वेल्स के शिक्षा मन्त्री ने लिखा था "इस देश के इतिहास में पहली बार 11 वर्ष से ऊपर की आयु वाले सभी बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था होगी।……(1944 के ऐक्ट के परिणाम स्वरूप)…अब माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का सबको समान अधिकार होगा।"

इस सम्बन्ध में इंगलैंड और वेल्स के शिक्षा मन्त्रालय के स्थायी सचिव सर जाँन मॉड के विचार इस प्रकार हैं—

"1851 में इंगलैंड में शिक्षा की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी (यहाँ जो कुछ मैं कहूँगा उसका स्काटलैंड से कोई सम्बन्ध नहीं है)। अंग्रेजी समाज में उस समय दो 'वर्ग' थे। एक तो ऐसा जो शिक्षा का व्यय आसानी से वहन कर सकता था और दूसरा जिसके लिए यह संभव नहीं था। नियमित शिक्षा-प्रणाली का तो प्राय: अभाव ही था।

जहाँ तक 'धनी' वर्ग का प्रश्न है आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयों की सुविधा इंगलैंड के राज-धर्म के अनुयायी लोगों के लिए ही थी। इंगलैंड के दूसरे भागों में, लन्दन, डुरहम तथा मैनचेस्टर के अतिरिक्त, विश्वविद्यालय की शिक्षा की सुविधा 'ना' के बराबर थी।……पब्लिक-स्कूलों (आधुनिक दृष्टि-कोण से) (अमरीकी दृष्टिकोण से नहीं) की संख्या बहुत कम थी। उनका भी

स्वरूप कुछ मर्यादा के अनुकूल नहीं था······और वे लड़कों के लिए ही सीमित थे। कुछ ग्रामर स्कूल ऐसे थे जहाँ लगभग सभी सुविधाएँ प्राप्त थीं। किन्तु उनमें से अभी कुछ ही लगभग एक शताब्दी की बिगड़ी हुई स्थिति से सुधर पाये थे। डिसेंटिंग एकादमियों (Dissenting Academies) की हालत भी बिगड़ती जा रही थी।

निर्धन वर्ग में तो शिक्षा धार्मिक होड़ मात्र थी।

सरकार तो शिक्षा के सम्बन्ध में साधनहीन लोगों की अन्य समस्याओं के साथ थोड़ा बहुत विचार करती थी और उसकी चर्चा निर्धनों तथा अनाथालयों पर बने क़ानूनों में हो जाया करती थी। शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाला एक भी राजनैतिक नेता किसी भी वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करता था।

1850 के बाद 20 वर्षों तक किसी राजनीतिक दल के नेता ने शिक्षा सम्बन्धी कोई बिल तक प्रस्तुत करने का साहस नहीं किया। शायद वे लोग ऐंग्लिकन (Anglican) या डिसेण्टर (Dissenter) लोगों को नाराज़ नहीं करना चाहते थे।

1870 तक तो शिक्षा की संभावनाओं की दृष्टि से इन दोनों वर्गों का अन्तर और भी बढ़ गया था ···। इस शताब्दी के अन्तिम चरण में तो यह भेद बहुत अधिक बढ़ गया था। हाँ, संभावनाओं में निस्सन्देह पर्याप्त सुधार हुआ था। 1870 के एक्ट के अनुसार श्रमिक-वर्ग के शत प्रतिशत बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा दी गई।

(1899) में बहुत विचार-विमर्श के बाद जनता द्वारा पोषित और सरकार द्वारा स्थापित—दोनों प्रकार के प्रारम्भिक विद्यालयों की गतिविधि में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया गया और इनका प्रबन्ध एक ही स्थानीय संस्था को सौंपा गया···। लेकिन 1902 और 1918 के शिक्षा अधिनियमों में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण परिवर्तन नगरपालिका माध्यमिक विद्यालयों (Municipal Secondary Schools) की स्थापना तथा उनका विकास था। इसके पश्चात् 'निर्धन' वर्ग के अधिकाधिक बच्चे माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने लग गए······।

1951 तक की इंगलैंड तथा वेल्स की स्कूल-शिक्षा द्विवर्गीय शिक्षा है—एक वर्ग तो ऐसा है जो फीस देता है और दूसरा ऐसा जो निःशुल्क शिक्षा

प्राप्त करता है । निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने वाले वर्ग को भी दो 'श्रेणियों' में विभक्त किया जा सकता है— एक तो वे लोग जो अपने बच्चों को ग्रामर स्कूलों (Grammar Schools) में भेजते हैं और दूसरे वे जो अन्य स्कूलों में···। यह भेद तभी समाप्त हो सकता है जब माध्यमिक शिक्षा जनसामान्य को समानरूप से प्राप्त होगी । और यह बात न केवल ग्रामर स्कूलों (Grammar Schools) के लिए अपितु सेकेण्डरी मार्डन (Secondary Modern), माध्यमिक तकनीकी (Secondary Technical), द्विकल्पीय (Bilateral), बहुकल्पीय (Multilateral) तथा व्यापक (Comprehensive) स्कूलों के लिए लागू होती है । इस भेद को समाप्त करने एक रास्ता और भी है । वह यह कि इन व्यापक स्कूलों के पास अच्छा भवन का और अच्छे अध्यापक हों और साथ ही साथ ये अपने ढंग के प्रथम श्रेणी के विद्यालय हों (जैसा कि कुछ मार्डन स्कूल पहले ही बन चुके हैं ।) इनका स्तर वैसा ही हो जैसा कि उत्कृष्ट ग्रामर स्कूलों का बहुत पहले से है ।"

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि इंगलैंड में निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा की अभी शुरूआत भर हुई है । आने वाले दस या बीस सालों में वहाँ शिक्षा की स्थिति आज से भिन्न होगी । तालिका नं० 1 में दिये गए आँकड़ों की तुलना दूसरे देशों के साथ करते हुए इस बात को अवश्य ध्यान में रखें। 1944 के एक्ट में इस बात पर ज़ोर दिया गया कि शिक्षामन्त्री को, यथाशीघ्र स्कूल छोड़ने की आयु 16 वर्ष कर देनी चाहिये । द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् की कठिनाइयों तथा 1950 की बढ़ती हुई अन्तर्राष्ट्रीय उलझनों के कारण निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा विस्तार को एक लम्बे समय के लिए स्थगित करना आवश्यक हो गया । यद्यपि पहले ऐसी आशा नहीं थी । जब कभी यह संभव होगा, 15-16 वर्ष के शतप्रतिशत तरुण पूर्णकालीन शिक्षा प्राप्त करने लग जाएँगे (संयुक्त राज्य में 1952 में यह संख्या 95 प्रतिशत के आसपास थी ।) स्मरण रहे कि इंगलैंड में इस समय इस आयु वर्ग के पूर्णकालीन शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों की संख्या पिछले पाँच वर्षों की दुगुनी है । शिक्षा के विस्तार के लिए इतना प्रयास संभवतः पहले कभी नहीं किया गया । अंग्रेजी-भाषी राष्ट्रों के इतिहास में यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना थी ।

एक अमरीकी शिक्षा समीक्षक को इंगलैंड की शिक्षा की समीक्षा करते

समय इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि कहीं वह अपने देश के शिक्षा-जगत में प्रचलित शब्दों का इस सन्दर्भ में ग़लत अर्थ न लगा बैठे। इंगलैंड में कुछ प्राइवेट स्कूलों के लिए 'पब्लिक स्कूल' का प्रयोग इसका स्पष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार इंगलैंड में 'माध्यमिक शिक्षा (Secondary Education)' का अभिप्राय भी वह नहीं लिया जाता जो संयुक्तराज्य में लिया जाता है। यह बात अवश्य है कि यह परिवर्तन अभी हाल में हुआ है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए इंगलैंड तथा वेल्स के शिक्षा मन्त्री में सन् 1946 में लिखा था—

"'सर्वसामान्य के लिए माध्यमिक शिक्षा' के अर्थ के विषय में लोगों में भ्रान्त धारणा फैल गई है। 1944 तक 'माध्यमिक' का अभिप्राय था एक ऐसे विशेष प्रकार के स्कूल से जिससे केवल समाज का एक अल्प वर्ग ही लाभान्वित हो सकता था। ऐसे स्कूलों में अध्यापक अधिक योग्य हुआ करते थे तथा उनका वेतन भी अन्य स्कूलों के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक होता था। इनकी कक्षायें छोटी हुआ करती थीं साथ ही साथ इनकी आहाते तथा अन्य सुविधाएँ भी पड़ोस के दूसरे स्कूलों से कहीं अधिक आकर्षक हुआ करती थीं। इन स्कूलों में बड़े मेधावी छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे जिनका प्रवेश प्रतियोगितात्मक परीक्षा द्वारा होता था अथवा ऐसे विविध योग्यता वाले छात्र जिनके माँ-बाप इनकी फीस दे सकते थे। इस प्रकार का माध्यमिक स्कूल अब भी बना रहेगा और अपने ढंग से काम करता रहेगा। स्कूल की सुविधा उन सभी बच्चों के लिए ज्यों की त्यों बनी रहेगी जिनके लिए इसकी शिक्षा-प्रणाली विशेष उपयुक्त समझी जायगी। किन्तु यह तो ऐसा माध्यमिक स्कूल है जहाँ विशेष रुझान और अभिरुचि वाले विद्यार्थी ही जा सकते हैं। भविष्य में विविध प्रकार के माध्यमिक स्कूल होंगे और इनमें विविध पाठ्यक्रम भी होंगे। वस्तुतः ये स्कूल बच्चों को ऐसी शिक्षा प्रदान करेंगे जो आवश्यकता के बिलकुल अनुरूप हो। इन सभी स्कूलों में वे सारे साधन और सुविधाएँ प्राप्त होंगी जो अब तक, विशेष रूप से, उन स्कूलों में रहती थीं जो 1944 तक सेकेण्डरी स्कूल कहलाते थे।"

सन् 1952 से लेकर आज तक ऐसी स्थिति है कि इंगलैंड में 11 से 12 वर्ष तक की आयु के लगभग 71 प्रतिशत लड़के और लड़कियाँ सरकार द्वारा पोषित विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा (Nonacademic) प्रारम्भ करते हैं। इनमें से लगभग 6 प्रतिशत बाद में दूसरे स्कूलों को चले जाते हैं—अर्थात् 4.5

प्रतिशत तो तकनीकी स्कूलों को और 1.5 प्रतिशत विद्योचित (Academic) अध्ययन के लिए। उसी आयु वर्ग के लगभग 25 प्रतिशत बच्चे इस प्रकार का अध्ययन आरम्भ करते हैं जो उनके लिए अन्ततः विश्वविद्यालय का मार्ग खोल सके। इनमें से 18 प्रतिशत तो सरकार द्वारा पोषित या अनुदान प्राप्त ग्रामर स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करते हैं और शेष 6 या 7 प्रतिशत स्वाधीन स्कूलों (Independent) में। परम्परागत शास्त्रीय शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा तो केवल उन्हीं लोगों को प्राप्त होती है जो उस स्वाधीन स्कूल में पढ़ते हैं जहाँ फीस ली जाती। इस कोटि में वे प्रसिद्ध 'पब्लिक स्कूल' आते हैं जो दरअसल प्राइवेट हैं या उन ग्रामर स्कूलों में जिनका व्यय पूरा-पूरा अथवा आँशिक जन-निधि बहन करती है। आजकल ग्रामर स्कूलों में प्रवेश के लिए जितने अभ्यर्थी होते हैं उतनी, वस्तुतः, उनके पास जगहें नहीं होतीं। बच्चों के प्रवेश का निर्णय स्कूल के अधिकारी परीक्षा द्वारा करते हैं। इस प्रकार माँ-बाप की इच्छा तथा परीक्षकों के निर्णय मिलकर बच्चे का भविष्य 11+ की आयु पर अधिकांशतः निर्निवाद रूप से निश्चित कर देता है। इसके बाद भी यदि लड़का चाहे तो एक प्रकार के स्कूल से दूसरे स्कूल में स्थानान्तरण हो सकता है पर बार-बार नहीं।

जहाँ तक इंगलैंड के धनी-मानी और पेशेवर लोगों का प्रश्न है यह बात भी सामान्य-सी है। वे तो इस आयु में अपने बच्चों को 'पब्लिक स्कूल' की तैयारी के लिए प्राइवेट स्कूलों में भेजने के अभ्यस्त हैं। लेकिन इस प्रकार जल्दी निर्णय लेकर किसी कर-पोषित निःशुल्क स्कूलों में प्रवेश दिलाना बिलकुल अलग बात है। कुछ परिवारों द्वारा, जो अपने बच्चों को प्राइवेट आवासिक स्कूल की शिक्षा दिलवाना तो चाहते हैं किन्तु उनके पास पर्याप्त साधन नहीं हैं, उक्त शिक्षा पद्धति का विरोध भी किया गया है। कहीं-कहीं तो अब वे ग्रामर स्कूल सबको निःशुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हैं जो पहले मामूली फीस लेकर किया करते थे। परन्तु इनमें प्रवेश योग्यता के आधार पर होता है। इससे कुछ बच्चे उस सुविधा से अवश्य वंचित रह जाते हैं जो इनके विचार में विश्वविद्यालय की तैयारी के लिए एकमात्र साधन हैं।

इंगलैंड में यह प्रश्न बार-बार उठाया जाता है, कि यह तय करने के लिए कि विश्वविद्यालय की शिक्षा किसको दिलवाई जाय, किसको न दिलवाई जाय क्या 11+ अत्यन्त छोटी आयु नहीं है? इस प्रश्न पर विचार करते समय हमारे

सामने कुछ इसी प्रकार की अमरीकी समस्याएँ भी, कुछ नए रूप में उपस्थित हो जाती हैं। यदि भावी विश्वविद्यालय स्नातक को उस अर्थ में विद्वान बनना है जो उन्नीसवीं शताब्दी में प्रचलित था, तब तो उसे अपनी नियमित शिक्षा 11 या 12 वर्ष की आयु में शुरू कर देनी चाहिए। हाँ यह नियम तभी लागू होता है जब उसको अपनी औपचारिक शिक्षा 21 या 22 वर्ष की आयु तक समाप्त कर लेनी हो। जहाँ तक मैं समझता हूँ, पूरे ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में इस बात पर ज़ोर दिया जाता है। यदि कोई बालक या बालिका विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने के पहले दो विदेशी भाषाओं का अच्छा ज्ञान चाहता है तो भाषाओं का अध्ययन कुछ जल्दी शुरू कर देना चाहिए। यदि पुरानी माध्यमिक शिक्षा पद्धति, जिसमें 6 वर्ष लैटिन के लिए तथा 4 या 5 वर्ष ग्रीक, फ्रेंच और जर्मन को देने पड़ते हैं, अपनानी हो तो समय 6 वर्ष से कम नहीं लगेगा। वस्तुतः यदि आपका इस बात पर अधिक आग्रह है कि चूंकि आपके बच्चे को आगे चलकर भावी वृत्तिक शिक्षा लेनी है अतः उसमें विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने के पहले विशेष ज्ञान और अच्छी योग्यता हो तो यह निर्णय भी आपको शीघ्र ही ले लेना चाहिए कि उसे कालेज भेजना है अथवा नहीं। यह बात अमरीकी माध्यमिक शिक्षा की कमियों पर विचार करते समय हमेशा छूट जाती है।

निःशुल्क स्कूलों (Free Schools) में सामाजिक या पारिवारिक दबाव उतना नहीं रहता जितना प्राइवेट स्कूलों में रहता है। इन निःशुल्क स्कूलों में 6 साल का लम्बा पाठ्यक्रम जिसमें दो भाषाएँ, अंकगणित, बीजगणित, ज्योमेट्री, अंग्रेजी व्याकरण तथा साहित्य पढ़ाये जाते है, कुछ मेधावी लड़के या लड़कियाँ ही 12 साल की आयु में शुरू करने का साहस करते हैं। अतः यदि फेल होने वाले छात्रों की संख्या कम करनी है तो अधिकारियों को चुनाव में सख्ती करनी पड़ेगी।

अधिकांश पाठक तो ब्रिटिश तथा संयुक्तराज्य की शिक्षा पद्धति की विषमता से परिचित ही होंगे। संयुक्तराज्य में केवल बड़े नगरों में और कुछ कस्बों में इंगलिश ग्रामर स्कूलों की भांति सरकारी माध्यमिक स्कूल हैं। यहाँ अधिक संख्या व्यापक हाई स्कूलों (Comprehensive High Schools) की है। इनमें ये भी प्रायः जूनियर और सीनियर हाई स्कूलों में बंटे हुए है। इन स्कूलों में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम रखे जा सकते हैं बल्कि मैं तो यह कहूँगा, रखे

जाने चाहिए। इनमें से कुछ पाठ्यक्रम तो ऐसे हों जो विश्वविद्यालय-शिक्षा के लिए द्वार खोलें और कुछ ऐसे जिनका स्वरूप शुद्ध व्यावसायिक हो। किन्तु अमरीकी प्रजातन्त्र की देन व्यापक हाई स्कूल पर और अधिक विचार करने के पहले मैं अन्य तीन ब्रिटिश देशों के माध्यमिक स्कूलों पर दृष्टिपात करना चाहता हूँ।

स्काटलैंड

इंगलैंड और स्काटलैंड 1707 से एक राष्ट्र रहे हैं और यहाँ एक ही पार्लियामेण्ट काम करती रही है। लेकिन ट्वीड (Tweed) के उत्तरी तथा दक्षिणी भाग में शिक्षा की स्थिति सदैव भिन्न रही है। प्राथमिकता तथा माध्यमिक शिक्षा सम्बन्धी प्रथम संसदीय प्रक्रिया इस बात की स्पष्ट परिचायक है। शिक्षा-मन्त्री, जो आज हाउस आफ कामन्स में प्रश्नों के उत्तर देता है केवल इंगलैंड और वेल्स के स्कूलों पर होने वाले खर्च का ज़िम्मेदार होता है। स्काटलैंड की शिक्षा की ज़िम्मेदारी सेक्रेटरी आफ स्टेट (स्काटलैंड) पर होती है। किन्तु स्काटलैंड और इंग्लैंड दोनों के विद्यालयों को आर्थिक सहायता एक विश्वविद्यालय अनुदान समिति से प्राप्त होती है।

स्काटलैंड को अपनी स्कूलों की परम्परा की प्राचीनता पर गर्व है। 1960 की सुविख्यात **फर्स्टबुक आफ डिसिप्लिन** (First Book of Discipline) जिसके प्रमुख लेखक जान नॉक्स (John Knox) थे, में स्कूल और कालेज प्रणाली की आवश्यकता प्रतिपादित की गई है। "यह देखकर कि ईश्वर ने यह संकल्प कर लिया है कि उसके पृथ्वी के गिरजाघरों में शिक्षा देवदूत नहीं बल्कि मनुष्य देंगे······" **बुक आफ डिसिप्लिन** कहती है कि यह आवश्यक है स्काटलैंड की सरकार इस राज्य के तरुणों की धार्मिक शिक्षा और पवित्रतापूर्वक पालन-पोषण करने की ओर अधिक ध्यान दे' ग्रामर स्कूल और कालेजों का विस्तार करना तथा 'बड़े स्कूल' जिनको विश्वविद्यालय कहते हैं, में ज्ञानोन्मुख तरुणों को ही प्रवेश दिया जायगा। पुस्तक आगे उद्घोषित करती है, "धनी और साधन सम्पन्न लोगों को यह आज्ञा नहीं दी जायगी कि उनके बच्चे अपना यौवन काल व्यर्थ के कामों में बितायें जैसा अभी तक वे करते रहे हैं। उनको यह सलाह दी जानी चाहिए बल्कि धर्मादेश द्वारा विवश करना चाहिए कि वे अपने

बच्चों को अच्छे कामों में लगाएँ जिससे वे चर्च या राष्ट्रमण्डल की सेवा कर सकें…। ऐसे लोगों की शिक्षा का भी प्रबन्ध करना चाहिए जो निर्धन हैं तथा स्वयं या उनके मित्र उनके बच्चों की शिक्षा के लिए साधन नहीं जुटा सकते…।

जान नाक्स (John Knox) के विचार में ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल पक्का प्रेस्बिटेरियन धर्मतन्त्र था। स्काटलैंड कई शताब्दियों तक इसी सैद्धान्तिक संघर्ष से गुजरता रहा। **बुक आफ डिसिप्लिन** (Book of Discipline) द्वारा प्रतिपादित शिक्षा सम्बन्धी आदर्श वस्तुत: व्यावहारिक न हो सके। अनेकों अधिनियमों के बाद सत्रहवीं शताब्दी में गिरजाघर स्कूल प्रणाली की स्थापना तो हो गई परन्तु 19वीं शताब्दी तक शिक्षा प्रारम्भिक ही रही। कुछ भी हो, अलेक्ज़ण्डर मोर्गन (Alexander Morgan) के विचार में 'गिरजाघर स्कूलों' (Parish School) द्वारा स्काट लोगों ने 'ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों की अपेक्षा शिक्षा सम्ब्रन्धी अधिक सुविधाओं का उपभोग किया। "अट्ठारहवीं शताब्दी में यहाँ के नगरों में ग्रामर स्कूल और उन्नीसवीं शताब्दी में प्राइवेट एकादमियाँ स्थापित की गईं। फिर भी उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक लगभग 20 प्रतिशत बच्चे स्कूल बिलकुल नहीं जा रहे थे। 1872 के संसदीय अधिनियम द्वारा इस स्थिति में काफी सुधार हुआ। प्राथमिक शिक्षा का तो पूर्ण प्रचार हो गया किन्तु "इस अधिनियम में माध्यमिक अथवा कालेज की कोई व्यवस्था नहीं थी।" 1908 और 1918 के अधिनियमों में शायद पहली बार सरकारी खर्च पर माध्यमिक शिक्षा की विस्तृत व्यवस्था की गई थी। आज स्काटलैंड में स्कूल शिक्षा 15 वर्ष की आयु तक पूर्णतया प्रचलित है। 16 वर्ष की आयु के 15 से लेकर 16 और 14 प्रतिशत बच्चों के एक तिहाई से ज्यादा बच्चे स्कूलों में शिक्षा पा रहे हैं (जैसा तालिका 1 से स्पष्ट है)।

किन्तु ऐंग्लो-सैक्सन शिक्षा पर स्काटलैंड का प्रभाव न तो इन बीसवीं शताब्दी के आंकड़ों (अमरीकी स्तर से कम) से आंका जा सकता है ना ही उस धीमी गति से जिसके द्वारा जान नाक्स (John Knox) अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच सके। अठ्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में स्काटलैंड में नि:शुल्क शिक्षा थी। यद्यपि वह अधिकांशत: प्राथमिक ही थी, फिर भी कुछ निर्धन किन्तु योग्य छात्रों को विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा प्राप्त थी। इसके अतिरिक्त यहाँ इंगलैंड के बडे-बड़े 'पब्लिक स्कूलों' की भाँति कुछ प्राइवेट स्कल

थे। हाँ, **बुक आफ डिसिप्लिन** (Book of Discipline) के शैक्षिक उद्देश्य उस समय की धार्मिक पुरातनवादिता से प्रभावित अवश्य थे, लेकिन इसके बावजूद भी इनमें टामस जैफर्सन (Thomas Jefferson) द्वारा अत्यन्त प्रभावपूर्ण शैली में प्रस्तुत अठ्ठारहवीं शताब्दी के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों की झलक विद्यमान थी। वर्जिनिया की भाँति स्काटलैंड भी शिक्षासिद्धान्तों की उद्गम भूमि रही है। वे शिक्षा सिद्धान्त बाद में दूर-दूर तक फैल गए।

आस्ट्रेलिया

अठ्ठारहवीं शताब्दी में स्काट लोग भी अन्य यूरोपीय लोगों की भांति उत्तरी अमरीका के और उन्नीसवीं शताब्दी में एण्टीपोड्स (Antipodes) के उपनिवेशों में जाकर बस गए। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में भी बहुत-से लोग इंगलैंड, वेल्स और आयरलैंड से आये। अस्तु, इन दक्षिणी गोलार्द्ध के राष्ट्रों की शिक्षा में आज हम स्काट, इंगलिश तथा कैथोलिक आइरिश परम्पराओं का मिश्रण पाते हैं। इस समन्वय को इन नये देशों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्तिम 25 वर्षों में संयुक्तराज्य के अनुभव तथा सबसे अधिक इस शताब्दी के सामान्यजन को समान अधिकार दिलाने के विश्वव्यापी अभियान ने अत्यधिक प्रभावित किया है।

आस्ट्रेलिया की माध्यमिक शिक्षा पर दृष्टिपात करने पर एक आश्चर्य-जनक तथ्य हमारा ध्यान आकर्षित करता है। कम-से-कम मुझे तो पहली बार इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। आस्ट्रेलिया के कई राज्यों में आज भी प्राइवेट प्रोटेस्टेण्ट स्कूल काम कर रहे हैं जबकि यह प्रणाली अब संसार के किसी अन्य देश में प्रचलित नहीं है। आप जानते हैं कि इस महाद्वीप का संगठन उत्तरी अमरीका से बाद हुआ और यह अपनी मजदूर सरकारों तथा अपने समाज-कल्याण अभियान के लिए प्रसिद्ध है।

दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया में स्वाधीन स्कूलों की विकासोन्मुख प्रवृत्ति कोई नई बात नहीं है। इसके विपरीत इस शताब्दी के दूसरे दशक तक कर पोषित माध्यमिक स्कूलों की व्यवस्था की प्रगति बहुत धीमी रही। वास्तव में प्राइवेट स्कूलों की प्रथा तथा कुछ अन्य बातों के कारण ही आस्ट्रेलिया में सरकारी माध्यमिक शिक्षा का सूत्रपात हुआ जैसाकि कुछ दिनों पहले इंगलैंड

में भी हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंगलैंड की पब्लिक स्कूल प्रणाली आस्ट्रेलिया पहुँची। यह प्रथा आस्ट्रेलिया में इतनी सफल हुई कि विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से इस प्रकार के स्कूल यहाँ इंगलैंड की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। अतः, इंगलैंड में इन तथाकथित पब्लिक स्कूलों के विकास पर संक्षेप में विचार करके हम अपने विषय पर आएँगे।

इंगलैंड की पब्लिक-स्कूल परम्परा

धर्म सुधार के पहले इंगलैंड और स्काटलैंड में तथा अन्य ईसाई देशों में भी शिक्षा धर्म के अधीन थी। फिर भी, मध्यकालीन सामन्तों तथा निर्वाचकों (Burghers) के बच्चों के लिए कहीं-कहीं धार्मिक स्कूलों के साथ-साथ और कहीं कहीं इनके अतिरिक्त प्राइवेट शिक्षा की व्यवस्था थी। राजाओं और सामन्तों के बच्चों के लिए गृह-शिक्षकों (Private tutors) की प्रथा इतनी पुरानी है कि आसानी से इसकी शुरूआत का समय नहीं बताया जा सकता। हम कह सकते हैं कि किसी भी देश में स्वतन्त्र प्राइवेट स्कूलों की प्रथा संभ्रान्त घरानों के बच्चों के लिए उनके भविष्य की स्थिति के अनुरूप शिक्षा दिलाने की परम्परा का अनुगमन है। आधुनिक प्राइवेट स्कूलों का सम्बन्ध पुराने राजघरानों के शिक्षकों से जोड़ना शायद कुछ शिक्षाविद् उचित न समझें किन्तु यह बात निर्विवाद है कि इस प्रकार के स्कूल इगलैंड के पुराने पब्लिक स्कूलों की ही देन हैं। अकेले ग्रेट ब्रिटेन में ही विंचेस्टर (Winchester) जैसी शिक्षा सस्था इस बात की प्रमाण है। इसके स्थापित करने की घोषणा 1382 में विलियम आफ विकेहम (William of Wykeham) और इटन (Eton) ने की और नींव 1446 में हेनरी षष्टम ने डाली। इसका अपना क्रमबद्ध तथा अधिकांश गौरवपूर्ण इतिहास है।

धर्म सुधार के पहले धर्म की सेवा में अपने को समर्पित करने वाले युवकों को छात्रवृत्ति मिला करती थी। लेकिन यह व्यवस्था बहुत पहले लुप्त हो चुकी थी। जान राजर्स (John Rodgers) ने 'ओल्ड पब्लिक स्कूल्स आफ इगलैंड' (Old Public Schools of England) (1938) में लिखा था : विलियिम आफ विकेहम (William of Wykeham) 70 छात्रों को अपने आक्सफोर्ड फाउण्डेशन, न्यू कालेज में शिक्षा दिलाकर उनसे बाद में भीषण मौत

(Black Death) के कारण रिक्त निष्पक्ष धर्म प्रचारकों के स्थान पर काम लेना चाहते थे। वह चाहते थे कि ये विद्यार्थी निर्धन परिवार के हों। लेकिन विंचेस्टर और दूसरे पब्लिक स्कूल भी अपने मौलिक उद्देश्य को भुला बैठे और योग्यता का विचार किये बिना ही धनी परिवारों के ही लड़के इस कार्य के लिए भर्ती किये जाने लगे। अंग्रेजी जीवन के विरोधाभास का अनुमान आप इस बात से लगा सकते हैं कि पब्लिक स्कूल, जिनकी स्थापना निर्धनों के लिए निःशुल्क शिक्षा दिलाने के उद्देश्य से की गई थी, बिलकुल बदल गए, और अब तो यही कहना चाहिए कि वे केवल कुछ धनवान लोगों की बपौती बन गए हैं।

अठ्ठारहवीं शताब्दी मैं विंचेस्टर, इटन, रुग्बी (Rogby) तथा दूसरे राज-धर्म (Established Church) से सम्बद्ध प्रसिद्ध स्कूल पुरातनवादी कुलीन-वर्ग (Orthodox aristocracy) और धर्म एवं शिक्षा के क्षेत्र व ऊँचे पदों पर काम करने वाले लोगों के बच्चों को शिक्षा प्रदान करते थे। कुछ प्राइवेट डिसेंटिंग एकादमी (Dissenting academies) समाज के दूसरे धनी वर्ग के बच्चों को शिक्षा देती थीं। ये विरोधी डिसेंटिंग एकादमियाँ तो धीरे-धीरे लुप्त हो गईं, किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में पब्लिक स्कूल प्रथा ने बहुत ज़ोर पकड़ा। यहाँ तक कि 1830 और 1870 के बीच में यह परम्परा इतनी प्रचलित हुई कि इसका प्रभाव पूरे ऐंग्लो-सैक्सन जगत में परिलक्षित होने लगा। ट्रेवेलियन (Trevelyen) अपनी 'इंगलिश सोशल हिस्ट्री' में लिखते हैं :—

"आशा थी कि धर्मसुधार तथा प्रजातन्त्रीय प्रवृति के युग में सरकार सर्व-साधन सम्पन्न ग्रामर स्कूलों का सुधार और विस्तार करेगी। इससे विभिन्न श्रेणियों के प्रतिभावान बच्चे एक ही शिक्षा प्राप्त कर सकते थे जैसा कि ट्यूडर और स्टुअर्ट काल के ग्रामर स्कूलों में हुआ था और इसका परिणाम भी बड़ा अच्छा हुआ था। किन्तु विक्टोरिया काल में ग्रामर स्कूलों की महत्ता कम हो गई। इटन, विंचेस्टर और हैरो के प्राचीन आदर्शों के आधार पर 'पब्लिक स्कूलों' की स्थापना हुई। रुग्बी (Rogby) इसके अग्रणी थे। 'मध्यवर्गीय लोगों' के बच्चों को इन सुधरे हुए पब्लिक स्कूलों में शासक वर्ग के बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला। पुराने जमींदार, नौकरी पेशावाले तथा नए उद्योगपतियों के बच्चे साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करने लगे। इससे एक विस्तृत तथा आधुनिक कुलीनवर्ग का जन्म हुआ। इस प्रकार विक्टोरिया कालीन इंगलैंड और विक्टो-

रिया साम्राज्य में सरकार तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करनेवाले तरुणों की संख्या में वृद्धि हुई।"

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण के अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूल' आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज जाकर अपनी आगे की शिक्षा समाप्त करनेवाले तथा सीधे उद्योग एवं व्यापार या जनसेवा (Public Service) में लगने वाले दोनों प्रकार के तरुणों को शिक्षा प्रदान करते थे। इन स्कूलों की शिक्षा को हम विशेषतया विश्वविद्यालयीय शिक्षा की पीठिका तो किसी भी हालत में नहीं कह सकते। यही बात आज भी इंगलैंड और आस्ट्रेलिया में लागू होती है। इसका मुख्य कारण यह कि ब्रिटिश विश्वविद्यालयों की शिक्षा व्यवसाय-प्रधान है। अमरीकी लिबरल आर्ट्स कालेज (American Liberal Arts College) जैसी संस्था ब्रिटेन में कहीं नहीं है। किन्तु इस सम्बन्ध में हम अगले अध्याय में विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

आस्ट्रेलिया में माध्यमिक शिक्षा

आस्ट्रेलिया के प्रमुख नगरों में उक्त अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूलों' का पूर्ववत् चलते रहना प्राइवेट स्कूलों की सफलता का परिचायक है। (तालिका 2) फिर भी एक बार, मेरे यह कहने पर कि आस्ट्रेलिया के स्वतन्त्र स्कूलों की स्थापना इंगलैंड के 'पब्लिक स्कूलों' के ही 'आदर्श' पर की गई है, इन स्कूलों के एक हेडमास्टर ने आपत्ति की। इस विषय में उसने कई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अन्तर बताये—ऐसे अन्तर, जो आस्ट्रेलिया के दक्षिणी पूर्वी भाग के प्राइवेट स्कूलों की स्थायी सफलता पर संक्षेप में प्रकाश डालते हैं। इनमें से अधिकांश स्कूल राजधानियों (न्यू साउथ वेल्स की राजधानी सिडनी, विक्टोरिया की राजधानी मेलबोर्न, दक्षिणी आस्ट्रेलिया की राजधानी एडीलेड) में स्थित हैं। ये मुख्यतः आवासिक स्कूल नहीं हैं, किन्तु इनमें आवास चाहने वाले कुछ विद्यार्थियों के लिए आवास का प्रबन्ध है। यही कारण है कि इनमें अन्य स्कूलों की अपेक्षा फ़ीस कुछ कम रखी गई है और इनमें अपने बच्चों को भेजने वाले परिवारों की आय की दृष्टि से विभिन्न श्रेणियाँ हैं। हर राजधानी में कुछ ऐसे स्कूल भी हैं जिनमें आपस में कुछ होड़ चला करती है। इनमें से प्रत्येक किसी न किसी सम्प्रदाय से सम्बद्ध है, उदाहरण के लिए इंगलैंड के गिरजाघर के स्कूल, मेथाडिस्ट

तालिका 2

आस्ट्रेलिया की द्विविध शिक्षा-प्रणाली

(कर-पोषित तथा प्राइवेट स्कलों के छात्रों में आयुवर्ग की दृष्टि से विभाजन, 1948)

स्कूलों में पढ़ने वाले पूरे आयुवर्ग (बालकों एवं बालिकाओं) की प्रतिशत संख्या—

आयु वर्ग	दक्षिणी आस्ट्रेलिया°		न्यू साउथ वेल्स		विक्टोरिया°		
	करपोषित	प्राइवेट†	करपोषित	प्राइवेट†	कर-पोषित	प्रोटे-स्टेण्ट	कैथो-लिक
13	78	20	75	25	69	8	19
14	50	19	72	23	42	9	12
15	27	15	24	14	20	8	7
16	10	11	10	8	7.5	6	3.8

° ध्यान रहे कि दक्षिणी आस्ट्रेलिया में 16 वर्ष की आयु के जितने छात्र करपोषित स्कूलों में पढ़ रहे हैं उतने ही प्राइवेट स्कूलों में भी और विक्टोरिया में निःशुल्क स्कूलों की अपेक्षा 50 प्रतिशत अधिक विद्यार्थी स्वाधीन संस्थाओं में पढ़ रहे हैं।

† प्रोटेस्टेण्ट तथा कैथोलिक

स्कूल (Mathodist School) प्रेस्बिटेरियन स्कूल (Presbyterian School) और कैथोलिक स्कूल (Catholic School)। इनमें से अन्तिम स्कूल एक विशेष कोटि में आते हैं और मैं जो कुछ निःशुल्क स्कूलों के विषय में कहूँगा उसका सम्बन्ध नानकैथोलिक स्कूलों से होगा।

बाहर से देखने पर आस्ट्रेलियाई पब्लिक स्कूल अंग्रेज़ी पब्लिक स्कूलों से भिन्न हो सकते हैं किन्तु मूलतः वे बिलकुल एक-जैसे हैं। मुझे सूचना देने वाले महाशय ने इस बात को स्वीकार ही नहीं किया बल्कि उस पर ज़ोर दिया। वे

मौलिक समानताएँ उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार हैं :

(1) ये स्कूल स्वाधीन हैं। हेडमास्टर की नियुक्ति या बर्खास्तगी स्कूल परिषद् (प्रबन्धक-मंडल) के हाथ में होती है। हेडमास्टर, उसके साथी तथा अन्य कर्मचारी एक स्कूल में अपने व्यावसायिक-जीवन का कम से कम $\frac{3}{4}$ भाग बिताते हैं। आवश्यकता समझी जाती है तो विद्यार्थियों का प्रवेश चुनाव द्वारा कर दिया जाता है और इस प्रकार विद्यार्थियों की एक सीमित संख्या ही स्कूल में रखी जाती है। इन बातों से स्कूल के स्वरूप, परम्परा तथा क्रमबद्धता का पता चलता है। सरकारी स्कूलों में ये बातें देखने को नहीं मिलतीं।

(2) इन स्कूलों का उद्देश्य छात्रों में ज्ञान संचार के अतिरिक्त उनमें नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का क्रियात्मक तथा प्रभावोत्पादक विकास करना, साथ ही साथ उनमें यह भाव उत्पन्न करना है कि ये मूल्य ईसाई धर्म से पृथक् नहीं किये जा सकते। इन स्कूलों में ऐसे हेडमास्टर रखे जाते हैं जो आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को ईसाई धर्म का अनन्य अंग समझते हैं।

(3) इन लक्ष्यों की प्राप्ति के साधन व्यावहारिक होने चाहिए—उदाहरणार्थ, चापेल में पूजा, हाउसों, टीमों तथा सैनिक टुकड़ियों का संगठित जीवन, प्रिफेक्ट-प्रणाली द्वारा स्थानीय सरकार तथा कक्षा का मानसिक अनुशासन।

इसमें सन्देह नहीं कि संयुक्तराज्य के बहुत-से प्राइवेट स्कूलों के हेडमास्टर इस प्रकार की बातें कह सकते हैं। वैसे हमारे यहाँ धर्मनिरपेक्ष प्राइवेट स्कूल भी हैं धर्मसापेक्ष भी। मुझे विश्वास है कि अंग्रेजी-भाषी राष्ट्रों के नान कैथोलिक स्वाधीन स्कूलों के प्रधानों का एक सम्मेलन बुलाया जाय तो हम पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य बहुत-से मामलों तथा उनके महत्त्व के विषय में हम एक निष्पक्ष एवं सर्वमान्य निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं। जहाँ तक पाठ्यचर्या का सम्बन्ध है ब्रिटिश तथा अमरीकी लोगों में अधिकाँश बातों पर मतभेद है। हम लोग अंग्रेज और आस्ट्रेलियाई लोगों को अध्ययन अध्यापन के विषय में अत्यन्त पुरातनवादी तथा रूढ़िवादी समझते हैं और वे हमारे बारे में यह सोचते हैं कि हम प्राचीन अध्ययन-अध्यापन प्रणाली को आसानी से छोड़ देते हैं और नयी प्रणाली स्वीकार कर लेते हैं। इसके अपवाद हो सकते हैं किन्तु मोटे तौर पर इस प्रकार का भेद किया जा सकता है।

उपर्युक्त मतभेद ब्रिटिश राष्ट्रों तथा संयुक्तराज्य में उपाधि देने वाली

संस्थाओं में महान् अन्तर होने के कारण है। इस तुलना के लिए इस बात पर ध्यान देना आवश्यक होगा कि आस्ट्रेलियाई पब्लिक स्कूलों में अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूलों' और अंग्रेजी ग्रामर स्कूलों की भाँति ऐसी पाठ्यचर्या प्रचलित है जो संयुक्त-राज्य के कुछ कालेजों के लिए पृष्ठभूमि तैयार करने वाले स्कूलों में पाई जाती है। फिर भी, स्मरण रहे, इंगलैंड और आस्ट्रेलिया के प्राइवेट स्कूल विश्व-विद्यालय के लिए पृष्ठभूमि नहीं तैयार करते बल्कि बहुत-से धनाढ्य बच्चों को सावधिक (Terminal) शिक्षा प्रदान करते हैं। वस्तुतः, पूरे ब्रिटिश-राष्ट्र-मंडल (कनाडा को हमेशा छोड़कर) के कर-पोषित और सरकारी हाई स्कूलों के अधिकांश स्नातक विश्वविद्यालयीय शिक्षा न प्राप्त करके जो व्यवसाय अपना लेते हैं यहाँ तक कि यह उनके लिए पैतृक जिम्मेदारी हो जाती है। यह बात अमरीकी लोगों के लिए कुछ विचित्र हो सकती है, किन्तु ब्रिटिश जीवन को सच्चे रूप में समझने की दृष्टि से इसका बड़ा महत्त्व है।

जब आस्ट्रेलिया तथा संयुक्तराज्य में निःशुल्क माध्यमिक शिक्षा का प्रसार प्रारम्भ हुआ तो यह बात महसूस की गई कि विभिन्न प्रकार के स्कूलों के विद्यार्थियों में कुछ विभिन्नता होनी चाहिए या कम से कम कुछ भिन्न कार्यक्रम ही हों—कार्यक्रम तो मोटे तौर पर प्राइवेट स्कूलों के कार्यक्रम से मिलता-जुलता और दूसरे ऐसे जो कुछ अधिक व्यावहारिक हों। केवल पहले प्रकार का कार्य-क्रम ही ऐसा था जो विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए विद्यार्थियों का सहा-यक हो सकता था। दूसरे कार्यक्रमों द्वारा तो वे केवल अंशकालिक तकनीकी कालेजों में ही प्रवेश ले सकते थे। इस सम्बन्ध में एक मनोरंजक बात देखने को मिलती है। वह यह कि आज आस्ट्रेलिया में छात्रों की बहुत बड़ी संख्या निःशुल्क स्कूलों, यहाँ तक कि उच्चस्तरीय हाईस्कूलों की शिक्षा समाप्त किए बिना ही अपना अध्ययन रोक देती है। इसके विपरीत प्राइवेट नान कैथोलिक स्कूल-अपने अधिक से अधिक छात्रों को स्नातक की उपाधि तक रोक रखते हैं। (तालिका 2, पृ० 24 पर विक्टोरिया में प्रोटेस्टेण्ट स्कूलों के आँकड़े देखिए।)

इन स्कूलों की छात्रों को रोके रहने की शक्ति एक बहुत बड़ी सामाजिक उपलब्धि है। यह कोई नई बात नहीं है, क्योंकि 125 वर्ष पूर्व अंग्रेजी पब्लिक स्कूलों के पुनरुद्धार के समय से यह सोचा जाता था कि छात्रों को एक लम्बा

पाठ्यक्रम समाप्त करना चाहिए। ग्रेट ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया के प्राइवेट स्कूलों में अपने बच्चों को भेजने वाले अधिकांश परिवारों की यही धारणा हो गई थी। मेरे विचार में लड़कों और लड़कियों को स्कूल छोड़ने से रोकने के लिए यह प्रधान अस्त्र था। दूसरी बात यह थी कि इन बच्चों पर अपने परिवारों की आय में हाथ बंटाने के लिए किसी प्रकार का दबाव नहीं था। आस्ट्रेलिया में, जहाँ श्रमिकों का घोर अभाव है, कम आय वाले परिवारों के बालक और बालिकाएँ 14 वर्ष की आयु के उपरान्त अच्छे वेतन से आकृष्ट होकर स्कूल छोड़ देते हैं और कोई नौकरी करके अपने माँ-बाप की आय में एक बहुत बड़ी धनराशि जोड़ देते हैं। (यही बात संयुक्तराज्य के भी कुछ वर्गों में लागू होती है।) इसके अतिरिक्त एक तीसरी बात भी बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में रोक रखती है। वह है छात्र-जीवन का उत्साह, प्राइवेट स्कूलों के पाठ्यचर्यातिरिक्त कार्य-कलापों का आकर्षण। वास्तव में सोचिए तो देखेंगे कि इन बातों का छात्र जीवन में समावेश करना बड़ा आवश्यक था। अन्यथा छात्रों में 'किताबी ज्ञान' के भारी बोझ से भरी हुई पाठ्यचर्या के प्रति रुचि उत्पन्न करना आसान बात नहीं थी।

अब यदि प्राइवेट स्कूलों की सफलता का एक कारण यह है कि वे अपने छात्रों को रोक कर रखते हैं तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि फिर करपोषित स्कूलों को भी इतना ही आकर्षक क्यों नहीं बनाया जाता? यदि पूर्णकालिक शिक्षा ऐसे परिवारों के लड़के और लड़कियों के लिए 'अच्छी बात' है जो प्राइवेट स्कूलों का खर्च वहन कर सकते हैं, तो फिर यह निर्धन बच्चों के लिए 'अच्छी बात' क्यों नहीं? इस प्रश्न पर जब विचार किया गया तो इससे ज्ञातरूप से अथवा अज्ञातरूप से आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और इधर पिछले कुछ वर्षों में इंगलैंड में भी कर-पोषित माध्यमिक (Tax supporter) स्कूलों के प्रसार को उल्लेखनीय प्रोत्साहन मिला।

उपर्युक्त तर्क के साथ एक बात और कही जा सकती है। आज समाज को सम्यक्-प्रशिक्षित प्रतिभावान शिक्षकों की आवश्यकता है। किसी भी आस्ट्रेलियाई राज्य के आँकड़े ले लीजिए, आप देखेंगे कि उचित आयुवर्ग के 10 प्रतिशत से भी कम लड़के या लड़कियाँ विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। अब तालिका नं० 1 पर ध्यान दीजिए। आपको पता चलेगा कि यह 10 प्रतिशत भी ऐसे

विद्यार्थियों में से आते हैं जिनकी संख्या 16-17 वर्ष के आयुवर्ग के विद्यार्थियों के दुगने से अधिक नहीं है। यह संख्या मेधावी छात्रों की संख्या की चौथाई से भी कम है। दूसरे शब्दों में, प्रतिभावान छात्रों का अधिकाँश चुनाव तो 16 वर्ष से पहले ही हो जाता है; बल्कि काफी हद तक यह चुनाव जैसा कि हम इंगलैंड में देखते हैं, तभी हो जाता है जब शिक्षा सरणि, पहले ही, शिक्षा को दो शाखाओं में विभक्त कर देती है—एक विश्वविद्यालय की शिक्षा, और दूसरी शिक्षा अन्य व्यवसायों की।

अब यह तर्क दिया जा सकता है, और बहुत-से अमरीकी लोग देंगे भी कि एक विश्वविद्यालय-शिक्षण के लिए ज्यादा अच्छा चुनाव तो आयुवर्ग के अधिक प्रतिशत में प्राप्य रहने पर या कुछ (18 वर्ष या इससे भी अधिक) परिपक्व अवस्था में करने पर ही हो सकता है किन्तु जैफ़र्सन द्वारा प्रस्तुत तरुणों को स्कूल में ज्यादा समय तक रोकने का तर्क अधिक प्रचलित नहीं है। अधिक प्रचलित और अधिक प्रभावजनक तो वह तर्क है जो मैंने कुछ पहले दिया है और जो 17 या 18 वर्ष की आयु तक पूर्णकालिक शिक्षा प्राप्त करने वाले सभी तरुणों का ध्यान अपनी प्रतियोगिता की ओर आकर्षित करता है। जनता की शिक्षा के विषय में यह दृष्टिकोण न्यूजीलैंड सरकार ने कोई पिछले 15 वर्षों से अपनाया है। परिणामतः न्यूजीलैंड की शिक्षा पद्धति अमरीकी शिक्षा पद्धति के समान है न कि आस्ट्रेलियाई शिक्षा पद्धति के।

न्यूज़ीलैंड

न्यूज़ीलैंड के शिक्षा मन्त्री 1939 में एक स्थान पर लिखते हैं —

"न्यूजीलैंड-स्कूल-पद्धति (और वस्तुतः संसार के सभी देशों की स्कूल-पद्धति) का ढाँचा मूलतः **चुनाव** के सिद्धान्त पर आधृत था। यहाँ पठन, लेखन और गणित (Three R's.) में प्रारम्भिक शिक्षा तो सभी बच्चों को दी जाती थी; किन्तु उसके बाद की शिक्षा या तो धनवान् लोग पैसे द्वारा प्राप्त कर सकते थे या फिर अत्यन्त मेधावी छात्र छात्रवृत्ति द्वारा······। वर्तमान सरकार ने पहली बार (न्यूज़ीलैंड में) इस बात को खुले आम स्वीकार किया कि क्रमबद्ध शिक्षा (Continued Education) धनवान या मेधावी छात्रों की बपौती नहीं है बल्कि सबका (जो भी चाहे) अधिकार है, और राज्य को चाहिए कि इसका

अधिक से अधिक प्रबन्ध करे। इस नियम के स्वीकार करने से अनेक महत्त्वपूर्ण परिणाम होंगे। केवल कुछ प्रतिभावान् विद्यार्थियों के लिए स्थापित अत्यन्त उच्च-स्तरीय (Academic type) पुराने स्कूलों में अधिक स्थानों की व्यवस्था-मात्र से काम नहीं चलेगा। जिन स्कूलों में सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करनी है उन में बच्चों की आवश्यकता तथा योग्यता के अनुरूप समृद्ध एवं विविध पाठ्यक्रम होना चाहिए……। प्रारम्भ में चुनाव तथा विशेषाधिकार के आधार पर स्थापित स्कूल-पद्धति को एक सच्चा प्रजातान्त्रिक रूप देना आवश्यक था। इस प्रकार इस पद्धति द्वारा वहाँ की पूरी जनता का काम तब तक चलता रहेगा जब तक संभव होगा और जब तक यह चाहेगी।"

कुछ ऐसे ही शब्द संयुक्तराज्य नेशनल की एजूकेशन एसोसिएशन (National Education Association) के शिक्षा नीति आयोग (Educational Policies Commission) के एक सदस्य ने लिखे थे जिनके द्वारा 1944 में **'एजूकेशन फार आल अमेरिकन यूथ'** (Education for all American youth) नामक पुस्तक तैयार हुई। दूसरे शब्दों में, यही बात, शब्दों के कुछ हेर-फेर के साथ मैंने स्वयं लिखी थी। वास्तव में, यह बात बार-बार सुनने को मिलती है कि न्यूज़ीलैंड के स्कूलों का अमरीकीकरण हो गया है। यह बात कहाँ तक ठीक हुई इसका निर्णय तो बहुत कुछ कोई पर्यवेक्षक ही करेगा। कनाडा के एक सुप्रसिद्ध शिक्षक ने मुझे लिखा है कि 'न्यूज़ीलैंड के परिवर्तन से' वह मुझसे 'अधिक असन्तुष्ट है', उत्तरी अमरीका की इस प्रवृत्ति से उसके हृदय को बड़ी ठेस पहुँची है कि बच्चों की शिक्षा प्राप्त करने की आयु सामान्यरूप से 13 से लेकर 18 वर्ष होनी चाहिए। अस्तु, इसमें कोई सन्देह नहीं कि न्यूजीलैंड की शिक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन हुए हैं। जहाँ तक माध्ममिक स्कूलों में पढ़ने वाले 15 और 16 वर्ष के छात्रों की प्रतिशत संख्या का सम्बन्ध है न्यूजीलैंड अन्य ब्रिटिश राष्ट्रों की अपेक्षा संयुक्तराज्य से अधिक साम्य रखता है (तालिका 1, पृष्ठ 3)। जिन परिवर्तनों की न्यूज़ीलैंड के मन्त्री ने चर्चा की है; उनसे स्कूलों के विद्यार्थियों को रोके रखने की शक्ति में निस्सन्देह वृद्धि हुई है। साथ ही साथ इन परिवर्तनों ने न्यूजीलैंड के विश्वविद्यालयों में गम्भीर समस्याएं उत्पन्न कर दी हैं जिनमें निकाय (Faculties) अब भी जूझ रहे हैं और जो संयुक्त राज्य की इसी प्रकार की समस्याओं की याद दिलाती है।

आज से 75 वर्ष पूर्व अंग्रेज़ी भाषी जगत में यह सोचा गया था कि विश्वविद्यालयीय शिक्षा का आधार प्राचीन शिक्षा है। इंगलैंड के ग्रामर स्कूलों तथा 'पब्लिक स्कूलों' ने नमूना पेश किया। विज्ञान, आधुनिक भाषाओं तथा अंग्रेज़ी साहित्य (नया नहीं) के प्रारम्भ करने का आन्दोलन धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ रहा था। इंगलैण्ड की भाँति आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड में भी आगे चलकर विश्वविद्यालय जानेवाले छात्रों के लिए अत्यन्त पुराने पाठ्यक्रम का स्थान वर्षों पूर्व आधुनिक पाठ्यक्रम में भी अधिकाँश आस्ट्रेलियाई देशों में विदेशी भाषाओं, गणित तथा अंग्रेज़ी के भी संकुचित सीमित तथा लम्बे अध्ययन का समावेश है। हाँ, जो लोग चाहें वे एक किसी भाषा के स्थान पर भौतिकशास्त्र तथा रसायन शास्त्र को ले सकते हैं। अंग्रेज़ी 'पब्लिक स्कूल' और 'ग्रामर स्कूल' की भाँति आस्ट्रेलिया में भी विशेषाध्ययन जल्दी शुरू हो जाता है। जिसको हम अमरीकी लोग सामान्य शिक्षा (General Education) कहते हैं उसका स्पष्टतया अभाव है।

न्यूज़ीलैण्ड शिक्षा-सम्बन्धी सुधारों के तीन उद्देश्य थे—(1) करीक्यूलम को लचीला बनाना जिससे कि छात्र स्कूल का पाठ्यक्रम लगभग समाप्त करके ही विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने की सोचें; (2) एक 'सामान्य पाठ्यक्रम' का सूत्रपात करना तथा (3) इतिहास, सामाजिक विषय, भूगोल, ललितकलाओं एवं संगीत जैसे विषयों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना। यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि कुछ विद्यार्थियों को इस प्रकार का विविध करीक्यूलम पहले वाले की अपेक्षा अधिक पसन्द है जो कुछ ही विषयों तक सीमित था तथा मुझे पूरा विश्वास है कि लोगों को स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए 'किस प्रकार की शिक्षा' की आवश्यकता होती है इस करीक्यूलम द्वारा वह प्रदान की जा रही हैं। यह बात अनायास स्पष्ट हो जाती है कि इस करीक्यूलम द्वारा उस प्रतिभावान छात्र की हानि भी हुई जो आगे चलकर राजनीतिक नेता बनता है। फिर भी संयुक्त-राज्य का इस दृष्टि से अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में नए करीक्यूलम से उतनी हानि नहीं पहुँची है जितनी पुराने से। डाक्टरी या क़ानून की डिग्री लेने के लिए तो संयुक्तराज्य के माध्यमिक विद्यालयों द्वारा पृष्ठभूमि तैयार करने में तो कोई विशेष कमी दिखती नहीं। किन्तु इस विषय पर अधिक विचार हम अगले अध्याय में करेंगे।

न्यूज़ीलैण्ड का विवरण तब तक अधूरा रहेगा जब तक इस बात की चर्चा न की जाय कि वहाँ आस्ट्रेलिया की अपेक्षा प्रोटैस्टैण्ट प्राइवेट स्कूल कम हैं तथा जो हैं भी उनके विद्यार्थियों की संख्या कम है। प्राथमिक विद्यालयों में पढ़नेवाले विद्यार्थियों का केवल 4 प्रतिशत प्राइवेट स्कूलों में पढ़ता है और 16 वर्ष के आयुवर्ग की संख्या भी 17 प्रतिशत से अधिक नहीं होगी जबकि दक्षिणी आस्ट्रेलिया, न्यू साउथ वेल्स और विक्टोरिया में यह संख्या क्रमशः 52 प्रतिशत, 44 प्रतिशत तथा 57 प्रतिशत है। न्यूजीलैण्ड और अस्ट्रेलिया में प्राइवेट स्कूलों के व्यापार में इतना अन्तर क्यों है ? पहला उन्नीसवीं शताब्दी की अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति की चरम सीमा है दूसरा स्काट-शिक्षा पद्धति की। इससे इन दोनों देशों में स्काट और अंग्रेज़ प्रवासियों की तुलनात्मक संख्या का स्पष्ट पता चल जाता है। इसका सम्बन्ध न्यूजीलैण्ड में प्रेसबिटेरियन की संख्या से है। न्यूजीलैण्ड के कुछ भागों में स्काट लोगों का बाहुल्य इसका आंशिक उत्तर हो सकता है। मैं समझता हूँ कि यदि इन दोनों राष्ट्रों की जनसंख्या की दृष्टि से समीक्षा की जाय तो अधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आ सकते हैं।

अपने विराट् विस्तार तथा अपेक्षाकृत कम जनसंख्या के बावजूद भी आस्ट्रेलिया एक नगर प्रधान देश है। इसकी जनसंख्या इसके 6 राज्यों की राजधानियों में निवास करती है। सिडनी और मेलबोर्न पूरे ब्रिटिश राष्ट्रमंडल, यहाँ तक कि इंगलैण्ड को लेकर भी, जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे तथा तीसरे स्थान पर है। जैसा कि मैं पहले ही निर्देश कर चुका हूँ, स्वाधीन स्कूल (Independent School) नगरों में स्थित हैं। वे, मुख्यतः, निरावासिक स्कूल हैं। न्यूज़ीलैण्ड में विशाल नगर नहीं हैं। यहाँ आस्ट्रेलिया के विशाल नगरों की लगभग आधी जनसंख्या वाले चार प्रतिद्वन्द्वी व्यापारिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र हैं। इनमें से किसी भी केन्द्र में कोई भी ऐसे समृद्ध लोग रहते नहीं प्रतीत होते जो आस्ट्रेलियाई नगरों में चलने वाले प्रोटैस्टैण्ट निरावासिक स्कूलों (Day Schools) के समूह का व्यय वहन कर सकें। ध्यान दीजिए मैंने 'समूह' (Group) शब्द का प्रयोग किया है क्योंकि ऐसे देश जहाँ कोई धर्म न हो, जो विभिन्न सम्प्रदायों का केन्द्र हो, वहाँ कुछ धार्मिक स्कूल अवश्य होने चाहिए। तभी अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूल' का आदर्श सही अर्थों में साकार किया जा सकता है।

संयुक्तराज्य

मैं समझता हूँ कि पाठक अन्य किसी देश की अपेक्षा संयुक्तराज्य के माध्यमिक स्कूलों से अधिक परिचित हैं। अतः अगले कुछ अनुच्छेदों में मैं अमरीकी शिक्षा के कुछ अंगों की रूपरेखा मात्र प्रस्तुत करूँगा। यहाँ मैं पाठक का ध्यान विशेषरूप से उन अंगों की ओर आकर्षित करूँगा जो इस महाद्वीप में पिछले पचास वर्षों में विकसित शिक्षा की स्थिति पर प्रकाश डालते हैं।

पिछली तालिका नं० 1 में प्रस्तुत आँकड़े इस बात पर ज़ोर देते हैं कि संयुक्तराज्य ही एक ऐसा देश है यहाँ के दो तिहाई से अधिक किशोर (Adolescents) पूरे समय के लिए स्कूल जाते हैं। यह विशेष स्थिति, जैसा कि तालिका नं० 3 से स्पष्ट है, उन उल्लेखनीय परिवर्तनों का परिणाम है जो 20वीं शताब्दी के शुरू होने के ठीक बाद हुए हैं।

यदि हम तालिका नं० 3 के आँकड़ों की तुलना तालिका नं० 1 के अंकों से करें तो देखेंगे कि किशोरों की पूर्णकालिक उपस्थिति की स्थिति अन्य देशों से जिन की हम यहाँ समीक्षा कर रहे हैं (न्यूजीलैंड को छोड़कर) ठीक वैसी है जैसी कि 40 साल से भी अधिक समय हुआ संक्रान्तिकाल में संयुक्तराज्य में थी। यहाँ हम यह स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे कि लगभग 50 वर्षों तक अमरीकी लोगों ने ऐसे पब्लिक सेकेण्ड्री स्कूलों को अपना सहयोग दिया है जिनमें पढ़ने वाले 16 वर्ष की आयु के तरुणों की संख्या आज इंगलैंड, स्काटलैंड और आस्ट्रेलिया के स्कूलों में पढ़ने वाले तरुणों की तिगुनी थी।

तालिका नं० 1 तथा 2 में प्रस्तुत आँकड़े पूरे संयुक्तराज्य की औसत संख्या पर प्रकाश डालते हैं। कुछ राज्यों में तो माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले तरुणों की संख्या राष्ट्रीय औसत से बहुत अधिक है, कुछ में बहुत कम। उदाहरण के लिए, 1940 में सोलह वर्षीय छात्रों की संख्या कैलीफोर्निया (California) और उताह (Utah) में 91 प्रतिशत थी। न्यूयार्क राज्य में यह संख्या 88.1 प्रतिशत थी; तथा कुछ राज्यों में यह 49.1 प्रतिशत थी (केनटकी) (Kentucky)। कर-संचालित और प्राइवेट स्कूलों के इन समकक्ष आँकड़ों की तुलना में भी हमें एकरूपता नहीं मिलेगी। 1950 में समूचे देश में माध्यमिक स्कूल जाने वाले तरुणों का 92 प्रतिशत पब्लिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहा था; कोई 6 प्रतिशत धार्मिक स्कूलों में और 2 प्रतिशत से भी कम अन्य प्राइवेट स्कूलों में।

तालिका 3

संयुक्तराज्य में माध्यमिक स्कूलों की स्थिति में परिवर्तन क्रम

स्कूल जाने वाले आयु-वर्ग का प्रतिशत मान

वर्ष	10—13	14	15	16	17
1890	८0†	❀	❀	❀	❀
1900	80†	❀	❀	❀	❀
1910	88†	81	68	51	35
1920	93	86	73	51	35
1230	97	93	85	66	48
1940	96	93	88	76	61
1950	99	95❀		71❀	

❀ अलग-अलग आयुवर्ग के लिए आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

† यह आयु विघटन केवल 10—14 आयुवर्ग में उपलब्ध है।

परन्तु कुछ राज्यों में प्राइवेट स्कूलों के छात्रों की समकक्ष संख्या काफी अधिक है। और पूरी प्रवेश संख्या में चढ़ाव-उतार की भाँति कुछ राज्यों में विभिन्न वर्गों के स्कूलों में इस दृष्टि से महान् अन्तर है।

यदि कोई संयुक्तराज्य के माध्यमिक स्कूलों का वर्णन कुछ पृष्ठों में करना चाहे तो असंभव होगा। राष्ट्रीय प्रणाली न होने के कारण एक राज्य के स्कूल से दूसरे राज्य के स्कूल अत्यन्त भिन्न हैं। यहाँ तक कि एक राज्य के स्कूलों में भी यह भेद उतना ही महान् है जितना विभिन्न राज्यों के स्कूलों में। कारण यह है कि संघ के किसी भाग में भी निःशुल्क सरकारी स्कूल की प्रणाली नहीं है। यहाँ आस्ट्रेलिया के साथ संयुक्तराज्य की विषमता साफ़ ज़ाहिर है। वहाँ भी स्कूलों के सम्बन्ध में राष्ट्रीय प्रणाली नहीं है। हमारे देश की भाँति वहाँ भी शिक्षा का प्रबन्ध राज्यों के हाथ में है। किन्तु वहाँ राज्यभर में समान शिक्षा पद्धति प्रचलित है

और उसका प्रधान एक स्थायी सरकारी अधिकारी (डाइरेक्टर आफ़ एजूकेशन) होता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य मन्त्रिमण्डल में एक शिक्षा मंत्री होता है। संयुक्तराज्य के 48 राज्यों में से किसी में भी इस प्रकार की राज्य-व्यापी शिक्षा प्रणाली की ओर कोई प्रयास तक नहीं किया जा रहा है। शिक्षा के विषय में अत्यन्त क्रियाशील राज्यों में भी शिक्षा का प्रमुख अधिकारी शिक्षा संचालक नहीं है। अमरीका में स्थानीय उत्तरदायित्व की परम्परा है। स्कूलों के सम्बन्ध में प्रत्येक राज्य की स्वतन्त्र सत्ता है। किन्तु यह शक्ति लगभग पूरी-पूरी विभिन्न नगरों, कस्बों तथा ज़िलों के स्थानीय लोगों द्वारा निर्वाचित स्कूल मंडलों को दे दी गई है।

हमारे पब्लिक स्कूलों की अत्यन्त विकेन्द्रित प्रणाली का परिणाम अच्छा भी है, बुरा भी। अच्छा इसलिए कि यहाँ प्रयोग के यथेष्ठ अवसर हैं और विभिन्नता का अभाव नहीं है। यदि आप एक विशेष प्रकार (Typical) के हाई स्कूल की व्याख्या करना चाहें तो आपको तुरन्त पता चल जायगा। इस प्रकार की विभिन्नता तथा शहरों और कस्बों एवं दो राज्यों के बीच में आपसी होड़ के बिना हमारे पब्लिक माध्यमिक स्कलों को शायद ही इतनी सफलता मिल पाती। इस शिक्षा-प्रणाली में मुख्य बात जो अन्य देशों से आये हुए शिक्षा समीक्षकों को तुरन्त खटकने लगती है वह है यहाँ के कुछ निम्नस्तरीय स्कूल। लेकिन गहराई से सोचें तो हम देखेंगे कि अमरीकी लोग राज्य शिक्षा प्रणाली के बजाय विकेन्द्रित शिक्षा प्रणाली को, इसकी अनेक कमियों के बावजूद भी, ज्यादा पसन्द करते हैं। राज्य शिक्षा-प्रणाली द्वारा जहाँ कुछ निम्नस्तरीय स्कूल समाप्त हो सकते हैं वहीं एक निर्धारित सीमा के अन्दर शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त एकरूपता भी आ सकती है। अमरीकी जनता, जिसमें पब्लिक स्कूल के प्रबन्धक लोग भी आते हैं, की यह पसन्द बड़ी युक्तिसंगत प्रतीत होती है। मेरा विश्वास है कि इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। राज्य द्वारा शनैः-शनैः आर्थिक सहायता में तो वृद्धि हो रही है किन्तु अभी तक उसने नियुक्ति अथवा पाठ्यचर्या के नियन्त्रण में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की बात नहीं चलाई। यदि स्थानीय शिक्षा बोर्ड इसी प्रकार सशक्त बना रहे तो अमरीका की विशेष विकेन्द्रित शिक्षा प्रणाली जारी रखी जा सकती है।

पूरे संयुक्तराज्य के माध्यमिक स्कूलों में विकराल विभिन्नता होने के कारण

यह कहना असंभव है कि अमरीका में किशोरों की शिक्षा के लिए निश्चित योजना क्या है। कुछ समृद्ध वर्गों में सोलह वर्ष की आयु के लगभग 90 प्रतिशत तरुण स्कूलों में हैं और इनमें आधे से ज्यादा कालेज या विश्वविद्यालय जाने की सोचते हैं। किसी नगर के अत्यन्त प्रधान भागों में स्कूल का अन्तिम-चारवर्षीय पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने वालों में से केवल कुछ प्रतिशत छात्र इसे पूरा करते हैं और उनमें से कुछ ही लोगों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने की संभावना रहती है। ऐतिहासिक दृष्टि से पुराने नगरों में माध्यमिक शिक्षा का नमूना उन्नीसवीं शताब्दी में लैटिन स्कूलों या हाई स्कूल की एकादमियों ने प्रस्तुत किया। ये प्राचीन शैली में चार या छ: वर्षीय शिक्षा प्रदान करते थे जिनमें दो भाषाएँ अनिवार्य होता थीं। जब माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई तो कुछ स्कूल मंडलों का संगठन हुआ, ठीक वैसे जैसे कि आज हम ब्रिटेन में देखते हैं। योग्य तथा ऐसे विषयों में अभिरुचि रखनेवाले छात्रों को, जो आज से चालीस वर्ष पूर्व कालेज की शिक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक समझे जाते थे, स्कूल की शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। जो लोग इन स्कूलों (मोटे तौर पर आज के ब्रिटिश ग्रामर स्कूलों जैसे) में नहीं पढ़ना चाहते थे उनको कुछ अधिक तकनीकी तथा व्यावसायिक शिक्षा दी जाती थी। दूसरे वर्गों में हाई स्कूलों का काफी संख्या में विस्तार किया गया और अन्य कई ढंग से स्कूलों की स्थापना हुई। उनमें से एक तो ऐसे स्कूल थे जिनमें मुख्य रूप से कालेज की शिक्षा के लिए तैयारी कराई जाती थी तथा अन्य स्कूल ऐसे थे जहाँ औजार चलाने की या कुछ व्यापारिक केन्द्रों पर काम करनेवाले पुस्तकपाल या क्लर्क तैयार किए जाते थे।

पचास या इससे भी ज्यादा वर्षों तक शिक्षा शास्त्री लोग आदर्श हाई स्कूल की पाठ्यचर्या (Curriculum), हाई स्कूलों के समूह की पाठ्यचर्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार-विमर्श करते रहे। माध्यमिक स्कूलों के द्विविध कार्य—रोजगार की तैयारी तथा आगे की शिक्षा की तैयारी—के कारण पाठ्यचर्या को विविध व्यावसायिक बातें प्रभावित करती हैं। इन दोनों प्रकार के स्कूलों की सही संख्याओं के ज्ञान का दावा तो मैं नहीं करता। फिर भी मैं समझता हूँ कि अब भी 'प्राचीन ढंग के' बहुत-से स्कूल हैं जहाँ छात्रों पर उनकी रुचि तथा महत्त्वाकांक्षा के प्रतिकूल 'पुस्तक-ज्ञान' का भार लाद दिया जाता है। फिर भी

कई नगरों और क़स्बों में प्रतिकूल दिशा में भी क़दम उठ चुके हैं—यहाँ तक कि बहुत-से शिक्षा समीक्षक मित्रों की यह धारणा है कि अधिक ज़ोर ऐसी शिक्षा पर देना चाहिए जो आज ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के उन स्कूलों में दी जाती है जिनमें केवल मेधावी तरुण ही शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रत्येक देश में अधिक मेधावी विद्यार्थियों के लिए माध्यमिक स्कूलों की पाठ्यचर्या को हम विश्वविद्यालय की शिक्षा के लिए अपेक्षित योग्यता से अलग नहीं कर सकते। 'अच्छी' माध्यमिक शिक्षा क्या है? इस प्रश्न का सीधा सम्बन्ध विश्वविद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों की उस योग्यता तथा ज्ञान से है जो एक प्राध्यापक की दृष्टि में उनके लिए अपेक्षित है। ब्रिटिश राष्ट्रों तथा संयुक्तराज्य में हाई स्कूल की दृष्टि से जो अन्तर है उससे स्पष्ट इनके 18 से लेकर 21 वर्ष तक के तरुणों की शिक्षा में महान् अन्तर की यथेष्ट झलक मिलती है। अस्तु, अमरीकी हाई स्कूल तथा इसकी भावी योजनाओं पर विचार करने के पूर्व आवश्यक हो जाता है कि हम अमरीकी कालेज, इसके जन्म, वर्तमान स्थिति तथा भविष्य का सिंहावलोकन करें।

2

अमरीकी कालेज

अक्सर यह कहा जाता है कि संयुक्तराज्य में 'हर युवक कालेज जाता है।' किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी नहीं है। यह बात अवश्य है कि हमारा लगभग एक तिहाई विद्यार्थी किसी न किसी कालेज या विश्वविद्यालय में अवश्य पढ़ता है। उनमें कुछ तो पूर्णकालिक विद्यार्थी हैं, और कुछ अंशकालिक। फिर भी तालिका 4 के सानुमानिक विवरण द्वारा ब्रिटिश राष्ट्रों की तुलना में प्रस्तुत अन्तर की पुष्टि के लिए इस प्रकार का सूक्ष्म और अतिशयोक्ति पूर्व ब्यौरा उपस्थित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त ठीक इसी प्रकार कहा जा सकता है—'इंगलैंड, स्काटलैंड, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में कोई भी कालेज नहीं जाता।' अमरीका में 'कालेज' का जो अर्थ लिया जाता है उस दृष्टि से यह ठीक भी है, क्योंकि उक्त किसी भी ब्रिटिश देश में अमरीकी कालेज जैसी संस्था नहीं है। आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज का आज क्या हमेशा अपना विशिष्ट स्थान रहा है। उनके आकर्षित कालेज एक विशेष प्रकार की सामान्य शिक्षा प्रदान करते हैं। विशेषत: आक्सफोर्ड में कुछ शिक्षाकेन्द्र (ग्रेट्स और माडर्नग्रेट) ऐसी शिक्षा प्रदान करते थे जो कम से कम कुछ दिनों पूर्व तक तो भावी सिविल सर्वेण्ट या राजनीतिक नेता के लिए विशेष उपयुक्त मानी जाती थी। किन्तु इन संस्थाओं के अतिरिक्त ब्रिटिश विश्वविद्यालय को आप निःसंकोच रूप से मुख्यतया व्यावसायिक स्कूल कह सकते हैं; बल्कि यह कहें तो अधिक उपयुक्त होगा कि वे उच्चस्तरीय व्यावसायिक स्कूल हैं।

तालिका 4

चार ब्रिटिश राष्ट्रों तथा संयुक्तराज्य में विश्वविद्यालय और कालेज के विद्यार्थियों की शिक्षा की स्थिति (1950-54)

उपाधिदात्री संस्थाओं में पूर्णकालिक शिक्षा ग्रहण करनेवाले विशेष आयु-वर्ग (बालक और बालिकाओं) की प्रतिशत संख्या।

(कोष्ठक में दिये गए अंक पूर्णकालिक और अंशकालिक प्रवेश संख्याएँ हैं।)

कालेज या विश्वविद्यालय (कक्षा) का वर्ष	इंगलैंड	स्काटलैंड	आस्ट्रेलिया + (1)	(2)	(3)	न्यूजीलैंड	संयुक्तराज्य ‡
1	3	4	3(6)	4.5(6)	6	3 (5.5)	18(24)
2	3	4	3(6)	4.5(6)	6	3 (5.5)	12(16)
3	3	4	3(6)	4.5(6)	6	3 (5.0)	10(12)
4	*2	3		*2		*2	9(11)
5	*1	*1		*1		*1	1
6							1
7							*1

+(1) दक्षिणी आस्ट्रेलिया (2) न्यू साउथ वेल्स (3) विक्टोरिया।

‡ कोष्ठकबद्ध अंक आमतौर से इसलिए दिये गए हैं कि अंशकालिक और पूर्णकालिक विद्यार्थियों को एक साथ ही रखा जा सके, किन्तु सच्चा अनुमान तो यह है कि संयुक्तराज्य में एक चौथाई विद्यार्थी अंशकालिक हैं।

नोट—यहाँ न तो सैनिक सेवा के कारण और न ही किन्हीं अन्य कारणों से प्रवेश संख्याओं में होने वाले परिवर्तन की छूट दी गई है; किन्तु द्वितीय महायुद्ध के अवकाश प्राप्त सैनिकों या सैनिक अफसरों के बच्चों के इतने ज्यादा प्रवेश नहीं हुए हैं जिनसे कि सानुमानित प्रवेश आँकड़ों पर विशेष प्रभाव पड़े। यदि ये आँकड़े केवल पुरुषों के लिए होते तो ये कुछ भिन्न होते :

इंगलैण्ड के 3.0 के स्थान पर 4.5; स्काटलैण्ड के 4 के स्थान पर 5.5 और आस्ट्रेलिया तथा संयुक्तराज्य के आँकड़े तो 20 प्रतिशत अधिक होते। प्राप्त तथ्यों को एक सामान्य आधार पर लाने से हो सकता है कि संयुक्त-राज्य के आँकड़े कुछ बढ़ जाएँ और इस प्रकार प्रवेश संख्याओं का केवल आकार की दृष्टि से महत्त्व रह जाय।

ग्रेट ब्रिटेन तथा ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के सभी राष्ट्रों में कोई भी युवक अथवा युवती 17, 18 या 19 वर्ष की आयु में वृत्तिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश करता है। विशेष अध्ययन, अधिकाँशतः, तीन या चार वर्षों में समाप्त हो जाता है। इसके विपरीत संयुक्त राज्य में माध्यमिक शिक्षा की समाप्ति से लेकर क़ानून या चिकित्सा विज्ञान की वृत्तिक उपाधि प्राप्त करने तक पाँच से लेकर आठ साल तक लग जाते हैं। यहाँ तक कि स्नातक की उपाधि भी, कुछ अपवादों को छोड़कर, पाँच साल से कम में नहीं दी जाती। यह कहना ठीक न होगा कि संयुक्तराज्य में ब्रिटिश राष्ट्रों की अपेक्षा विश्व-विद्यालय जाने वाले तरुणों की संख्या बहुत अधिक है, क्योंकि इस प्रकार की धारणा से यह ध्वनित होता है कि सभी अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों में 'विश्वविद्यालय' शब्द का एक ही अर्थ है, जबकि वस्तुस्थिति इससे बिलकुल भिन्न है। यह तालिका नं० 5 में दिये हुए छात्रों के सामान्य तथा वृत्तिक शिक्षा के वितरण के अनुमान से स्पष्ट हो जाता है। संयुक्तराज्य की स्थिति की विचित्रता का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है: ब्रिटेन वालों की अपेक्षा अमरीकी लोग विशेषीकरण (इंजीनियरिंग को छोड़कर) कई सालों तक रोक रखते हैं। वैसे तो अमरीकी तरुण एक बहुत बड़ी संख्या में वृत्तिक शिक्षा प्रारम्भ करता है किन्तु समाप्त करने वाले तरुणों की संख्या ब्रिटिश राज्यमण्डल के राष्ट्रों से बहुत अधिक नहीं होती। संक्षेप में, इसी अमरीकी कालेज की विशेष व्यवस्था के कारण ही यहाँ उच्च शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ जाती है और वृत्तिक शिक्षण की समाप्ति भी रुक जाती है।

तालिका 5

संयुक्तराज्य के विश्वविद्यालयों और कालेजों के छात्रों (Male) की सानुमानित प्रवेश संख्याएँ, 1950-1954

(अंशकालिक तथा पूर्णकालिक)‡

पूर्णकालिक तथा अंशकालिक रूप से शिक्षा ग्रहण करने वाले एक विशेष आयुवर्ग की प्रतिशत संख्या

कालेज या विश्व-विद्यालय का वर्ष	चार वर्षीय कालेजं†	वृत्तिक	अध्यापन प्रशिक्षण	जूनियर कालेज	योग
1	12	8	6	3	29
2	8	7	5	2	22
3	7	6	3	—	15
4	7	4	3	—	14
5	—	2	—	—	2
6	—	1	—	—	1
7	—	*1	—	—	*1

‡ ये अनुमान बिलकुल काम चलाऊ तथा अनिश्चत हैं और प्रस्तुत करने का ढंग इनको अन्य देशों के आँकड़ों से अधिक ऊँचा बना देता है।

† इसमें वे विद्यार्थी भी शामिल हैं जो व्यापार तथा वाणिज्य से सम्बद्ध हैं। (इस स्तम्भ के योग का लगभग एक तिहाई)

वृत्तिक छात्रों को चुनने की अपनी प्रणाली की तुलना हम ब्रिटिश प्रणाली से करें तो देखेंगे कि हमारी प्रणाली एक ऐसी लम्बी तथा भयंकर कुप्पी (Funnel) की भांति है जो धीरे-धीरे संकरी होती जाती है। ब्रिटिश प्रणाली कम-से-कम एक पीढ़ी पहले तक एक लम्बे और संकरे बेलन की भांति थी। आज भी कुप्पी (Funnel) और बेलन (Cylinder) की तुलना ठीक बैठती है, क्योंकि पूरी ब्रिटिश प्रणाली में आप देखें तो पता चलेगा कि यहाँ पूर्व

विश्वविद्यालयीय शिक्षा के छात्रों को संयुक्तराज्य की अपेक्षा कम आयु में चुनने का बहुत बड़ा प्रयत्न है। अस्तु मेरा यह यान्त्रिक उपमान सही हो या नहीं, यह स्पष्ट है कि हमारे माध्यमिक स्कूलों की प्रवेश संख्या का आकार तथा हमारी हाई स्कूल के बाद की शिक्षा की अवधि अमरीकी कालेज के स्वरूप से पूरी-पूरी जुड़ी हुई है। बल्कि यदि हम यह कहें कि संयुक्तराज्य में निःशुल्क माध्यमिक स्कूलों के विस्तार में चारवर्षीय लिबरल आर्ट्स कालेज का बहुत बड़ा हाथ रहा है तो कोई अत्युक्ति न होगी। मेरा विश्वास है कि सभी अमरीकी तरुणों के लिए सामान्य शिक्षा का अभियान इन्हीं अवृत्तिक कालेजों की महान् तथा लोकप्रिय सफलता का परिणाम है। इसमें बौद्धिक प्रतिभा पर उतना बल नहीं दिया जाता जितना अन्य वृत्तिक संस्थाओं में।

एक बात मैं यहाँ स्पष्ट कर दूँ कि यह मेरी दृढ़ धारणा है कि सामान्य शिक्षा की बढ़ती हुई माँग निराधार नहीं है। इस मिश्रित सभ्यता में पूरे अमरीकी तरुण समाज के लिए 'जितनी शिक्षा' अपेक्षित है वह तभी पूरी की जा सकती है जब शिक्षा को व्यापक बनाया जाय।

टामस जैफर्सन ने 'प्रतिभा तथा गुण के सहज आभिजात्य' के चुनने और 'जनता के व्यय पर जनता के ही कार्यों के लिए' शिक्षित करने की जो इच्छा व्यक्त की वही कालान्तर में सभी जनतन्त्रीय राष्ट्रों के लिए मूलमन्त्र बन गई : मतलब यह कि करदाता का कर्त्तव्य है कि वह मेधावी बच्चे की प्रतिभा को विकसित करने के लिए अपेक्षित शिक्षा का प्रबन्ध करे। क्यों ? इसलिए कि इस प्रकार का शिक्षित एवं प्रतिभावान तरुण बाद में समूचे राष्ट्र की सेवा करेगा और इस प्रकार वह उसकी भी सेवा करेगा। यह नियम, कम से कम सिद्धान्तरूप में माध्यमिक शिक्षा को केवल ऐसे लोगों के लिए सीमित बना देता है जो 'पुस्तक ज्ञान' में विशेष प्रवीण हैं या जो मेधावी हैं। लेकिन जैफर्सन जैसे महान् डैमोक्रेट के मस्तिष्क में निश्चित रूप से यह बात नहीं थी कि ऐसे परिवारों के किशोर आयु वाले बच्चों को औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा जाय जिनके माँ-बाप इस प्रकार की शिक्षा के लिए अपेक्षित व्यय वहन कर सकते हैं। यह बात निर्विवाद है कि न तो इस महाद्वीप में ना ही ब्रिटिश साम्राज्य के किसी भाग में किसी भी संगठित समाज ने, उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसे प्राइवेट माध्यमिक स्कूल या कालेज, जो पहले स्कूल रहे हों, स्थापित करने का प्रयास

किया, जिनका उद्देश्य केवल मेधावी छात्रों को शिक्षित करना रहा हो। बल्कि प्रयास इसके विपरीत दिशा में हुए। प्राइवेट स्कूल का अधिक ज़ोर नागरिक शिक्षा पर अधिक होता था। वे वृत्ति पर अधिक ज़ोर नहीं देते थे। कुछ प्रोटैस्टैण्ट गिरजाघरों से सम्बद्ध तथा ग्रामीण कैथोलिक स्कूलों में धर्म शिक्षा का अनन्य अंग था। इन स्कूलों में खेलकूद के महत्त्व, समन्वयात्मक दृष्टि तथा अनुशासन पर उतना ही बल दिया जाता था जितना उनकी बौद्धिक प्रतिभा के विकास पर। इसी प्रकार सन् 1900 तक अमरीकी कालेज में कहा जाता था "आप जो सीखते हैं उसका उतना महत्त्व नहीं जितना इस बात का कि आप कितने मित्र बनाते हैं।"

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक संयुक्तराज्य में हर प्रकार की प्राइवेट अकादमियाँ तथा प्राइवेट दाननिधि-पोषित बहुत-से कालेज काम कर रहे थे। ग्रेट ब्रिटेन में पुराने 'पब्लिक स्कूलों' का, अधिकाँशतः रुग्बी (Rugby) के आर्नाल्ड (Arnold) की देखा-देखी, पुनरुद्धार हो रहा था। उनकी सफलता का, जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में कहा था, आस्ट्रेलिया पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और यहाँ तक कि संयुक्तराज्य में भी यह लहर पहुँचे बिना नहीं रही। इसका कारण यह है कि जब इस शताब्दी के प्रारम्भ में, सभी अंग्रेज़ी भाषी राष्ट्रों में सामाजिक प्रजातन्त्र की भावना का जन्म हुआ तो कर-दाता के धन के उपयोग के लिए साधन-सम्पन्न लोगों के लिए प्राइवेट स्कूल और कालेजों की लोकप्रियता बहुत बड़ी शक्ति सिद्ध हुई। इन स्कूलों और कालेजों में उतनी स्पर्धा भी नहीं थी जितनी जैफर्सन की योजना में थी।

पाठक पिछले पचास वर्षों में काम करने वाली सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों के विषय में प्रस्तुत की गई मेरी छानबीन को स्वीकार करें या न करें किन्तु इस दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए हैं, वे किसी भी भाँति सन्देहास्पद नहीं (तालिका 6)। आज से चालीस साल पहले इस देश की स्थिति अन्य अंग्रेज़ी भाषी राष्ट्रों की आज की स्थिति से अधिक भिन्न नहीं थी। अभी भी कालेज में तदनुकूल आयुवर्ग का केवल 5 प्रतिशत तरुण प्रवेश लेता था। 1930 तक 18 से लेकर 21 वर्ष आयु के 10 प्रतिशत से ऊपर तरुण उपाधिदात्री संस्थाओं में प्रवेश लेने लगे और 1940 तक यह संख्या 15 प्रतिशत तक पहुँच गई। युद्धोत्तर कालीन आँकड़े अवकाश-प्राप्त सैनिक कर्मचारियों

के आजाने से, संभवतः, 20 प्रतिशत पहुँच गए होंगे।

यह बात स्पष्ट है कि इस महाद्वीप में युवक और युवतियों की शिक्षा के विषय में जो विचार उदित हुआ वह ब्रिटिश धारणा, चाहे वह ग्रेट ब्रिटेन के सम्बन्ध में हो चाहे नए राष्ट्र आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के सम्बन्ध में, से बिलकुल भिन्न था। अमरीकी कालेज ने एक विशेष प्रकार की संस्था के रूप में एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। 'कालेज-शिक्षा' को एक वाँछनीय अनुभव करार दिया गया और इस शताब्दी में उपाधिदात्री संस्थाओं का आकार की दृष्टि से बहुत विस्तार हुआ।

अमरीकी कालेज का जन्म

यह समझने के लिए कि अमरीका में लिबरल आर्ट्स कालेज का विचार कैसे उठा आपको पिछले 400 वर्षों के इतिहास के पन्ने उलटने पड़ेंगे। बात यह है कि यहाँ हम जिन शिक्षा-प्रणालियों की तुलना करने बैठे हैं उन सबका एक ही स्रोत है, और वह है—सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का इंगलैंड। संयुक्त-राज्य तथा ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल भर के लगभग हर स्कूल और (अंग्रेजी) साहित्य के अध्यापन में उपलक्षित मूल्यों के तारतम्य में शेक्सपियर का स्थान ऐंग्लो-सैक्सन जगत की मूलभूत एकता का प्रतीक है। इसे आप दुर्घटना न कहें कि जो कुछ 'हर स्कूल के बच्चे को जानना चाहिए' उसमें एक एलिज़बेथ कालीन नाटककार की रचनाओं का स्थान सर्वोपरि है।

महारानी एलिज़बेथ के राजत्वकाल में इंगलैंड ने धर्मसुधार (Reformation) को अंग्रेजी बाना पहनाया। काल्विन के सिद्धान्तों का यही अंग्रेजीकरण सत्रहवीं शताब्दी का साँस्कृतिक आधार बना; और सत्रहवीं शताब्दी में ही अमरीकी शिक्षा का इतिहास, बाकी ऐंग्लो-सैक्सन शिक्षा पद्धति से भिन्न होने लगा। वास्तव में यहाँ हमारा अभिप्रेत इस विचारधारा का समर्थन है कि सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा सिद्धान्तों को ही उत्तरी अमरीका में जारी रखा गया है और वस्तुतः सोलहवीं शताब्दी की मूल परम्परा का परित्याग अमरीका ने नहीं अपितु इंगलैंड ने किया।

तालिका 6

संयुक्तराज्य के कालेज की स्थिति में परिवर्तन

(समस्त आँकड़े छात्र और छात्राओं की पूर्णकालिक उपस्थिति के द्योतक हैं।)

वर्ष	कालेज जाने वाले 18-21 आयुवर्ग के तरुणों की प्रतिशत संख्या	स्नातक उपाधि प्राप्त करने वाले आयुवर्ग के तरुणों की प्रतिशत संख्या
1890	3	1.1
1900	4	1.8
1910	5	1.9
1920	8	2.7
1930	12	5.5
1940	15	5.9
1950	30*	10.0†

* अवकाश प्राप्त सैनिक कर्मचारियों के आजाने के कारण यह संख्या कुछ ज्यादा बढ़ी है। 20 प्रतिशत अधिक उपयुक्त संख्या होगी।

† 1950 के लिए किए गए प्रवेश के आधार पर 1954 के लिए अनुमानित।

यहाँ मेरे मन में केवल एक बात है : सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध और गृह-युद्ध के पूर्व तक ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज ऐसे तरुणों की शिक्षा के केन्द्र बने रहे जिन्हें बौद्धिक पेशे नहीं करने थे। अट्ठारहवीं शताब्दी के धर्मसुधार ने यद्यपि इन दोनों पुराने विश्वविद्यालयों के शिक्षा के स्वरूप में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया, फिर भी इससे युग को एक नई दिशा मिली। मध्ययुग का प्रमुख शास्त्र धर्मशास्त्र लोकप्रिय हो चला था। जिस विचारधारा ने सबको बाइबिल पढ़ने का अधिकार दे दिया था उसी ने सबको शिक्षित बनाने पर भी जोर दिया। (John Knox) की 'बुक आफ डिसिप्लिन' (Book of discipline) ने स्काटलैंड की शिक्षा पर जो प्रभाव डाले उनकी चर्चा की ही जा चुकी है।

प्यूरिटन (Puritans) तथा प्रेस्बिटीरियन (Presbyterian) दोनों निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे।

एलिज़बेथ के इंगलैंड के राष्ट्र धर्म (English Church) के निपटारे से लेकर 1942 में गृहयुद्ध प्रारम्भ होने तक कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड बौद्धिक तथा राजनीतिक समस्याओं से जूझते रहे। धर्मशास्त्रों के पढ़ने तथा उन पर विचार-विमर्श करने का ऐसा सुअवसर फिर कब आता और इसके परिणाम भी शीघ्र ही दृष्टिगोचर होने लग गए। हाई चर्च पार्टी और प्यूरिटन पार्टी का संघर्ष आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कालेजों में लगभग तीन पीढ़ियों तक चलता रहा। यहाँ तक कि अन्त में संघर्ष शस्त्र संघर्ष के रूप में बदल गया। यह संघर्ष तब तक शान्त नहीं हुआ जब तक दीर्घ संसद् (Long Parliament) नहीं बुलाई गई। उस पार्लियामेंट में प्यूरिटन पार्टी की एक माँग यह थी कि 'इन दोनों विद्या-मन्दिरों' का परिष्कार होना चाहिए। मतलब यह कि इनका रोमन गिरजाघर की ओर कोई झुकाव न हो।

सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में ये अंग्रेजी विश्वविद्यालय न केवल उत्तेजना के केन्द्र बने रहे अपितु इनके छात्रों की संख्या भी असाधारण थी। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज में प्रति वर्ष कोई एक हजार विद्यार्थी प्रवेश लेता होगा। यदि यह मान लें कि उस समय इंगलैंड की पूरी जनसंख्या पचास हज़ार (5 मिलियन) थी तो इसका मतलब यह हुआ कि इन विश्व-विद्यालयों में उस आयुवर्ग का, संभवतः, 2 प्रतिशत नवयुवक शिक्षा ग्रहण करता था। हाँ, उस समय वहाँ दूसरे विश्वविद्यालय नहीं थे)। गृहयुद्ध के पश्चात् स्थिति कुछ बदल गई, और यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि इंगलैंड में जितने नवयुवक सत्रहवीं शताब्दी के तृतीय चरण में विश्वविद्यालय शिक्षा ग्रहण कर रहे थे उतने शायद बीसवीं शताब्दी तक नहीं।

इस सम्बन्ध में एक महत्त्वपूर्ण बात ध्यान में रखनी होगी। जिस समय की चर्चा अभी-अभी की गई है अर्थात् सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक, उस समय विश्वविद्यालयों का उद्देश्य केवल मंत्री, वकील तथा डाक्टर तैयार करना ही नहीं था; अपितु ऐसे भद्रपुरुष भी तैयार करना था, जो आगे चलकर जन-कार्यों में प्रमुख भाग ले सकें। इस बात की पुष्टि के लिए हमें कुछ विषयान्तर करना होगा। मैं इस सम्बन्ध में केवल चार तथ्य प्रस्तुत करूँगा—पहली बात तो यह

कि इन विश्वविद्यालयों की इतनी बड़ी संख्या स्वयं इस बात का प्रमाण है कि ये केवल मात्र धार्मिक तथा नैतिक सँस्थाएँ नहीं थीं; दूसरे यह कि एक बहुत बड़ी संख्या में सामान्य जन, जिन्होंने राजा और पार्लियामेण्ट के बीच के संघर्ष में ऐतिहासिक योग दिया, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के ही पुराने विद्यार्थी थे; तीसरे प्यूरिटन आक्सफोर्ड (Puritan Oxford) का क्राम्बेल के समय (Cromwellian Period) में नवीन प्रयोगात्मक दर्शन के केन्द्र के रूप में महत्त्व; और चौथे उत्तरी अमरीका की खाड़ी पर होने वाले सत्रहवीं शताब्दी के समझौते पर आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के लोगों का प्रभाव।

जहाँ तक अन्तिम बात का प्रश्न है, सत्रहवीं शताब्दी में आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज की शिक्षा के स्वरूप के कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाणों का पता तो हार्वर्ड कालेज (Harvard College) के प्रस्थापकों के विचारों से ही चल जाता है। यह बात बड़े ऐतिहासिक महत्त्व की है कि जंगल में बस्ती क़ायम करने वाले कुछ नेताओं ने उक्त समझौते की एक पीढ़ी के अंदर ही एक कालेज प्रारम्भ करने तथा उसे चलाने की योजना बना डाली। यह बात तभी स्पष्ट हो सकती है जब आप इस बात पर विचार करें कि इस नई बस्ती के क़ायम करने वालों में ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के कितने आदमी थे। आंग्ल-प्यूरिटन परम्परा ज्ञान से परिपूर्ण थी अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इस परम्परा के न्यू इंगलैंड में पहुँचते ही, एक नये विश्वविद्यालय का जन्म हुआ। वास्तव में बात यह थी कि प्यूरिटन लोग विद्वान लोगों का मन्त्रिमण्डल चाहते थे। मन्त्रियों की व्यवस्था के विषय में सामान्यतया यह वाक्य प्रयुक्त होता था। हो सकता है कि इसमें कुछ अत्युक्ति हो क्योंकि आप्रवासियों में कुछ ऐसे योग्य लोग भी थे जो अब भी 'खाक छान रहे थे।' जैसा कि प्रोफ़ेसर मोरिसन (Prof. Morison) ने कहा है कि हार्वर्ड की स्थापना में न्यू इंगलैंड के प्रस्थापकों के मन में कोई धार्मिक संस्था नहीं अपितु कैम्ब्रिज कालेज की समकक्ष संस्था थी। अनेकों उथलों-पुथलों का सामना करते हुए वे तथा उनके उत्तराधिकारी इस कालेज को चलाने में सफल हुए। लेकिन इनकी दृष्टि हमेशा ऑक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज पर रहती थी जहाँ इसके अधिकाँश संस्थापकों ने शिक्षा प्राप्त की थी।

अब हम अमरीकी तथा ब्रिटिश दोनों शिक्षा स्रोतों की विभिन्नता पर दृष्टि-पात करेंगे। जहाँ तक मैं समझता हूँ सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध इस देश की

शिक्षा तथा अन्य अंग्रेजी भाषी देशों की शैक्षिक परम्पराओं के बीच की कड़ी है। उत्तरी अमरीका में तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटीं जिन्होंने उस क्षेत्र की बाद की गतिविधियों को बहुत अधिक प्रभावित किया जिसे आज हम संयुक्तराज्य कहते हैं। 1648 में ऑक्सफोर्ड और बाद में कैम्ब्रिज (दोनों प्यूरिटन नियन्त्रण में) ने हार्वर्ड की ए० बी० को अपनी उपाधि के समकक्ष मान लिया। उन्होंने हार्वर्ड के स्नातक को आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के ए० एम० के लिए बिना किसी परीक्षा के लेना प्रारम्भ कर दिया। दूसरे यह कि विलियम और मेरी के कालेज (College of William and Mary) की घोषणा 1693 में हो गई थी और यद्यपि घोषणापत्र में उपाधि देने के अधिकार की स्पष्ट रूप से तो कोई चर्चा नहीं की गई थी फिर भी परोक्ष रूप से लन्दन में इस अधिकार की स्वीकृति निस्सन्देह, मिली होगी; क्योंकि यह कालेज प्रारम्भ से ही बिना किसी रोक-टोक के उपाधियाँ देने लगा। तीसरे यह कि 1701 ई० (सत्रहवीं शताब्दी को मैं थोड़ा आगे बढ़ा रहा हूँ) में कनेक्टीकट जनरल कोर्ट (Connecticut General Court) ने येल विश्वविद्यालय (Yale University) की घोषणा की और साथ ही उसे उपाधि देने का अधिकार भी दे दिया। उसके पश्चात् अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य में उत्तरी अमरीका की स्नातक-उपाधि प्रदान करने वाली तीन अन्य संस्थाओं की घोषणा हुई—1746 में न्यूजर्सी के गवर्नर द्वारा प्रिन्सिटन की (Princeton by the Governor of New Jersey), जार्ज द्वितीय द्वारा 1754 में कोलम्बिया (किंग्स कालेज) (Columbia Kings College by George II) और 1755 में "पेनसिलवेनिया (Pennsylvania) प्रदेश के मालिकों और प्रमुख गवर्नर द्वारा पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय (कालेज, एकादमी तथा धर्मार्थ विद्यालय)।

इस प्रकार उत्तरी अमरीका में अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक कला में स्नातक उपाधि देने वाले कम से कम 6 कालेज स्थापित हो गए थे। फिर भी उनमें से एक को भी सही अर्थों में कम से कम अंग्रेजी और यूरोपीय अर्थों में विश्वविद्यालय नहीं कहा जा सकता था क्योंकि इनमें से एक के पास भी ऐसा संकाय नहीं था जहाँ स्नातकोत्तर उपाधि के लिए परीक्षा की व्यवस्था की जा सके। खैर, यह एक ऐसा उदाहरण था जिसने कालान्तर में अमरीकी शिक्षा पर क्रान्तिकारी प्रभाव डाला। उत्तरी अमरीका के उपनिवेशों के कालेज अपने छात्रों को बिना किसी अन्य विद्वत्समिति के परामर्श के खुले आम स्नातक उपाधियाँ

देने लगे। अमरीका ने एक ऐसी प्रथा चलाई जिससे बीसवीं शताब्दी में यह नौबत आ पहुँची कि अमरीकी शैक्षिक उपाधियों का आज लगभग कोई अर्थ ही नहीं रहा। आज संयुक्तराज्य में किसी भी संस्था का उद्घोषित कालेज या विश्वविद्यालय होने का यह अभिप्राय नहीं कि वहाँ अच्छी शिक्षा भी प्रदान की जाती होगी।

1750 तक उत्तरी अमरीका में स्नातक उपाधि प्रदान करने वाले 6 कालेजों की स्थापना हो गई। इसका इंगलैंड ने न तो कोई विरोध किया और ना ही अमरीका की नई शिक्षा प्रणाली ग्रहण करने में कोई अभिरुचि प्रकट की। संभवतः, लंदन अटलाण्टिक सागर के पार पाठ्य चर्या तथा उपाधि जैसे विशुद्ध शैक्षिक मामलों के विषय में जो कुछ हो रहा था उसकी लन्दन में कोई प्रक्रिया ही नहीं हुई। अंग्रेजी उपाधियों के परम्परागत संरक्षक आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज 'अट्ठारहवीं शताब्दी की भ्रष्ट निद्रा' का आनन्द ले रहे थे। यदि इन संरक्षकों (आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज) ने अमरीकी कालेजों की उक्त प्रवृत्ति का विरोध किया होता तो 1648 में इनका हार्वर्ड को मान्यता देने का निर्णय इन्हीं के विरोध में जाता। कुछ भी हो, अमरीकी उपनिवेशों में जिन कालेजों की स्थापना हुई उन पर कोई नियन्त्रण नहीं था। इंगलैंड में आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज पूर्ववत् चलते रहे। हाँ, एलिज़बेथ के शासनकाल में स्काट-विश्वविद्यालयों तथा ट्रिनिटी कालेज डबलिन (Trinity Colloge, Dublin) की स्थापना अवश्य हो गई।

ब्रिटिश विश्वविद्यालय परम्परा

आइसिस (Isis) तथा कैम (Cam) नदियों के किनारे स्थित इन दो विद्यामन्दिरों का एकाधिपत्य तब तक बना रहा जब तक सन् 1836 में लन्दन विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं हो गई। केवल एकाधिपत्य ही नहीं अपितु पुनः स्थापन समझौते के कलेरेण्डन कोड (1961) (Clerendon code of Restoration settlement) द्वारा इसमें प्रवेश भी अत्यन्त सीमित कर दिया गया। इन विश्वविद्यालयों से उपाधि प्राप्त करने के अधिकारी केवल वे लोग ही माने जाते थे जो राजधर्म (Established Church) के अनुयायी थे। यहाँ तक कि कुछ लोगों को छोड़कर, यहाँ प्रवेश भी राष्ट्रधर्म (Chuch of England) अनुयायियों को ही मिलता था। यही कारण है कि जब तक ये

विश्वविद्यालय इतने सीमित रहे तब तक इनका विकास रुका रहा। डिसेंटिंग एकादमियाँ (Dissenting academian) जिनका उदय अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य में पूरे इंगलैंड में हुआ, संभवतः, इन विश्वविद्यालयों से कहीं अच्छी शिक्षा प्रदान करती थीं। सत्रहवीं शताब्दी की भद्रजनोचित शिक्षा प्रदान करने की परम्परा आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज की अपेक्षा इन एकादमियों में अब भी सशक्त थी। किन्तु इतना होने के बावजूद भी ये एकादमियाँ उपाधि देने की बात सोच भी नहीं सकती थीं। किन्तु चूँकि इंगलैंड का राजधर्म एक ही था, अतः इन एकादमियों का अस्तित्व स्वतन्त्र नहीं रह सकता था।

इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब अंग्रेजी भाषी समाज में शिक्षा के प्रसार का उत्साह पुनः उत्पन्न हुआ तो संयुक्त राज्य तथा ग्रेट ब्रिटेन ने भिन्न-भिन्न मार्ग अपनाए। इससे बढ़कर स्वाभाविक बात और क्या हो सकती थी कि संयुक्तराज्य के तेरह प्रभुत्तासम्पन्न राज्य इसकी सीमा के अन्तर्गत पहले से विद्यमान कालेज या कालेजों का पुनःसंगठन करके या डिग्री देने वाले कालेजों की स्थापना करके इसकी सत्ता स्वीकार करें। यहाँ 1780 तथा 1836 के बीच लगभग 80 कालेजों तथा विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई तथा इनको राज्य-विधान मंडलों द्वारा अपने छात्रों को स्नातक की उपाधि देने का अधिकार दिया गया। इनमें से अधिकाँश स्वतंत्र संस्थाएँ थीं, तथा कुछ धार्मिक संस्थाएँ थीं। किन्तु इनमें से कुछ राज्यविश्वविद्यालय थे। ये अंग्रेजी भाषी जगत में नई प्रकार की संस्थाएँ थीं। ठीक उसी समय ग्रेट बिटेन में केवलमात्र एक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। वह था—लन्दन विश्वविद्यालय। उन्नीसवीं शताब्दी में आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड के विकास में जिसके समकक्ष केवल स्काट विश्वविद्यालय है। लन्दन विश्वविद्यालय की स्थापना बहुत कुछ आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज के आधार पर हुई।

उक्त दोनों प्राचीन अंग्रेजी व्रिश्वविद्यालय लगातार दो शताब्दियों तक उच्च शिक्षा से अपना सामूहिक नियन्त्रण हटाने के प्रत्येक प्रयत्न का विरोध करते रहे। बीच में क्राम्बेल का शासन आ जाने से भी इस विरोध में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्यूरिटन उपकुलपति ने डरहम (Durham) में नया विश्वविद्यालय स्थापित करने का उतना ही विरोध किया जितना उसके बहुत बाद के उत्तराधिकारी ने लन्दन विश्वविद्यालय की स्थापना का।

जब अन्त में 1836 ई० में एक दशक के आन्दोलन के पश्चात् ब्रिटिश साम्राज्य की राजधानी में एक उपाधि-दात्री संस्था का जन्म हुआ तो उसके परीक्षा-विधान पर अधिक बल दिया गया। एक पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष संस्था यूनिवर्सिटी कालेज जिसकी स्थापना 1827 में हुई थी तथा इंगलैंड के राजधर्म (Church of England) से सम्बद्ध किंग्स कालेज जिसका जन्म कुछ वर्षों बाद हुआ, लन्दन विश्वविद्यालय के अंग बने। इसकी घोषणा के अनुसार विश्वविद्यालय सिनेट को, न कि इन कालेजों के अध्यापन निकायों को अपेक्षित परीक्षण के आधार पर उपाधि प्रदान करने का अधिकार था।

यहाँ एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त स्थापित हुआ या यों कहिए कि पूर्वस्थापित सिद्धान्त की पुष्टि की गई (यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसकी स्थापना के पहले की दो शताब्दियों के इतिहास का अध्ययन किस दृष्टि से करते हैं)। इस सिद्धान्त के अनुसार इंगलैंड में दी जाने वाली उपाधियों को, जहाँ तक हो सके, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज द्वारा निर्धारित स्तर के अनुरूप होना चाहिए। यह उपाधि ऐसे छात्र को नहीं प्रदान की जा सकती जिसमें उच्च उपाधियों के लिए योग्यता न हो। यहाँ इसका अमरीकी व्यवस्था से असादृश्य स्पष्ट है। उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैंड तथा ब्रिटिश राष्ट्रमंडल का प्रत्येक विश्वविद्यालय वृत्तिक शिक्षा का केन्द्र था तथा उपाधियों के उच्चस्तर पर विशेष दृष्टि रखता था।

स्मरण रहे कि उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक आक्सफोर्ड तथा कैम्बिज कुछ लोगों के लिए सीमित संस्थाएँ थीं तथा 'पुनर्गठित' नहीं थीं। 1850 से लेकर 1870 तक राजकीय जाँच आयोग (Royal Commission of inquiry) तथा आने वाली संसदीय व्यवस्थाएँ (Parliamentry legislation) धीरे-धीरे इन प्राचीन संस्थाओं को नया रूप देने का प्रयास करते रहे। किन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम बीस वर्षों तक एक सचेत जनमत की दृष्टि में ये दोनों प्रमुख आधुनिक विश्वविद्यालय की कोटि में नहीं आते थे। अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूलों' के कुछ ही बच्चे इन विश्वविद्यालयों में प्रवेश लेते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूल' आवश्यक विश्वविद्यालय शिक्षा की पूर्व पीठिका नहीं थे। बल्कि, आधुनिक अर्थों में ये सावधिक शिक्षा (Terminal education) प्रदान करते थे। उनको तो ऐसे तरुणों को शिक्षित

करना था जिन्हें आगे चलकर व्यापार, उद्योग-धन्धों तथा जनकार्यों में भाग लेना था। 'पब्लिक स्कूलों' के इस उद्देश्य की यह लहर उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों, विशेषतः आस्ट्रेलिया में पहुँची।

इस शताब्दी में अमरीकी कालेजों का विस्तार

संयुक्तराज्य में इतिहास की दिशा बिलकुल भिन्न थी। जैसे-जैसे उन्नीसवीं शताब्दी आगे बढ़ी, वैसे-वैसे उपाधि-दाता कालेज जन-जीवन तथा वाणिज्य के हर क्षेत्र के लिए नेता तैयार करने के मान्य माध्यम बनने लगे। पाठ्यचर्या में नए प्रयोग करने पर कोई नियन्त्रण नहीं था। शिक्षा सम्बन्धी मौलिक विचार, जिन पर इंगलैंड में विचार-विमर्श मात्र होता था नए गणतन्त्र में शुरू किए जा सकते थे। वर्जीनिया में विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए टामस जैफर्सन (Thomas Jefferson) का प्रस्ताव इस बात का स्पष्ट निदर्शन है। वर्जिनिया की इस योजना का प्रभाव लन्दन में परिलक्षित होने लग गया था। लन्दन के धर्मसुधार वादियों ने वर्जिनिया विश्वविद्यालय के लिए स्थापित आयोग के सदस्यों को 1818 की राकफिश गैप रिपोर्ट (Rockfish gap report) को पढ़ा और इसकी पाठ्यचर्या के क्रान्तिकारी विस्तार का खुले हृदय से स्वागत किया। परन्तु वस्तुतः विश्वविद्यालय की स्थापना और उसे उपाधि देने का अधिकार देने के बाद भी लन्दन विश्वविद्यालय गम्भीर अध्ययन की पुरातनवादी प्रणाली के पक्ष में ही था।

संयुक्तराज्य में कालेजों की वृद्धि तथा नियन्त्रण के अभाव ने नए विचारों को प्रश्रय तो दिया किन्तु उच्चस्तर बनाए रखने में सफल नहीं हुआ। उच्च शिक्षा प्रदान करने तथा गण्यमान्य विद्वानों को आकृष्ट करने के लिए महान् प्रयत्नों के बावजूद भी, 1950 का अमरीकी कालेज वस्तुतः, बौद्धिक व्यापार में ब्रिटिश 'पब्लिक स्कूल' से बहुत भिन्न नहीं था और वह बहुत कुछ उसी उद्देश्य की पूर्ति करता था। लेकिन इन दोनों में दो अत्यन्त उल्लेखनीय अन्तर हैं जो एक लम्बे इतिहास के परिणाम हैं। अमरीकी कालेज ए० बी० की उपाधि प्रदान करता था। और आमतौर से इसका अध्ययन काल चार साल हुआ करता था। लेकिन अमरीकी कालेज के विद्यार्थी की औपचारिक शिक्षा में अपने समकक्ष पब्लिक स्कूल की शिक्षा समाप्त करने वाले ब्रिटिश विद्यार्थी की अपेक्षा चार वर्ष का

लम्बा समय अधिक लगाना कोई आवश्यक नहीं था, क्योंकि आज से सौ वर्ष पूर्व अमरीकी कालेज में छात्र अब से कम आयु में ही प्रविष्ट हो जाया करते थे। लेकिन संयुक्तराज्य के शिक्षित वर्ग के हृदय में बारह वर्ष के स्कूल की शिक्षा के उपरान्त चार वर्ष के पाठ्यक्रम के प्रमाण के रूप में स्नातक की उपाधि का विचार घर कर गया था।

इस शताब्दी के अन्तिम दशक तक कालेज जाना लोगों का व्यसन बन गया था। उपाधिदात्री संस्थाओं की संख्या अब कई सौ तक पहुँच गई थी। वे वृत्तिक संस्थाएँ नहीं थीं अपितु ऐसी संस्थाएँ थीं, जो अपने विद्यार्थियों को अवृत्तिक कार्यों के लिए तैयार करती थीं। उनकी पाठ्यचर्या, विद्यार्थी जीवन का संगठन तथा शिक्षण पद्धति अमरीका के सौ वर्ष के अनुभवों के परिणाम थे। अमरीकी कालेज एक नए प्रकार की शिक्षण-संस्था का स्थायीरूप प्राप्त कर चुका था। अमरीकी कालेज विश्वविद्यालय कहलाता रहा हो या नहीं, 1890 तक, वह उस महान् आवश्यकता की पूर्ति भी कर रहा था और जन्म भी दे रहा था जिसे उस समय उदार शिक्षा (Liberal Education) कहा करते थे और आज जो सामान्य शिक्षा (General Education) कहलाता है। इस आवश्यकता का प्रभाव शीघ्र ही न केवल बढ़ते हुए कालेजों, अपितु माध्यमिक स्कूलों पर भी पड़ा।

अमरीकी स्कूलों और कालेजों का विश्लेषण करते समय हमें वे तीन बातें ध्यान में रखनी होंगी जो गत शताब्दी के अन्तिम दिनों में विद्यमान थीं। पहली तो उत्तरोत्तर बढ़ती हुई धारणा कि एक कालेज को औपचारिक शिक्षा प्रदान के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ करना होता है। खेलकूद, संघभाव तथा पाठ्यचर्यातिरिक्त जीवन की भावना उन स्नातकों के हृदय में ज़ोर पकड़ती जा रही थी, जिनको, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक, कालेज शिक्षा समाप्त किये हुए 25 वर्ष हो चुके थे। दूसरी बात यह कि उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत से निर्धन लड़कों ने अपने किसी रिश्तेदार से थोड़ा-सा ऋण लेकर तथा गर्मियों में मोटे काम करके अमरीकी कालेज में शिक्षा प्राप्त की थी। संयुक्त-राज्य में 1900 में कालेज जीवन में काम करना कोई लज्जा की बात नहीं थी, बल्कि यह बड़े गौरव का विषय था। शिक्षा की वित्तव्यवस्था का ऐसा उदाहरण, संभवतः स्काटलैंड को छोड़कर, ब्रिटिश साम्राज्य में और कहीं भी

नहीं मिलता। यहाँ तक कि इस शताब्दी में भी ब्रिटिश राष्ट्रों में पारिश्रमिक सम्बन्धी कार्यों से शिक्षा का सम्बन्ध अमरीका की अपेक्षा भिन्न है।

यों तो तीसरी बात का सीधा प्रभाव अमरीकी कालेज पर नहीं बलिक अमरीकी विश्वविद्यालयों पर पड़ा, किन्तु इसका सामान्य प्रभाव समूची शिक्षा प्रणाली पर पड़ा। यहाँ मेरा अभिप्राय 1862 के मोरिल एक्ट (Moril Act) तथा बाद के काँग्रेस के एक्टों से है जिनके कारण भूमि सहायता से चलने वाले कालेजों की स्थापना हो सकी। यहाँ संघीय सरकार ने उच्च शिक्षा के लिए धन प्रदान करने का क़दम उठाया। विभिन्न राज्य आर्थिक सहायताओं को कृषि तथा मिशनरी आर्टस कालेजों पर विभिन्नरूपों में खर्च करने लगे। कुछ लोगों ने नए कालेजों की स्थापना की जो राज्य विश्वविद्यालयों से होड़ लेने लगे। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने उस धन को राज्य विश्वविद्यालयों के संवर्धन में लगाना शुरू कर दिया। रास्ता कुछ भी अपनाया गया हो, इस शताब्दी के अन्तिम तीन दशकों में व्यावहारिक उच्चत्तर शिक्षा विभिन्नरूपों में प्राप्त करने के लिए बहुत अवसर प्रदान किए जाने लगे। इन सारी बातों का प्रभाव अधिकाधिक तरुणों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने के आन्दोलन पर पड़ा।

यन्त्रकला तथा कृषि विज्ञान पढ़ाने के लिए कालेजों की स्थापना करने के लिए ऐसे निःशुल्क स्कूल भी खोलने पड़े जो लड़कों तथा लड़कियों को इन कालेजों के लिए तैयार कर सकें। बीसवीं शताब्दी का प्रारम्भ होते ही मुख्यतः अमरीका के पश्चिमी भाग के मध्य में इस प्रकार के शिक्षा प्रसार ने बड़ा महत्त्व प्राप्त किया।

मैं यहाँ अपने महान् भौगोलिक गतिशीलता तथा तीव्रगामी सामाजिक ढाँचे के कारण संयुक्तराज्य तथा अपने स्थिर समाज के कारण ग्रेट ब्रिटेन के स्पष्ट भेद पर प्रकाश डालना नहीं चाहूँगा। ना ही मैं संयुक्तराज्य की 1830 से काम करने वाली समानता की भावना पर ही यहाँ ज़ोर देने की आवश्यकता समझता हूँ। यों अमरीकी शिक्षा के प्रसार में इन दोनों का बड़ा महत्त्व है। जहाँ तक समानता के सिद्धान्त का प्रश्न है, मैं यहाँ डी टोकवील (De Tocqueville) की डेमोक्रैसी इन अमेरिका (Democracy in America) का एक उद्धरण प्रस्तुत करूँगा। संयुक्तराज्य के विषय में विचार प्रकट करते हुए वह लिखते हैं—

"उस देश में सभ्य आदमी को समाज का नव निर्माण करने के लिए नया क़दम उठाना था। वहाँ यह एक अभूतपूर्व घटना थी कि अब तक जिन सिद्धान्तों का ज्ञान तक नहीं था अथवा जो अव्यावहारिक माने जाते थे, उन्होंने ऐसा दृश्य उपस्थित किया जिसकी अतीत के इतिहास में चर्चा तक नहीं की थी।"

कुछ पृष्ठों के बाद वह फिर लिखते हैं, "उस समय के अमरीकी समाज की स्थिति में एक अत्यन्त असाधारण प्रवृति दृष्टिगोचर होती है। वहाँ के लोगों में बौद्धिक तथा आर्थिक समानता है या यों कहें कि उन लोगों में शक्ति की दृष्टि से संसार के अन्य देशों के लोगों की अपेक्षा अथवा इतिहास की पहुँच के अन्तर्गत अन्य किसी युग के लोगों की अपेक्षा, अधिक समानता है।"

उसी पुस्तक के प्रारम्भिक भाग में वह दृढ़तापूर्वक कहते हैं, "अस्तु, समानता की भावना का क्रमिक विकास एक पारलौकिक सत्य है, और इसमें दैवी चमत्कार के सभी गुण विद्यमान हैं : यह सार्वभौमिक है, शाश्वत है तथा मानव हस्तक्षेप से सर्वथा परे है। इसकी प्रगति में सभी मानवों तथा घटनाओं का योग है...। यह कहना कठिन है कि हम किस मार्ग पर चल रहे हैं; क्योंकि आज तुलनात्मक दृष्टि का सर्वथा अभाव है। समानता की स्थिति जितनी आज के ईसाई देशों में है उतनी कभी भी विश्व के किसी कोने में नहीं थी। अतएव जो कुछ आज हम देख रहे हैं उसके कारण आगे क्या होगा, यह कहना कठिन है।"

कालेज-शिक्षा की सुविधाओं का विस्तार

समानता तथा व्यय वहन करने में समर्थ प्रत्येक व्यक्ति के लिए कालेजीय उपाधि का द्वार खोलने वाली पूर्णकालिक शिक्षा की वांछनीयता के विश्वास ने अमरीकी शिक्षा पद्धति को जन्म दिया। सीधे-सीधे हम यों कह सकते हैं; अगर ब्रिटिश 'पब्लिक स्कूल' या अमरीकी कालेज की शिक्षा उन लोगों के लिए भी 'अच्छी वस्तु' है जिन्हें विश्वविद्यालय अध्यापन-कार्य नहीं करना है तो फिर यह सब के लिए अच्छी बात क्यों नहीं ? यह सवाल प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संयुक्त राज्य की जनता द्वारा तथा पिछले 30 वर्षों में ग्रेट ब्रिटेन और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल में बार-बार उठाया गया है। यह बात ध्यान में रहे कि यह प्रश्न उस प्रश्न से नितान्त भिन्न है जिसके उत्तर में जैफर्सन (Jefferson)

ने 'प्रतिभा तथा योग्यता के सहज आभिजात्य को पृथक् करने की बात' कही थी। वह इस प्रश्न का उत्तर दे रहे थे : जनता के व्यय पर विशिष्ट तथा दीर्घकालीन शिक्षा किसे दी जाय ? उनका उत्तर है, 'केवल उन लोगों को जो प्रतिभावान तथा योग्य हैं।' किन्तु इसके विपरीत ग्रेट ब्रिटेन में बहुत बड़ी संख्या में शासक वर्ग के बच्चे तथा संयुक्तराज्य के धनी परिवारों के बच्चे 'पब्लिक स्कूलों' या कालेजों में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे चाहे वे प्रतिभा सम्पन्न अथवा योग्य रहे हों अथवा न रहे हों।

उक्त प्रश्न का उत्तर इंगलैंड के 1944 के शिक्षा अधिनियम (Education Act of 1944) में वस्तुतः इस प्रकार दिया गया है : जनता के धन पर विश्वविद्यालय तक या विश्वविद्यालय के माध्यम से पूर्णकालिक शिक्षा केवल प्रतिभावान तरुणों को देनी चाहिए कि इसके अतिरिक्त अन्य तरुणवर्ग को 16 वर्ष की आयु में स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के बाद अंशकालिक व्यावसायिक शिक्षा देनी चाहिए। ब्रिटिश व्यवस्था उसी राष्ट्र में लागू की जा सकती है जहाँ की उपाधिदात्री संस्थाएँ अत्यन्त चयनात्मक हों तथा जो मुख्यतया वृत्तिक शिक्षा पर ज़ोर देती हों। किन्तु संयुक्तराज्य में दुर्भाग्य से, हम लोगों ने यह धारणा बना ली है कि कालेज शिक्षा हर व्यक्ति के लिए 'अच्छी वस्तु' है। इसमें एक अड़चन आती है। वह है खर्च की। पर कालेज जीवन के साथ ही साथ जीविका कमाने की छूट की व्यवस्था के कारण यह बाधा भी स्वतः समाप्त हो गई है। चूंकि अमरीका के इतने सारे कालेजों में से किसी में भी शैक्षिक स्तर में एकरूपता नहीं थी तथा इनमें बौद्धिक पहलू पर अधिक बल नहीं दिया जाता था अतः अमरीकी लोग यह दावा हरगिज़ नहीं कर सकते थे कि उनके कालेज चयनात्मक हैं। जहाँ तक शिक्षा के स्तर में एकरूपता के अभाव का प्रश्न है मैं शैक्षिक परीक्षण सेवा (Educational Testing Service) के अध्यक्ष हेनरी चान्सी (Henry Chauncey) के विचार यहाँ उद्धृत करता हूँ जिन्होंने कुछ दिनों पूर्व की चयनात्मक सेवा के परीक्षण पर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा था 'जो छात्र एक संस्था में कुछ निम्न स्तर का है वह दूसरी संस्था के उस छात्र का योग्यता तथा शैक्षिक व्यापारों में पूरा मुकाबला कर सकता है जो वहाँ कुछ उच्चस्तर का माना जाता है।'

जैसे-जैसे बीसवीं शताब्दी आगे बढ़ी वैसे-वैसे संयुक्तराज्य में कालेज शिक्षा अच्छे नागरिक तैयार करने के लिए उपयुक्त साधन मानी जाने लगी। यह वृत्तिक प्रशिक्षण से सर्वथा भिन्न थी क्योंकि वह तो विश्वविद्यालय शिक्षा का अंग था। क़ानून, चिकित्सा, विज्ञान, धर्मशास्त्र तथा धीरे-धीरे इंजीनियरिंग को छोड़कर सभी विज्ञान स्नातकोत्तर विषय बनने लग गए। इन सभी बातों के परिणामस्वरूप स्कूलों और कालेजों में विभिन्न नए विषयों के पढ़ाये जाने की उत्तरोत्तर माँग आने लगी। सामान्य शिक्षा—'नागरिकता की शिक्षा' के अभियान का प्रभाव कालेजों पर उतना नहीं पड़ा जितना स्कूलों पर। इसी आधार पर हाई स्कूलों के विस्तार तथा उनमें परिवर्तन होने लगे। पचास वर्षों से भी कम समय में अमरीका की पूर्णकालिक शिक्षा प्रणाली, जो कभी आस्ट्रेलिया की आधुनिक शिक्षा प्रणाली के समान थी, पूर्णतया बदल गई।

ब्रिटिश राष्ट्रों में स्कूलों का विश्वविद्यालयों से सम्बन्ध

यहाँ मैं पाठक का ध्यान एण्टीपोड्स (Antipodes) की शिक्षा की ओर आकृष्ट करूँगा क्योंकि मेरा विश्वास है कि आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की शिक्षा के क्षेत्र में जो बातें हुई हैं और विशेष रूप में इस क्षेत्र में जो परिवर्तन हुए हैं उनसे आज संयुक्तराज्य के शिक्षा जगत की समस्याओं पर यथेष्ठ प्रकाश पड़ जाता है।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, आस्ट्रेलिया में इस शताब्दी के दूसरे दशक तक कर-पोषित माध्यमिक स्कूल किसी भी रूप में स्थापित नहीं हुए। जो लोग व्यय वहन करने में समर्थ थे उनको माध्यमिक शिक्षा प्राइवेट स्कूलों द्वारा प्रदान की जाती थी। आज से पचास वर्ष पूर्व आस्ट्रेलिया तथा पूरे ब्रिटिश साम्राज्य में 10 या 11 वर्ष तक के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। इसके बाद, कुछ ऐसे लोगों को छोड़कर जो प्राइवेट स्कूल का व्यय वहन कर सकते थे, शिक्षा बहुत कुछ रुचि पर निर्भर करती थी। अत्यन्त मेधावी बालक या बालिकाएँ प्राइवेट स्कूल में छात्रवृत्ति प्राप्त करके विश्व-विद्यालय के लिए तैयारी कर सकते थे। शिक्षा सम्बन्धी और अधिक सुविधाओं की माँग का पहला उत्तर तो यह था कि छात्रों को छात्रवृत्तियाँ या सशुल्क स्कूलों में निःशुल्क स्थान' दिलवाये जाएँ (इंगलैंड में पुराने ग्रामर

स्कूल प्रायः इस उद्देश्य की पूर्ति किया करते थे।) दूसरा उत्तर, जो इंगलैंड की अपेक्षा आस्ट्रेलिया में पहले सामने आया, यह था कि उच्चत्तर माध्यमिक स्कूलों की शिक्षा निःशुल्क कर दी जाय तथा उनमें पूर्व विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाय किन्तु उनमें प्रवेश पाने के लिए बौद्धिक स्तर का सख्त ध्यान रखा जाय। तीसरा उत्तर यह था कि इन 'विद्योचित' निःशुल्क माध्यमिक स्कूलों के अतिरिक्त उन किशोरों के लिए कुछ दूसरे ढंग के स्कूल भी खोले जाएँ जिनका विचार 14 वर्ष की आयु में स्कूल छोड़ देने का है। चौथा उत्तर, जो न्यूजीलैंड तथा कुछ अंशों में कुछ आस्ट्रेलियाई राज्यों में दिया गया, यह है कि माध्यमिक स्कूलों के लिए कुछ ऐसी पाठ्यचर्या का श्रीगणेश किया जाय जिसमें व्यापकता अधिक हो परम्परावादिता कम। इस प्रकार की पाठ्यचर्या के महत्त्व के सम्बन्ध में हमने पिछले अध्याय में न्यूज़ीलैंड के शिक्षा मन्त्री के विचार प्रस्तुत किए थे।

न्यूज़ीलैंड के विद्योचित हाई स्कूलों (Academic High Schools) की पाठ्यचर्या के आधुनिकीकरण (या कुछ लोगों के विचार में 'अमरीकीकरण') का पहला क़दम तो न्यूज़ीलैंड विश्वविद्यालय को अपनी प्रवेश-योग्यताओं को बदलने के लिए तैयार करने का था। बात यह है कि न्यूज़ीलैंड तथा आस्ट्रेलिया में अभी हाल तक स्कूलों की पाठ्यचर्या का निर्धारण कुछ राज्य परीक्षाओं के आधार पर हुआ करता था।

वस्तुतः सभी आस्ट्रेलियाई राज्यों में और लगभग एक दशक पूर्व तक न्यूजीलैण्ड में भी, प्राइवेट तथा करपोषित दोनों प्रकार के स्कूलों पर विश्वविद्यालयों का कठोर नियन्त्रण था। यद्यपि प्राइवेट स्कूलों के केवल आधे विद्यार्थी ही विश्वविद्यालय जाते हैं। फिर भी इन स्कूलों की पाठ्यचर्या अधिकाँशतः उस राज्य के विश्वविद्यालय की प्रवेश-योग्यताओं के आधार पर निर्धारित की जाती है जिसमें वह स्कूल स्थित है। (आस्ट्रेलिया में प्रायः छात्र विश्वविद्यालय शिक्षा प्राप्त करने के लिए राज्य सीमा के बाहर नहीं जाता और कुछ वर्ष पहले तक प्रत्येक राज्य में केवल एक ही विश्वविद्यालय था।) इसके अतिरिक्त, व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को भी अपने शिक्षाकाल में क़दम-क़दम पर प्रत्येक राज्य के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा निर्धारित परीक्षाएँ (बाह्य परीक्षाएँ) पास करनी होती हैं।

दरअसल, मैंने अपने कुछ आस्ट्रेलियाई मित्रों के सामने यह बात रखी थी कि उनकी शिक्षा प्रणाली परीक्षापरक (Exmination ridden) तथा प्रमाण-पत्रमूलक (Certificate bedeviled) है, इस पर मुझे यह उत्तर मिला कि इसका आधार ब्रिटिश-परम्परा है। प्रमाणित शिक्षात्मक अनुभव की आवश्यकता तब से प्रतीत हुई जब से मेकाले (Macaulay) ने भारतीय असैनिक सेवा (Indian Civil Service) के लिए प्रतियोगितात्मक परीक्षा (Competitive Examination) का सूत्रपात किया तथा लन्दन विश्वविद्यालय को इसके संचा-लन का भार सौंपा गया। आस्ट्रेलिया मे नियोक्ता लोग नियुक्ति के लिए स्कूल का 'स्थानान्तरण प्रमाणपत्र' चाहते हैं। यह या इसका समकक्ष प्रमाणपत्र तभी दिया जाता है जब विद्यार्थी बाह्य परीक्षा अर्थात् राज्य के शिक्षाबोर्ड द्वारा निर्धारित परीक्षा जिसमें विश्वविद्यालय का पूरा हाथ रहता है, पास कर लेता है।

बाह्य परीक्षाओं (External Examinations) का प्रभाव प्राइवेट स्कूलों चाहे वे कैथोलिक हों या प्रोटेस्टेण्ट तथा करपोषित स्कूलों पर भी अवश्य पड़ता है। (दक्षिणी आस्ट्रेलिया में इस प्रकार की चार परी-क्षाएँ हैं। ये चार परीक्षाएँ क्रमशः 14, 15, 16, 17 वर्ष की आयु में होती हैं। इनमें से अन्तिम परीक्षा में केवल वे छात्र प्रविष्ट होते हैं जिन्हें विश्वविद्यालय जाना होता है।) विश्वविद्यालय के सन्दर्भ में माध्यमिक स्कूलों की पाठ्यचर्या को लेकर बहुत कुछ कहना है। वस्तुतः विश्वविद्यालय जाने की इच्छा रखने वाले छात्रों के लिए अंग्रेजी, एक या दो विदेशी भाषाओं, बीजगणित, भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान की कठोर पाठ्यचर्या होनी चाहिए। यदि विश्वविद्यालय को उच्चस्तरीय वृत्तिक संकायों (Faculties) का समूह मानें तो इस बात पर बल देना उचित प्रतीत हो सकता है कि विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने वाले सभी छात्र एक ही प्रकार की वृत्तिक शिक्षा ग्रहण करें। चूँकि आस्ट्रेलिया के प्रत्येक राज्य के करपोषित स्कूल शिक्षा मन्त्रालय द्वारा संचालित दृढ़ शिक्षा प्रणाली का अनुसरण कर रहे हैं, अतः वहाँ उक्त व्यवस्था लागू करने के लिए परिस्थितियाँ कुछ अनुकूल-सी रही हैं।

विश्वविद्यालय-अध्यापन की दृष्टि से आदर्श प्रतीत होने वाली प्रणाली,

प्रायः समाप्त होती जा रही है, या यों कहिए इसे आधुनिक रूप दिया जा रहा है। न्यूजीलैण्ड ने तो पराकाष्ठा ही कर दी। वहाँ एक सामान्य पाठ्यक्रम प्रचलित किया गया। भाषाओं पर से आग्रह कम कर दिया गया। विज्ञान के अध्ययन में 'प्रथम वर्ष' में रसायन विज्ञान तथा भौतिक-विज्ञान के ज्ञान की औपचारिकता भी घटा दी गई। पर, जैसा कि आशंका थी, इससे स्कूलों के छात्रों को स्नातक परीक्षा तक रोके रखने की शक्ति प्रभावित हुए बिना नहीं रही। लेकिन इन परिवर्तनों के लाने में न्यूजीलैण्ड विश्वविद्यालय को इसके लिए तैयार करना पड़ा है कि वह स्कूलों के इस नियम में परिवर्तन करवा दे कि विश्वविद्यालय में उन्हीं छात्रों को प्रवेश मिलेगा जिन्हें वे अनुमति देंगे। बाह्य परीक्षकों की शक्ति व्यावहारिक रूप से समाप्त कर दी गई।

परीक्षा और पाठ्यचर्या में परिवर्तन तो न्यू साउथ वेल्स में भी हुए; पर न्यूजीलैण्ड जैसे कठोर नहीं। स्कूलों तथा विश्वविद्यालय के सम्बन्धों में कोई मौलिक परिवर्तन नहीं हुआ। जैसे-जैसे पाठ्यचर्या का विस्तार हुआ वैसे-वैसे उन विषयों की संख्या भी बढ़ती गई जिनमें विश्वविद्यालय जाने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थी की परीक्षा लेनी होती थी। यह बात अपरिहार्य थी, क्योंकि यदि स्कूल-पाठ्यचर्या में इतिहास, भूगोल, सामाजिक विज्ञान, संगीत, कला तथा सिलाई (बालिकाओं के लिए) को स्थान देना है तो परीक्षा का प्रलोभन रखना ही होगा। कुछ भी हो, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक अब सभी विद्यार्थियों से एक-जैसी तैयारी की आशा नहीं कर सकते। परन्तु अमरीकी दृष्टि से वे सभी 'पूरे तैयार' हैं। न्यू साउथ वेल्स में पाठ्यचर्या के आधुनिकीकरण के उपरान्त भी 15-16 वर्ष के आयु वर्ग का एक चौथाई विद्यार्थी दो विदेशी भाषाएँ तथा शेष में से 10 या 12 प्रतिशत विद्यार्थी एक विदेशी भाषा पढ़ता रहा।

वफेलो के चान्सलर मैकोनेल (Chancellor Mc Connell of Buffalo) इंगलैंड में सामान्य शिक्षा के वितरण में विश्वविद्यालयों में अति विशेषीकरण पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं : "और इंगलैंड में······धीरे-धीरे वृत्तिकता ग्रामर स्कूलों में समाती जा रही है।" किन्तु वह यह जानना चाहते हैं कि इस तथ्य का उस प्रचलित धारणा से सामंजस्य कैसे हो कि अंग्रेजी विश्वविद्यालयों के स्नातक 'विस्तृत तथा गम्भीर ज्ञान वाले' होते हैं। इस विरोधाभास का समाधान उनको अधिकांश छात्रों, उनके पारिवारिक वातावरण में रहने पर मिला है

जिनकी संख्या अब तक विश्वविद्यालयों में अधिक रही है। मैं इस विषय में उनके साथ पूर्णतया सहमत हूँ, पर मैं कैम्ब्रिज तथा आक्सफोर्ड के आवासिक स्वरूप के महत्त्व पर कुछ अधिक ज़ोर देना चाहूँगा। बात यह है कि इन कालेजों ने उन्नीसवीं शताब्दी तथा बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में जो कुछ एक वर्ग के छात्रों के लिए किया वही कालान्तर में एक योग्य भद्रपुरुष के लिए मानदण्ड बन गया। किन्तु मुझे तथा कुछ अंग्रेज शिक्षकों को भी सन्देह है कि क्या भविष्य में इस प्रकार की असामान्य तथा अत्यधिक खर्चीली प्रणाली चलती रह सकती है? सामान्य शिक्षा के लिए 'कालेजीय स्तर' पर आधृत कुछ कम खर्चीले साधन की व्यवस्था करना ही अमरीकी सीनियर हाई स्कूलों तथा बहुत-से कालेजों का उद्देश्य है। इस सम्बन्ध में मैं अपने ही विचार उद्धृत करना चाहूँगा।

"संयुक्तराज्य के कालेज अध्यापकों में सामान्य शिक्षा के महत्त्व के विषय में विश्वास··· नया है पर प्रचलित बहुत है (यद्यपि इस लक्ष्य की प्राप्ति के ढंग के विषय में काफी मतभेद है।) फिर भी यह याद रखना उचित होगा कि केवल उत्तरी अमरीका के अंग्रेजी भाषी समाज में यह धारणा प्रचलित है कि भावी राजनीतिज्ञों, वकीलों, सामाजिक वैज्ञानिकों या मानवशास्त्रियों के लिए 18 साल की आयु के बाद प्राकृतिक विज्ञानों का कुछ औपचारिक ज्ञान वाछंनीय है। इसी प्रकार संयुक्तराज्य तथा कनाडा को छोड़कर भविष्य में वैज्ञानिक, इंजीनियर या डाक्टर बनने वालों में से विरले ही 17 वर्ष की आयु के बाद सामाजिक-विज्ञान अथवा मानवशास्त्र का औपचारिक अध्ययन करते हैं।"

हम लोग अपने देश में विभिन्न प्रकार के कालेज-पाठ्यक्रम चालू करके उस उदार शिक्षा का आधुनिक समरूप ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, जो कभी 'कालेजीय जीवन स्तर' की देन थी तथा औपनिवेशिक काल में सर्वप्रथम कालेजों के प्रस्थापकों की आदर्श थी। जब शिक्षा का अभिप्राय केवल भाषाओं, साहित्य तथा इतिहास का ही ज्ञान था तब कालेज का काम अब की अपेक्षा कुछ आसान था। 'भोजनकालीन शिक्षा' (Education around dinner table) का क्षेत्र उन्नीसवीं शताब्दी में भी अपेक्षाकृत कुछ संकुचित हुआ करता था। इसके अतिरिक्त उस समय विश्वविद्यालयों में अधिकाँश विद्यार्थी बहुशिक्षित परिवारों से आया करते थे। यहाँ तक कि इंगलैंड में भी एक पीढ़ी पहले सम्यक् दान-

विधि पोषित कालेजों आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज भी ऐसे विद्यार्थियों को प्रवेश देते थे जिनके घर पुस्तकों से भरे रहते थे। अस्तु, मुझे सन्देह है कि संसार के किसी भाग में कालेजीय जीवन-पद्धति (उत्कृष्ट, यद्यपि इस प्रकार की जीवन पद्धति केवल बौद्धिक-महत्त्वाकांक्षा के तरुणों के लिए ही उपयुक्त हो सकती है) की युक्ति मात्र सामान्य शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए पर्याप्त है। छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यन्त भिन्न हुआ करती है। आधुनिक विज्ञान तथा विद्वत्ता का भी उसके ऊपर यथेष्ठ प्रभाव पड़ा है। इन दो तथ्यों के कारण उदारशिक्षा की प्राचीन धारणा पर फिर से दृष्टिपात करना आवश्यक हो गया है।

सामान्य शिक्षा को हम छात्रों की पारिवारिक-पृष्ठभूमि में पृथक् नहीं कर सकते। ना ही इसे उनकी व्यावसायिक महत्त्वाकाँक्षाओं से पूर्णतया पृथक् किया जा सकता है। इस तथ्य का हाई स्कूल की आयु तक के युवकों में समान भावना बनाए रखने की इच्छा से सामंजस्य स्थापित करना, वस्तुतः, अमरीकी हाई स्कूलों की एक बलवती समस्या है। इस बात पर मैं अधिक विचार अगले अध्याय में करूँगा। यही समस्या हमारे कालेजों में भी खड़ी होती है।

एक कटु आलोचक की दृष्टि में अमरीकी सामान्य-शिक्षा सुन्दरशास्त्रीय भाषा में आवेष्ठित व्यावसायिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। यह बात निर्विवाद है कि विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य युवकों में विशेष गुणों का विकास करना है। शायद कोई ही ऐसा व्यक्ति हो जो अमरीकी कालेज के कोर्स में फ्लाईकास्टिंग (मक्खियाँ उड़ाकर मछली पकड़ने का एक ढंग) जैसे मामूली विषय को डिग्री का अंग मानना उचित समझे। इसी प्रकार हमारे खेल-कूद की सारी अन्तर्कालेजीय व्यवस्था विदेशी शिक्षा-समीक्षकों की आलोचना का विषय है क्योंकि इसमें गेट-रसीद तथा खिलाड़ियों की भर्ती के नियमों पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। वस्तुस्थिति यह है कि संयुक्तराज्य की विस्तृत तथा अव्यवस्थित तथाकथित 'उच्चत्तर शिक्षा' में कुछ ऐसी बात है जिनकी आप प्रशंसा भी कर सकते हैं आलोचना भी। जहाँ तक शिक्षा संस्थाओं की संख्या तथा विभिन्नता का प्रश्न है शायद ही संसार का कोई ऐसा देश हो जो अमरीका की बराबरी कर सके। फिर भी बहुत सारे मेधावी छात्र अत्यन्त शीघ्र अपनी शिक्षा समाप्त कर देते हैं और बहुत-से अल्पयोग्यता वाले छात्र काफी लम्बे समय तक अपनी शिक्षा जारी रखते हैं। फिर भी, सब कुछ मिलाकर अमरीकी

लोग अमरीकी कालेज के प्रशंसक तथा सामान्य शिक्षा के समर्थक हैं। यह लक्ष्य बहुत-से शिक्षा-शास्त्रियों का है कि कम से कम 18 वर्ष की आयु तक प्रत्येक तरुणा या तरुणी पूर्णकालिक शिक्षा तथा 20 वर्ष के तरुणों का लगभग 50 प्रतिशत किसी न किसी प्रकार की कालेज शिक्षा प्राप्त करे।

पूर्णकालिक सामान्य शिक्षा व्यय वहन करने वाले प्रत्येक युवक के लिए 'अच्छी वस्तु' है, इस धारणा को जब हम 'समान अवसर' वाले सिद्धान्त के साथ जोड़ते हैं तो हमारे पास सिवा इसके और कोई उचित विकल्प नहीं रह जाता कि कालेज-शिक्षा का इतना विस्तार किया जाय जितना अभी तक संयुक्तराज्य में भी नहीं हो पाया। फिर भी इस तर्क की कठिनाइयों का अनुभव परोक्ष रूप से लगभग प्रत्येक व्यक्ति करता है। क्या हमें विश्वास है कि 21 या 22 वर्ष तक की आयु तक की पूर्णकालिक शिक्षा द्वारा हर प्रकार का तरुण लाभान्वित हो सकता है ? जहाँ तक मैं समझता हूँ कालेजों का अभिप्रेत बौद्धिक प्रतिभा का विकास था। तब तो कालेज शिक्षा के लिए व्यय वहन करने वाले युवकों तथा युवतियों में से भी प्रतिभा के आधार पर समुचित चुनाव होना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में सामान्य स्तर के तरुण को कालेज स्तर पर सामान्य शिक्षा देने का प्रयत्न संभवतः, जैफर्सन के अनुसार 'प्रतिभा तथा योग्यता के सहज आभिजात्य' के प्रशिक्षण-नियम के कुछ विपरीत जाता है। कुछ समताग्रही लोग यह तर्क भी उपस्थित कर सकते हैं कि कालेज शिक्षा में यदि चार वर्ष से कुछ कम समय लगे तथा साथ ही साथ कोई अंशकालिक रोजगार भी हो तो जहाँ कुछ गरीब घरों के बच्चों का काम चल सकता है वहीं सम्पन्न घरानों के लड़कों और लड़कियों को सर्वोत्तम शिक्षा मिल सकती है। अतः, आज आवश्यकता इस बात की नहीं कि चार वर्षीय कालेजों या विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि की जाय अपितु ऐसी शिक्षा की है, जो हर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो, उनके माँ-बाप की आमदनी कुछ भी हो। संभवतः अब चार वर्षीय कालेज के शिक्षाधारी वर्ग के विद्यार्थियों के लिए वह विशेष-सुविधा नहीं रही जैसा हम कालेज वाले अब तक सोचते रहे हैं। अगले अध्याय में मैं इन सभी संशयों द्वारा समुत्पन्न प्रश्नों का उत्तर एक साथ देने का प्रयास करूँगा।

3

भावी संभावनाएँ

पिछले दो अध्यायों में मैंने ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल तथा संयुक्तराज्य की शिक्षा पर कुछ अधिक विस्तारपूर्वक विचार करने का प्रयास किया। वस्तुतः, उन दोनों अध्यायों में मेरा उद्देश्य एक आधुनिक प्रजातन्त्र में माध्यमिक स्कूलों के उद्‌गम तथा उनकी वर्तमान कार्यपद्धति का सिंहावलोकन करने का था। मैंने अपने पाठकों से उस सामान्य परम्परा के विविध रूपों पर सोचने को कहा जिसका जन्म लगभग चार सौ वर्ष पूर्व ग्रेटब्रिटेन में हुआ था। विशेष रूप से मैंने पाठक का ध्यान थामस जैफर्सन द्वारा आज के सन्दर्भ में प्रस्तुत शिक्षा सम्बन्धी दो समस्याओं के विभिन्न उत्तरों की ओर आकर्षित किया। पहली तो यह कि एक राष्ट्र 'प्रतिभा तथा गुणों के सहज आभिजात्य' को पृथक् कैसे करे तथा उसको 'जनता के खर्चों पर शिक्षा दिलवाकर जनता के कार्यों के लिए' तैयार करे; और दूसरी यह कि आज 'किस प्रकार की शिक्षा' दी जाय जिससे हमारी स्वतन्त्रता 'जनता के हाथों में' सुरक्षित रह सके।

पिछले अध्यायों में जिन देशों पर विचार किया गया उन सभी देशों में हर बात समान रूप से प्राप्त होती है। वह यह कि पिछले 40, 45 वर्षों में यहाँ किशोरों के लिए करपोषित-शिक्षा का यथेष्ठ विकास हुआ है। इसका बहुत कुछ श्रेय, जहाँ तक में समझता हूँ,अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूलों' (या इसकी समकक्ष संस्थाओं) तथा अमरीकी लिबरल कालेजों की सफलता को दिया जाना चाहिए। साथ ही साथ, 'अवसर की समानता' के सिद्धान्त के प्रति लोगों के बढ़ते हुए विश्वास ने भी इस दिशा में काफी काम किया है। यदि दीर्घकालीन सामान्य शिक्षा सम्पन्न लोगों के लिए आवश्यकता प्रतीत होती है तो प्रश्न यह उठता है कि यह उतनी ही आवश्यक उन लोगों के लिए भी क्यों न समझी जाय जिनके माँ-बाप की आर्थिक स्थिति दुर्भाग्य से उतनी अच्छी नहीं।

इस अध्याय में मेरा विचार अमरीकी स्कूल तथा कालेजों के भविष्य के विकास के सम्बन्ध में कुछ सुझाव रखने का है। इसके पूर्व इस सम्बन्ध में अपने

पूर्वाग्रह को स्पष्ट करने के लिए मैं संक्षेप में अपनी शिक्षा सम्बन्धी मान्यता रखना चाहूँगा; कारण यह है कि कोई कितना भी प्रयत्न करे, शिक्षा के क्षेत्र में पूर्वाग्रह के बिना न तो सच्ची समीक्षा हो सकती है ना ही सच्चा इतिहास लिखा जा सकता है।

मेरे विचार में जिस समता के सिद्धान्त की चर्चा डि टोकवील ने वर्षों पहले की है, संयुक्त राज्य में उसका अभिप्राय वयस्कों की आर्थिक स्थिति की समानता से नहीं अपितु युवकवर्ग के लिए अवसर की समानता से है। इस सिद्धान्त से जहाँ अस्थिर अर्थात् एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बदल जाने वाले सामाजिक ढाँचे का पता चलता है वहीं विभिन्न वर्गों के एक-दूसरे के प्रति पारस्परिक सम्मान की भावना का भी। संक्षेप में, यह सिद्धान्त वर्ग भेद की न्यूनता का परिचायक है। इस शताब्दी में संयुक्तराज्य में माध्यमिक शिक्षा का विस्तीर्ण विकास लोकतन्त्र की अमरीकी विचारधारा को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ है। यदि हम चाहें तो अपने स्कूलों द्वारा प्रतिवर्ष अपने सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में महान् समानता ला सकते हैं; और इस प्रकार, राष्ट्रीय हित के लिए अब तक उपेक्षित युवक वर्ग में से प्रत्येक क्षेत्र के लिए योग्य तथा प्रतिभावान व्यक्ति तैयार कर सकते हैं। साथ ही साथ अपने स्कूल जीवन तथा स्कूलों के संगठन में जनतन्त्रीय तत्वों पर विशेष बल देकर हम व्यक्तिगत स्वामित्व एवं लाभ भावना पर आधृत किन्तु सामाजिक न्याय के आदर्शों से सचेत आर्थिक व्यवस्था के सामंजस्यपूर्ण परिचालन के लिए अपेक्षित सामाजिक तथा राजनीतिक आदर्शों को बढ़ावा दे सकते हैं। हम अपने स्कूलों के प्रबन्ध के बहाने जितना ही अवसर की समानता के लक्ष्य (जिसका प्राप्त करना निश्चय ही असंभव है) के निकट पहुँचते हैं और जितना ही हम अमरीकी लोकतन्त्र के सिद्धान्तों की शिक्षा देते हैं, संयुक्तराज्य में व्यक्ति के बने रहने की संभावना उतनी ही बढ़ जाती है।

कुछ सुझाव

इन्हीं पूर्वाग्रहों के आधार पर मैं संयुक्तराज्य के माध्यमिक स्कूलों तथा कालेजों के भविष्य के प्रश्न पर दृष्टिपात करूँगा। कुछ वर्षों में इस देश में किशोरों की संख्या वर्तमान संख्या से 50 प्रतिशत अधिक हो जायगी। उस समय को दृष्टि

में रखते हुए मेरा सुझाव है कि,

(1) हम अपने चारवर्षीय कालेजों की न तो संख्या बढ़ायें और ना ही उन का विस्तार करें।

(2) हम अपने विश्वविद्यालयों के चारवर्षीय कार्यक्रम का भी विस्तार न करें बल्कि हो सके तो उनको कुछ कम कर दें।

(3) हम द्विवर्षीय कालेज-पाठ्यक्रम (नियमित हाईस्कूल शिक्षा के पश्चात को लोकप्रिय बनाने का प्रयास करें। इस प्रकार के कालेज के स्नातकों को हम इसी आधार पर सामान्य शिक्षा की स्नातक उपाधि दे सकते हैं।

(4) हम इस प्रकार का वातावरण पैदा करने की चेष्टा करें कि 18 वर्ष की आयु के पश्चात की शिक्षा विशेष सम्मान का आधार न समझी जाय।

(5) हम अपने जूनियर तथा सीनियर हाईस्कूलों का विस्तार जारी रखें जिससे कि हमें नए छात्रों को प्रवेश देने में कठिनाई न हो; पर इसके साथ ही बहुत-से स्कूलों की पाठ्यचर्या फिर से तैयार करने की आवश्यकता को भी ध्यान में रखें।

(6) हम सामान्य पाठ्यक्रम तथा अन्य संस्थाओं से भिन्न कुछ विशेष कार्यक्रमों से युक्त व्यापक हाईस्कूल (Comprehensive High Schools) के सिद्धान्त पर अटल रहें, पर इसके साथ ही हम मेधावी युवक को या युवती को पहचानने का भी अधिक प्रयास करें और उसे भाषा तथा गणित में विशुद्ध विद्योचित (Rigorous academic training) शिक्षा दें।

(7) हम 'कार्यानुभव कार्यक्रमों' के आधार पर कुछ हाईस्कूलों के गत वर्षों की सफलता की समीक्षा करें तथा इस कार्यक्रम का विस्तार करें, विशेषतः तेरहवीं और चौदहवीं श्रेणी (द्विवर्षीय कालेज) तक।

(8) हम व्यक्तिगत तथा सरकारी साधनों द्वारा हाई स्कूलों के छात्रों को अधिकाधिक छात्रवृत्ति दिलवाने का प्रयत्न करें। किन्तु छात्रवृत्ति दिलाने में इस बात का ध्यान रहे कि छात्रवृत्ति प्रतिभासम्पन्न तथा योग्य बालक या बालिका को ही मिले (सामान्य स्तर के छात्रों के लिए उच्च शिक्षा स्थानीय रूप से द्विवर्षीय सावधिक कालेजों द्वारा दिलवानी चाहिए।

(9) हम सभी वर्तमान चारवर्षीय कालेजों को उच्च शैक्षिक स्तर की संस्थाओं में परिणत करने का प्रयास करें और पाठ्यचर्या इस दृष्टि से तैयार

करें कि इन कालेजों के अधिकाँश स्नातकों को दो-तीन या चार वर्षों के पश्चात् अपनी व्यक्तिगत योग्यता तथा रुझान के अनुरूप वृत्तिक प्रशिक्षण अवश्य पाना है।

(10) हम हर स्तर के व्यक्ति अर्थात् भावी मजदूर, सैल्समैन या अफसर और विश्वविद्यालय के अत्यन्त मेधावी स्नातक के लिए सामान्य शिक्षा की योजना चलाते रहें।

इन दस सुझावों को लेकर मैं उन विश्वविद्यालयों तथा कालेजों के संकाय सदस्यों के समक्ष अपने विचार रखना चाहता हूँ जिन्होंने अपना उच्चस्तर बना रखा है। अब आप हाथ मलना तथा माध्यमिक स्कूलों के छात्रों की तैयारी की कमी का रोना-धोना बन्द कर दें। अब आवश्यकता इस बात की है कि आप स्कूल के अधिकारियों तथा शिक्षकों को अपना सहयोग दें; इस प्रकार आप उनकी समस्याओं से कुछ परिचित होंगे। इसके अतिरिक्त आज से चालीस साल पहले प्रचलित, मेधावी बालक या बालिका को हाईस्कूछ में भाषाएँ, विज्ञान तथा गणित पढ़ने के लिए तैयार करने की दृष्टि से कुछ आकर्षण उत्पन्न करने की प्रथा को फिर चलाने पर विचार कीजिए। उदाहरणार्थ इन विषयों में योग्य छात्रों के लिए कालेज का पाठ्यक्रम कुछ कम कर दिया जाय या चारवर्षीय कार्यक्रम में अध्ययन का भार कुछ हल्का कर दिया जाय।

इन सुझावों से इस बात का बहुत कुछ आभास मिल जाता है कि संयुक्त-राज्य की शिक्षा प्रणाली में अन्ततः कुछ परिवर्तन अवश्य होंगे। यदि परिवर्तन हुए तो माध्यमिक स्कूल जाने वाले 14 से लेकर 18 वर्ष तक के आयु वर्ग के तथा 18 से लेकर 20 तक की आयु के द्विवर्षीय स्थानीय कालेजों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ जायगी। किन्तु चारवर्षीय लिबरल आर्टस कालेज तथा चारवर्षीय विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम का अनुसरण करने वाले छात्रों की संख्या कम से कम आधी रह जायगी। एक बात ध्यान में रखें; परिवर्तन के सुझाव से मेरा अभिप्राय यह नहीं कि आप चारवर्षीय कालेजों के वर्तमान आकार या संख्या में कोई कटौती करें। मेरा मतलब तो केवल इतना है कि जब 'भविष्य की लहर'—तरुणों की एक बहुत बड़ी संख्या—इन कालेजों के दरवाज़ों पर पहुँचेगी तो उनका विस्तार करना कठिन हो जायगा।

इन सुझावों में कोई नई बात नहीं कही गई है। ये तो केवल संयुक्तराज्य के शिक्षा अभियान के प्रमुख कार्यक्रम सामान्य-शिक्षा को जारी रखने की ओर

संकेत मात्र करते हैं । इनमें इतिहास, राजनीति शास्त्र के मूलतत्व, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र तथा भूगोल और स्वाभाविक विज्ञानों की प्रणालियों के कुछ निदर्शन तथा साथ ही साथ बुद्धि तथा भावात्मक परिपक्वता की विशेष प्रेरणा देने वाले साहित्य एवं कला के अध्ययन के महत्त्व के प्रति अमरीकी युवकवर्ग का विश्वास प्रतिबिम्बित होता है । यह विश्वास एक ब्रिटिश शिक्षक की दृष्टि में सामान्य शिक्षा के सम्बन्ध में एक निच्छल निष्ठा है । इसके समक्ष अन्य अंग्रेजी भाषी देशों का एक या दो विदेशी भाषाओं, ज्योमेट्री के माध्यम से गणित तथा प्रथम वर्ष में भौतिक और रसायन शास्त्रों के पुराने पाठ्यक्रम के लम्बे अध्ययन के महत्त्व के प्रति विश्वास बिलकुल फीका पड़ जाता है ।

मेरे सुझावों के पीछे मेरी यह धारणा भी रही है कि जहाँ तक हो सके संयुक्तराज्य के पब्लिक स्कूल ऐसी शिक्षा संस्थाएँ बनें जहाँ विभिन्न पृष्ठभूमि तथा दृष्टिकोण के युवक समान अनुभव प्राप्त कर सकें, जहाँ पाठ्यचर्यातिरिक्त कार्यकलाप, और कम से कम एक सामान्य पाठ्यक्रम, जिसमें अंग्रेजी भी हो, व्यावसायिक रुचि को कुछ कम करें और युवकों में विस्तृत विद्वत्तापूर्ण अभिरुचि को जन्म दें । ऐसे स्कूलों की पाठ्यचर्या तैयार करने में हम विभिन्न प्रकार के हाई स्कूलों के कार्यक्रमों में और भी नर्मी दिखा सकते हैं । यहाँ तक कि यदि हमें 17 वर्ष की आयु का 19 वर्ष की आयु तक भी यह निर्णय, कि किसे विश्वविद्यालय जाना है किसे नहीं जाना है, रोकना पड़े तो कोई बात नहीं । मेरे विचार में जिसमें पुस्तक ज्ञान की ओर थोड़ी भी अभिरुचि है उसके लिए कालेज शिक्षा का समय दो वर्ष कम किया जा सकता है और शेष लोगों के लिए भी वृत्तिक प्रशिक्षण तथा कालेज शिक्षा कुछ सीमित की जा सकती है । संक्षेप में, यदि हम फीस देकर शिक्षा प्राप्त करने वाले युवकों को अनावश्यक अपना शिक्षाकाल बढ़ाकर समय और धन नष्ट करने से रोक सकें तो हम स्कूलों और कालेजों पर सरकारी धन आसानी से खर्च कर सकते हैं ।

ब्रिटिश शिक्षा समीक्षक कई बातों को लेकर अमरीकी शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हैं । किन्तु, मुझे जो सबसे उपयुक्त प्रतीत हुई वह यह है, "कितनी विलासमयी प्रणाली है, समय और धन का कितना अपव्यय होता है, केवल अत्यन्त समृद्ध राष्ट्र ही इसे चलाने का साहस कर सकते हैं ।" मैं यह पूछना

चाहता हूँ कि प्राचीनकाल में ब्रिटेन की शिक्षा में आर्थिक पक्ष का कितना ध्यान रखा जाता था ? यद्यपि आजकल निःसन्देह वहाँ शिक्षा के विस्तार में इस बात को ध्यान में रखा जाता है। इस दिशा में जितना काम डालर या पौण्ड स्टरलिंग ने किया है संभवतः, उतना ही धर्म, वर्गभेद की भावना, राजनीतिक आदर्शों तथा सांस्कृतिक मामलों (आप चाहें तो फैशन को भी रख लीजिए) सम्बन्धी लोकरुचि ने भी किया है। फिर भी, मेरा विश्वास है कि बहुत-से विद्यार्थियों के लिए आज संयक्तराज्य के स्कूलों और कालेजों के पाठ्यक्रम अनावश्यक समय की बर्बादी के अलावा कुछ नहीं है। आज हमारी शिक्षा प्रणाली को संगठित करने की आवश्यकता है और मेरे सुझावों में इसी बात पर जोर दिया गया है ।

व्यापक (Comprehensive) हाई स्कूल

माध्यमिक शिक्षा की अमरीकी विचारधारा ब्रिटिश विचारधारा से केवल इसलिए भिन्न नहीं है कि हम सब को शिक्षा देने के लिए वचनबद्ध हैं बल्कि व्यापक (Comprehensive) हाई स्कूलों के उदय के कारण। शिक्षा-जगत से सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति की यह दृढ़ धारणा है कि समाज के समस्त तरुणवर्ग के लिए एक ही प्रकार का स्कूल हो। इस एक स्कूल के अन्दर पाठ्यक्रम का अन्तर तो हो सकता है, और होना भी चाहिए, पर उसमें कोई ऐसा औपचारिक कार्यक्रम भी होना चाहिए जिसमें समस्त छात्र समानरूप से भाग ले सकें। स्कूल की एकता ब्रिटिश 'पब्लिक स्कूल' की भाँति उसे एक सामाजिक इकाई मानने से आती है। पाठ्यचर्यातिरिक्त कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न वर्गों के छात्रों को एक दूसरे को समझने का अवसर मिलता है। बिटिश 'पब्लिक स्कूल' (या इसके आस्ट्रेलियाई प्रतिरूप) को नागरिक-प्रशिक्षण केन्द्र मानने में जो भी तर्क दिए जाते हैं लगभग वे सभी व्यापक हाई स्कूलों पर लागू होते हैं।

इस प्रकार के माध्यमिक स्कूल की चर्चा राष्ट्रीय शिक्षा संघ (National Education Association) के शिक्षा नीति आयोग (Educationl Policies Commission) द्वारा एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई है। उसकी दिशा मुझसे कुछ भिन्न है। उसका विशेष आग्रह इस बात पर है कि जिस समाज में ऐसे स्कूल चलाने हैं वह नागर (urban) है या ग्रामीण। इसका विवरण आदर्श प्रधान अवश्य है, पर संयुक्तराज्य के बहुतेरे कस्बों तथा छोटे नगरों में

इसके समकक्ष स्कूल मिल जाएँगे। मेरी यह निश्चित धारणा है कि यदि हम अपनी शिक्षा की प्रगति चाहते हैं तो इस प्रकार के स्कूलों में सुधार करना होगा तथा दूसरे ढंग की माध्यमिक शिक्षा को भी इस प्रकार ढालना होगा जो इस नमूने से मेल खा सके। इस प्रकार के स्कूल शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रमों पर विचार करने के पूर्व मैं माध्यमिक शिक्षा की इस व्यवस्था के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालना चाहूँगा।

इस विषय में गम्भीर गवेषणा किए बिना ही मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि व्यापक हाईस्कूल का विचार इस राष्ट्र के विशेष इतिहास का प्रतिफलन है। वस्तुतः अंग्रेजी परम्परा में कोई ऐसी बात नहीं थी जो इसके अनुकूल पड़ती। इंगलैंड में हमें पाँच या छः वर्षीय पाठ्यचर्या वाले ग्रामर स्कूल देखने को मिलते हैं। ये ऐसे उच्च शैक्षिक अभिरुचि के बालकों के लिए होते हैं जो 'पब्लिक स्कूल' का व्यय नहीं वहन कर सकते। अब दूसरे किशोरों की शिक्षा के लिए कुछ अन्य प्रकार के माध्यमिक स्कूलों की स्थापना हो रही है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में संयुक्तराज्य के उत्तरीपूर्वी भाग के नगर क्षेत्रों में भी अंग्रेजी परम्परा प्रचलित थी। उदाहरण के लिए, बोस्टन में, पचास वर्ष पूर्व स्कूल के आधार पर 6 वर्षीय पाठ्यक्रम वाला लैटिन स्कूल (जो लगातार, लगभग तीन शताब्दी से भी अधिक समय तक चलता रहा), एक अंग्रेजी हाईस्कूल (जिसमें चारवर्षीय विशुद्ध पुरातनवादी पद्धति प्रचलित थी; पर लैटिन नहीं थी) तथा एक यान्त्रिक हाईस्कूल (Machanics High School) थे। कुछ समीपवर्ती अर्द्धनागर क्षेत्रों में स्थानीय हाई स्कूल चल रहे थे जो कुछ अंशों में कालेज जाने वाले विद्यार्थियों और कुछ अंशों में ऐसे विद्यार्थियों के लिए थे जिन्हें कालेज नहीं जाना था।

आजकल संयुक्तराज्य के बड़े नगरों में शैक्षिक योग्यता तथा व्यावसायिक महत्त्वकांक्षा के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण एक आम बात हो गई है। मैं इस प्रकार की व्यवस्था को भ्रान्तिमूलक मानता हूँ, क्योंकि इससे विभिन्न सांस्कृतिक, धार्मिक तथा व्यावसायिक वर्गों में पारस्परिक सामंजस्य नहीं स्थापित हो पाता। प्रारम्भिक पब्लिक स्कूल तथा कस्बों और छोटे नगरों के हाई स्कूल भी प्रायः, यह अवसर प्रदान करते हैं। वास्तव में यदि पब्लिक स्कूलों में इस प्रकार की एकतावादी भावना न काम करती तो संयुक्तराज्य में, इतने

विस्तार तथा सांस्कृतिक विभिन्नता के बावजूद भी जो महत्त्वपूर्ण सामंजस्य स्थापित हुआ है, कदापि न हो पाता। विभिन्न प्रकार के प्रवासित वर्गों में तादात्म्य स्थापित करने का कार्य तो समाप्त हो गया है; पर लोकतान्त्रिक एकता लाने का अभियान अब भी जारी है। यदि वाटरलू (Waterloo) का संग्राम ईटन के खेल के मैदान में जीता जा सकता है तो आगामी 50 वर्षों में संयुक्त-राज्य के पब्लिक हाईस्कूलों के खेल के मैदानों में कम्युनिज्म के साथ सैद्धान्तिक संघर्ष में भी आसानी से विजय प्राप्त की जा सकती है। इन विशिष्ट अमरीकी संस्थाओं के संवर्धन तथा सुधार के लिए सचेष्ट हम सभी लोग इस सफलता के विषय में पूरे आशावान् हैं।

सामाजिक प्रक्रिया के रूप में शिक्षा की मान्यता पर जब हम जनतन्त्र के अमरीकी स्वरूप के विश्वास तथा राष्ट्रीय एकता की चिन्ता के साथ विचार करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस लक्ष्य की पूर्ति एक प्रथम श्रेणी का व्यापक हाई स्कूल ही कर सकता है। लेकिन हमें निःसंकोच रूप में स्वीकार करना पड़ेगा कि बहुत-से ऐसे नगर तथा कस्बे हैं जहाँ ऐसे स्कूल नहीं हैं अथवा उनमें अपेक्षित आदर्श का अभाव है। दक्षिणी राज्यों की पार्थक्यभाव की समस्या को छोड़ भी दें, तब भी हमें असामाजिक शक्तियों की सत्ता तो स्वीकार करनी ही पड़ेगी जो हाई स्कूल के समतापरक स्वरूप को समाप्त कर देती है। उदाहरण के लिए, जो एक ऐसे विशाल नगर में, जहाँ एक हाईस्कूल से काम नहीं चलता, सर्वसामान्य स्कूल की विचारधारा कई स्कूलों को जन्म देती है। इनमें से प्रत्येक एक निश्चित क्षेत्र की आवश्यकता की पूर्ति करता है। फिर ऐसे क्षेत्र में, जहाँ विभिन्न वर्गों के लोग रहते हैं, हाई स्कूल को एक प्रभावशाली सामाजिक इकाई के रूप में काम करना कठिन हो जाता है। किसी नगर के उस भाग में, जहाँ अल्प आय वाले लोग भी रहते हैं समृद्ध लोग भी, एक ऐसे व्यापक हाईस्कूल का चलाना कठिन है जिसमें उस क्षेत्र के सभी युवक समानरूप से शिक्षा ग्रहण कर सकें। अधिक आय वाले परिवार अपने बच्चों को दूसरे भागों में स्थित स्कूलों में भेज देंगे। कुछ नगरों तथा क़स्बों में आज जो स्थिति है, उसको ध्यान में रखते हुए हाई स्कूल के प्रधानाचार्य के लिए, विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों के लिए मिलने का स्थान प्रदान करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है, जिसके विद्यार्थी नगर के किसी विशेष भाग से आते हैं। किन्तु

ये समस्याएं व्यापक हाईस्कूलों की असफलता की द्योतक कदापि नहीं। ये तो इस बात की ओर संकेत करती हैं कि आज समाजशास्त्र तथा अध्यापन-कला को दृष्टि में रखते हुए शिक्षा के विकास की आवश्यकता है।

कुछ नगर तथा क़स्बे जहाँ कभी हाईकूस्ल बिना किसी भेद-भाव के चला करते थे अब ऐसे समुदायों में बंट गए हैं जहाँ विरोधी सांस्कृतिक तत्व व्यापक हाई स्कूल की अधिकाँश सुविधाओं को पनपने ही नहीं देते। उन अभिभावकों के सामने, जो ऐसे समुदायों से सम्बद्ध हैं और रह सकते हैं, तीन विकल्प हैं : वे उस नगर क्षेत्र के अन्य भाग को जा सकते हैं जहाँ व्यापक हाईस्कूल सफलतापूर्वक चल रहे हैं, वे अपने-अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेज सकते हैं; अथवा सामाजिक कठिनाइयों के बावजूद भी वे पास के हाई स्कूल से ही काम चला सकते हैं। इन विकल्पों में से मुझे पहला अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण प्रतीत होता है। कारण, कि आज वे तरुण वास्तव में बड़े भाग्यवान हैं जो एक ऐसे स्थानीय हाईस्कूल में पढ़ते हैं जहाँ विभिन्न धार्मिक तथा आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बालक और बालिकाएं साथ-साथ पढ़ते तथा खेलते हैं। आज अधिकाँश अमरीकी युवक और युवतियाँ इन सुविधाओं का उपयोग कर रहे हैं। केवल इसी एक बात के कारण, कम से कम, मुझे इस राष्ट्र के भविष्य पर विश्वास है।

मेधावी (युवक और युवतियों) के लिए शिक्षा

चूंकि, अक्सर, मेरे ऊपर यह दोष लगाया जाता है कि मैं अमरीकी पब्लिक स्कूलों का आदर्श-चित्र उपस्थित करता हूँ। यहाँ मैं संक्षेप में उनकी कुछ कमियों पर प्रकाश डालना चाहूँगा। मैं समझता हूं, उनमें सर्वप्रमुख है—उनकी मेधावी युवकों या युवतियों से सम्बन्धित शिक्षा की असफलता। कोई कारण नहीं कि समाज से सम्यक् पोषित व्यापक हाईस्कूलों में एक प्रतिभावान बालक या बालिका अच्छी शिक्षा न ग्रहण कर सके। किन्तु ऐसे स्कूलों की संख्या बहुत कम है जहाँ उच्च बौद्धिक स्तर के छात्रों को पर्याप्त प्रेरणा तथा गम्भीर शिक्षा मिलती है। कुछ लोगों (जिनमें कुछ शिक्षक भी हैं) के मन में सर्वसामान्य की शिक्षा तथा मेधावी लोगों की शिक्षा के विषय में एक निराधार भ्रांति-सी है। माध्यमिक स्कूलों के इन दो महान् कार्यों के सम्बन्ध में किसी प्रकार की विरोध की भावना को नहीं पनपने देना चाहिए ताकि अमरीकी पब्लिक हाई स्कूल

अपने लक्ष्य से विचलित न हों।

पब्लिक हाईस्कूल के अधीक्षकों, प्रधानाचार्यों और शिक्षकों से मैं लगातार निवेदन करता रहा हूँ कि वे बौद्धिक प्रतिभा सम्पन्न युवक को पहिचानने का प्रयत्न करें तथा उसे विश्वविद्यालयीय शिक्षा के लिए तैयार करने की ओर अधिक ध्यान दें। कुछ नगरों में हाईस्कूल के अध्यापकों के बीच में इस बात को लेकर बड़ा लज्जित होना पड़ता है। वे प्रायः, यह सोचते हैं कि उनके स्कूलों से अच्छे लड़के, खासतौर से सामाजिक कारणों से निकाल लिए जाएंगे अतः कालेज के लिए तैयार करने वाले प्राइवेट स्कूलों से होड़ लेना व्यर्थ है। नगर शिक्षा व्यवस्था के अन्दर कुछ ऐसे स्कूलों की गतिविधि पर भी यह विचार लागू होता है जो छात्रों को कालेज के लिए तैयार करते हैं, जबकि दूसरे विशुद्ध व्यावसायिक स्कूल हैं।

कालेज तथा स्कूल के सम्बन्धों के इस पूरे व्यापार का भी बहुत बड़ा रहस्य हैं। पूर्वी कालेजों के हाईस्कूल विद्यार्थियों के विवरण, जिनमें अधिकांश समृद्ध घरानों के बच्चे हैं तथा जिन्होंने प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा पाई है, से पता चलता है कि पब्लिक स्कूल का स्नातक प्रतियोगिता में कभी पीछे नहीं रहता। मैं ऐसे हाई स्कूलों के नाम गिना सकता हूँ जिनके बारे में यह कहा जाता है कि ये कालेज के लिए लड़के नहीं तैयार कर सकते; पर जिनके स्नातक कभी-कभी कालेज तथा विश्वविद्यालय में बहुत ही योग्यता का परिचय देते हैं। लेकिन इस सबका यह अर्थ नहीं कि पाठ्यचर्या तथा अध्यापन की दृष्टि से निम्नकोटि के हाई स्कल हैं ही नहीं। कुछ हाई स्कूल ऐसे हैं जहाँ का छात्र कालेज की कठिन शिक्षा ग्रहण करने का साहस ही नहीं कर सकता। हमें यह भी कहने में कोई संकोच नहीं कि भावी अध्यापक या अध्यापिका का वह बहुमूल्य समय, जो उच्चगणित का ज्ञान प्राप्त करने और फ्रेंच या जर्मन भाषाओं के सीखने में लगाना चाहिए था, वह इन स्कूलों में नष्ट हो जाता है।

अपने माध्यमिक स्कूलों में (स्वतन्त्रता तथा विभिन्नता की देन) एकरूपता के अभाव के कारण हम इन्हें सर्वसामान्य नहीं बना सकते। अस्तु, जहाँ हम बहुत स्कूलों में परम्परागत विषयों के पढ़ाने पर जोर देते हैं वहीं दूसरे स्कूलों को अपनी पाठ्यचर्या को व्यापक बनाने के लिए अवश्य प्रेरित करना चाहिए। पचास वर्ष पूर्व, अधिकांश क्षेत्रों में, पब्लिक हाई स्कूल, मुख्यतया, कालेज के

लिए छात्रों को तैयार करने का ही कार्य करते थे। यहाँ प्राचीन पाठ्यक्रम का समुचित स्थान था तथा पुरातनवादी शिक्षा प्रदान की जाती थी। किन्तु समस्त अमरीकी युवकों को इस संकीर्ण शैक्षिक परिधि में रखना असंभव था। एक पीढ़ी पूर्व कुछ सचेत शिक्षाशास्त्रियों ने इस बात का अनुभव किया कि यदि हमें 17 या 18 वर्ष की आयु तक 2 तिहाई या तीन चौथाई किशोरों को पूर्ण-कालिक शिक्षा देनी है, तो हमें एक विविध तथा व्यापक पाठ्यचर्या तैयार करनी होगी। कुछ शिक्षा मंडलों (Board of Education) ने अभी तक यह योजना स्वीकार नहीं की है। इस योजना में मेधावी छात्रों पर जोर देने की उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी सामान्य शिक्षा पर।

मेरा इरादा माध्यमिक शिक्षा के संगठन पर विस्तारपूर्वक विचार करने का नहीं। 'ग्रामर स्कूल' (आठवीं श्रेणी तक) तथा चारवर्षीय हाई स्कूल के पुराने पार्थक्य ने सामान्यतया एक दूसरी योजना को जन्म दिया है जिसमें जूनियर हाई-स्कूल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किन्तु, सामान्यरूप से प्रयत्न यह रहा है कि नवीं और दसवीं श्रेणियों (14 से लेकर 15 साल की आयु तक) पाठ्यचर्या में भेद न आने पाये। चूंकि, हमारे बहुत-से कालेज और विश्वविद्यालयों में प्रवेश के लिए कोई निश्चित नियम नहीं हैं और उनकी उपाधियों का एक स्तर नहीं, अतः स्नातकों के लिए 18, 19 या 20 वर्ष की आयु तक विशुद्ध व्यावसायिक शिक्षा से कालेज शिक्षा की ओर तथा अन्त में विश्वविद्यालय-अध्यापन की ओर जाना बड़ा आसान है। यह कालेजों के अव्यवस्थित कार्यक्रम तथा विभिन्न स्तर का एक बहुत बड़ा लाभ है। महान् योग्यता, कल्पना शक्ति तथा रुझान का युवक प्रायः बड़े घुमाव-फिराव के बाद किसी पेशे में आ पाता है।

एक हाई स्कूल के छात्र के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णय है कि उसे द्विवर्षीय कालेज में, चारवर्षीय कालेज में या इंजीनियरिंग स्कूल में जाना है, अथवा स्नातक उपाधि लेने के बाद नौकरी करनी है। इस निर्णय को जितनी देर तक रोका जा सके उतना ही अच्छा है। पारिवारिक स्थिति का, इस निर्णय पर, जितना प्रभाव 11 + आयु पर पड़ने की संभावना रहती है उतनी 17 वर्ष की आयु में नहीं। अतः जो लोग उच्च सामाजिक गतिशीलता के पक्ष में हैं वे सर्वसम्पन्न शिक्षा का भी समर्थन उस आयु तक करेंगे जहाँ तक संभव होगा। 'कालेज जाने' के विषय में शीघ्र निर्णय से प्रतिभा के आधार पर वृत्तिक चयन

कठिन हो जाता है और यह हमारे औद्योगिक समाज के हित के विपरीत बैठता है। अन्त में हम यह कहेंगे कि बौद्धिक योग्यता को लेकर कोई निर्णय, संभवतः 11 + की आयु में भी उतनी आसानी से लिया जा सकता है जितनी 15 + की आयु में; पर अन्य बातों को लेकर नहीं।

प्रथम अध्याय में मैंने इंगलैंड में 11 वर्ष की आयु में निःशुल्क ग्रामर स्कूलों के लिए बालकों के चुनाव की आवश्यकता से उत्पन्न आजकल की कठिनाइयों की चर्चा की। हाँ कुछ परिवारों के लिए स्थानीय ग्रामर स्कूलों में सीमित स्थान तथा भयंकर होड़ होने से शिक्षा एक समस्या बन गई है। बात यह है, कि नौकरी उनका पैतृक पेशा रही है और 'पब्लिक स्कूल' की शिक्षा के लिए उनके पास पर्याप्त धन नहीं है। आस्ट्रेलिया के प्रत्येक नगर में विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए युवकों को तैयार करने वाले कुछ कम खर्चीले प्राइवेट स्कूलों के होने से इस समस्या का कुछ समाधान निकल आता है।

यदि कोई अमरीकी शिक्षा में इतनी विस्तृत विविधता के बावजूद भी किसी विशिष्ट व्यवस्था की बात करना चाहे तो इतना कहा जा सकता है कि हम 15 वर्ष की आयु तक अपने पब्लिक स्कूलों की पाठ्यचर्या को सर्वसामान्य बनाने का प्रयत्न करते हैं। फलतः पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाला अमरीकी छात्र कुछ ही ऐसे विद्योचित (Academic) विषय पढ़ता है जो ग्रेट ब्रिटेन तथा आस्ट्रेलिया में विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए आवश्यक समझे जाते हैं। इसके अलावा वह उनका अध्ययन इतनी गम्भीरता से नहीं करता जितना उसके समकक्ष छात्र अन्य अंग्रेजी भाषी देशों में करता है।

हम अपने व्यापक हाई स्कूल के ढाँचे में इस परिस्थिति का सुधार कर सकते हैं और इससे काफी लाभ भी हो सकता है। लेकिन हम इस परिस्थिति का सुधार उस हद तक नहीं कर सकते जो ब्रिटिश या यूरोपीय परम्परा के अभ्यस्त लोगों को पसन्द आ जाय। बात यह है कि इन विदेशी शिक्षा समीक्षकों ने 11 या 12 वर्ष की आयु में शुरू होने वाली शिक्षापद्धति तथा सामान्य माध्यमिक शिक्षा पद्धति के वैषम्य पर विचार नहीं किया है। ब्रिटिश प्रणाली में छात्र को बौद्धिक कौशलों के चाण्यित्य का अवसर तो है पर मैं समझता हूँ, उनके जीवन में निराशा अधिक रहती है। हमारी प्रणाली के अन्तर्गत, जिसकी समता मैंने, पिछले अध्याय में संकरे सिलिण्डर की भाँति ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली से वैषम्य

दिखाते हुए, चौड़ी कुप्पी से की है, हमारे छात्र विश्वविद्यालय जाने का निर्णय अपेक्षाकृत परिपक्व आयु में लेते हैं।

स्कूल-कालेज तथा विश्वविद्यालय के सम्बन्ध की पेचीदगी को स्पष्ट करने के लिए एक वर्तमान समस्या पर मैं कुछ कहना चाहूँगा। आमतौर से यह सोचा जाता है कि संयुक्तराज्य को लगातार एक बहुत बड़ी संख्या में भौतिक शास्त्रियों, रसायन शास्त्रियों तथा इंजीनियरों की आवश्यकता है। फिर भी कालेजों, विश्वविद्यालयों तथा इंजीनियरिंग स्कूलों में विज्ञान विषयों में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों की संख्या अधिक है। बात गम्भीर है। इसका कारण यह बताया जाता है कि हाई स्कूल अपने विद्यार्थियों को भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र तथा गणित में सम्यक् रूप से शिक्षित नहीं करते। यहाँ तक कहा जाता है कि छात्रों ने बीजगणित, न केवल कम पढ़ा है, अपितु वे इससे घृणा करने लगे हैं। यह आरोप उन अनेकों आरोपों तथा प्रत्यारोपों में से है जो लगाए तो आसानी से जा सकते हैं पर उनका साबित करना कठिन है। इस प्रकार की शैक्षिक युक्तियों में बहुत-सी धारणाएँ अन्तर्निहित रहती है। उदाहरण के लिए एक हाई स्कूल पाठ्यक्रम की एक विशेष कालेज पाठ्यक्रम से अनुरूपता अथवा अननुरूपता तो स्पष्टतया इस बात पर निर्भर करती है कि कालेज का शिक्षक अपने विद्यार्थी से आशा क्या रखता है। यदि उदाहरणार्थ, इंजीनियरिंग स्कूल में प्रथम वर्ष भौतिक शास्त्र के अध्यापक यह सोचें कि प्रवेश लेने वाले छात्र को त्रिकोणमिति का ज्ञान होना चाहिए, तब तो संयुक्तराज्य के बहुत-से स्कूलों की तैयारी अधूरी है। यह उदाहरण मैं इस बात को स्पष्ट करने के लिए दे रहा हूँ कि कालेज में विशेषीकरण के लिए छात्र की नींव माध्यमिक स्कूल में मजबूत हो जानी चाहिए।

ब्रिटिश शिक्षा पद्धति में स्कूल तथा विश्वविद्यालय के बीच में विशेषीकरण को यह सम्बन्ध पूरा-पूरा स्वीकार किया जाता है। आस्ट्रेलिया के एक विश्वविद्यालय के रसायनशास्त्र के प्राध्यापक की दृढ़ धारणा थी कि जब तक किसी छात्र ने हाई स्कूल में भौतिक विज्ञान तथा रसायन शास्त्र के ठोस पाठ्यक्रम का अनुसरण न किया हो वह विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र पढ़ने योग्य नहीं है। और हाई स्कूल के ठोस पाठ्यक्रम से एक ब्रिटिश शिक्षा शास्त्री का अभिप्राय संयुक्तराज्य के नवागन्तुक कालेज पाठ्यक्रम (Freshman College

Course) से होगा। मैं इस बात की चर्चा यहाँ उस अल्पायु पर ज़ोर देने के लिए कर रहा हूँ कि जिसमें ब्रिटिश देशों में भावी वैज्ञानिकों के लिए विशेषीकरण प्रारम्भ हो जाता है। संयुक्तराज्य में, जहाँ हम सभी लोग इतनी अल्पायु में विद्योचित (Academic) मार्ग अपनाने के विरोध में हैं, कालेज शिक्षकों की इस सम्बन्ध में एक धारणा नहीं कि उनके विषय में छात्रों को पहले से कितना ज्ञान होना चाहिए। उदाहरण के लिए कुछ रसायनशास्त्र के कालेज-प्राध्यापक ऐसे विद्यार्थियों को प्राथमिकता देंगे जो रसायनशास्त्र के विद्यार्थी कभी नहीं रहे पर भौतिक शास्त्र और गणित में दक्ष हैं। फिर भी, हाई स्कूल के पाठ्यक्रम में रसायनशास्त्र, भौतिक शास्त्र तथा शरीर विज्ञान अध्ययन का अधिकाधिक समावेश किया जा रहा है। प्रारम्भिक स्कूलों में भी सामान्य विज्ञान के समावेश के कारण माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों को बड़ी कठिनाई हो रही है। विज्ञान तथा गणित में स्कूल के विशेषीकरण से वैज्ञानिक तथा इंजीनियरों के प्रशिक्षण के सम्बन्ध के ऊपर इस देश में अनुसन्धान होने की आवश्यकता है। मैं हाई स्कूल और कालेज के बीच में खड़ी होनेवाली समस्याओं का अन्तिम समाधान तो नहीं दे सकता किन्तु मेरा विचार है कि इन समस्याओं पर और अधिक निष्पक्ष गवेषणा होनी चाहिए।

अवसर की समानता

जिन देशों की चर्चा मैंने इस पुस्तक में की है उन देशों के निर्धन, पर मेधावी छात्रों के मार्ग में विश्वविद्यालय शिक्षा को लेकर जो अनेकानेक अड़चनें आती हैं उनका तुलनात्मक चित्र उपस्थित करना मेरे लिए बड़ी दिलचस्प बात है। या दूसरे शब्दों में यह कहें कि वे कौन-सी बातें हैं जिनसे प्रत्येक देश में अवसर की समानता के सिद्धान्त को लागू करने में बाधा पहुँचती है। संयुक्त-राज्य में निर्विवाद रूप से यह बाधा अक्सर आर्थिक कठिनाई के कारण उपस्थित होती है। हम विशेषतया छोटे नगरों, कस्बों तथा देहात के बहुत-से प्रतिभा सम्पन्न युवकों से हाथ धो रहे हैं। कारण यह है कि निर्धन घराने का लड़का कालेज या विश्वविद्यालय जाने का साहस नहीं कर सकता जहाँ उसकी प्रतिभा का विकास हो सके। इस बाधा को दूर करने का प्रयास होना चाहिए। अपने उपर्युक्त दस सुझावों में से इसे मैं प्रमुख मानता हूँ। इसी प्रकार हम कुछ और

मेधावी युवकों से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं क्योंकि कुछ वर्गों के योग्य छात्र कालेज जाना ही नहीं चाहते। हाई स्कूल के छात्रों को भविष्य के विषय में ऐसी सलाह देनी चाहिए कि अत्यन्त मेधावी छात्र अपनी भविष्य की शिक्षा जारी रखें।

अन्य देशों के सिंहावलोकन से पता चलता है कि आस्ट्रेलिया तथा संभवतः न्यूजीलैंड में भी आर्थिक कठिनाई दूर कर दी गई है। फिर भी पाठक को याद होगा कि इन देशों में अमरीकी दृष्टिकोण से कुछ ही छात्र हाई स्कूल के बाद पूर्णकालिक शिक्षा जारी रखते हैं। आस्ट्रेलिया में राष्ट्रमण्डल की नई छात्रवृत्ति एक प्रकार से उनकी जी॰ आई॰ बिल (G.I. Bill) की ही अनुवृत्ति है। संयुक्त राज्य में इसी की समकक्ष विश्वविद्यालय छात्रवृत्तियों पर कई हजार डालर खर्च होते हैं। इस योजना का प्रभाव परिलक्षित होने लगा है। विश्वविद्यालयों में प्रवेश बढ़ने लगे हैं। आस्ट्रेलिया में अब शिक्षण कार्य के लिए अत्यन्त मेधावी युवकों की कमी आर्थिक कठिनाई के कारण नहीं रहेगी सामाजिक या शैक्षिक परिस्थितियों के कारण भले रहे।

उपाधिदात्री संस्थाओं का आकर्षण जितना संयुक्तराज्य में है उतना आस्ट्रेलिया में नहीं। जिस बात को एक समृद्ध छात्र या भावी औद्यगिक प्रबन्धक अनावश्यक समझता है वह बात एक निर्धन छात्र के मन में उठ ही नहीं सकती। यही कारण कि करपोषित स्कूलों की संख्या जिसकी चर्चा मैंने पिछले अध्याय में की थी, कम होने लग गई। (आस्ट्रेलिया में स्कूल के विद्यार्थियों, चाहे वे अपने घर ही क्यों न रहते हों, के दैनिक व्यय के लिए सहायता देकर नौकरी की आय के आकर्षण को समाप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। किन्तु, छात्रवृत्तियाँ आर्थिक दृष्टि से नौकरी की बराबरी कर सकती हैं, इसमें सन्देह है।) संयुक्तराज्य में अधिकाधिक नवयुवकों, चाहे उनका बौद्धिक स्तर कुछ भिन्न ही क्यों न हो, के कालेज जाने से यह लाभ होता है कि जो लोग कालेज जीवन का आनन्द लेने की दृष्टि से प्रवेश लेते हैं, उनमें से काम करने के लिए कुछ ही रह जाते हैं। और इस वर्ग से कुछ लोग व्यावसायिक दृष्टि से बड़े योग्य होते हैं। अब पूर्णकालिक शिक्षा अपवाद नहीं नियम है, केवल इसी बात से लोगों में इसी ओर रुचि उत्पन्न होने लगी है। फिर भी, अभी बहुत-से सामाजिक कारण हैं जो उच्च बौद्धिक स्तर के बालक या बालिका के कालेज जाने में बाधक हैं। किन्तु, मेरा विश्वास है, कि ये

कारण संयुक्तराष्ट्र में अन्य देशों की अपेक्षा कम हैं।

कार्यानुभव कार्यक्रम तथा अंशकालिक शिक्षा

कुछ ऐसे युवक हैं, जो अपनी पारिवारिक सम्पत्ति के बावजूद भी 15 वर्ष की आयु में ही नौकरी करके धन कमाना चाहते हैं। इधर कुछ वर्षों से हाई स्कल विद्यार्थी के लिए कार्यानुभव के लाभ पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। हाई स्कूल के प्रशासक और शिक्षक अब नियोक्ताओं से यह नहीं कहते, "हम अपने छात्रों तथा छात्राओं को अपनी कक्षाओं में वापस लेना चाहते हैं।" बल्कि अब वे उनसे यह कहने लग गए हैं, "कार्यानुभव एक नवयुवक की शिक्षा का बड़ा मूल्यवान् अंग है। हम अपने कुछ छात्रों को कुछ समय के लिए आपके काम में लगाना चाहते हैं। हम उन्हें स्कूल में पढ़ाते रहेंगे और उनके काम पर भी निगाह रखेंगे जिससे कि वे, आपके साथ काम करने के अनुभव से, जितना हो सके, लाभ उठा सकें। हम उनके इस कार्य के लिए पुरस्कार देंगे, बशर्ते कि आप और हम, दोनों, उससे सन्तुष्ट हों।"

1957 के सर्वेक्षण से पता चलता है कि नगरों में स्थिति 25000 या इससे भी अधिक स्कूलों में से लगभग आधे स्कूलों में किसी न किसी प्रकार की कार्यानुभव योजना अवश्य चल रही है। 1950 के बसन्त में 18 राज्यों के 38 नगरों के सर्वेक्षण से पता चला कि लगभग सभी हाई स्कूलों में स्नातक कक्षाओं में कार्यानुभव के आधार पर कोई न कोई विशेष सुविधा अवश्य दी गई थी। यद्यपि किसी भी नगर में योजना से सम्बद्ध विद्यार्थियो की संख्या पूरे स्कूल की संख्या की 10 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। याद रहे कि बहुत हद तक यह प्रवृत्ति युद्धोतर काल की देन थी। इसके अतिरिक्त स्थानीय नियोक्ताओं तथा संघों से ऐसे प्रोग्रामों के विषय में समझौता करना भी आसान नहीं। किन्तु प्रवृत्ति सच्ची दिशा में है। यदि रोजगार बढ़ता गया तो, मैं समझता हूँ, इन योजनाओं में छात्रों की संख्या बढ़ती ही जाएगी और बढ़नी चाहिए भी। यह विशेषतया, द्विवर्षीय कालेजों (तेरहवीं और चौदहवीं श्रेणी) में होना चाहिए। मेरा सुझाव है कि चारवर्षीय कालेजों का विस्तार करके इस कमी की पूर्ति की जाय।

कुछ शिक्षकों ने कार्यानुभव योजना के भविष्य में विचार करते हुए निम्न

सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं—

(1) विद्यार्थी का नाम स्कूल में नियमित रूप से दर्ज होना चाहिए जिससे कि स्कूल उसके कार्यानुभव पर नियन्त्रण रख सके। उसे पुरस्कार तभी दिया जाय जब यह पता चल जाय कि उसने उपयोगी शिक्षा प्राप्त की है।

(2) कार्यानुभव को छात्र के पूरे शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम से सम्बद्ध कर दिया जाय चाहे वह व्यावसायिक हो चाहे सांस्कृतिक। फिर भी, यदि छात्र में अब तक सांस्कृतिक और व्यावसायिक अभिरुचि का विकास नहीं हो सका तो यह बात उसकी शिक्षा का अग समझी जानी चाहिए कि वह कोई भी कार्य सच्चाई के साथ करना सीख रहा है।

(3) उसके कार्यानुभव पर किसी अध्यापक का नियन्त्रण रहे जिससे वह अपनी शिक्षा जारी रख सके।

(4) कार्यानुभव योजना का संगठन ऐसा हो जिससे कि छात्र के काय-कौशल तथा ज्ञान में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहे। एक कार्य का पूरा अनुभव हो जाने के बहुत बाद तक उससे वही काम नहीं लेते रहना चाहिए। किन्तु परिश्रम से काम करना, समय पर पहुँचना और रुचि और नवीनता न रहने पर भी एक काम को जारी रखना इस योजना की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं।

संयुक्त राज्य की इस स्थिति का ब्रिटिश राष्ट्रों की समकक्ष समस्याओं से तुलना करना आवश्यक न होगा। ग्रेट ब्रिट्रेन, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में स्कूल और कालेज जीवन में अपनी-अपनी जीविका स्वयं कमाने के रूप को कभी भी स्वीकार नहीं किया गया जो संयुक्त राज्य में। इस स्थिति में कुछ परिवर्तन तो हो रहा है किन्तु अमरीकी पद्धति पर, छात्रजीवन में आशंकालिक कार्य करना अभी इन देशों में कम देखने को मिलता है। बल्कि कम से कम आस्ट्रेलियाई स्थिति इसके राज्यों में बिलकुल विपरीत है। इन राज्यों में, विशेषतः, नगरों में 14 वर्ष से लेकर 17 वर्ष तक के नवयुवकों के लिए अंशकालिक शिक्षा का वड़ा अवसर है। मैं समझता हूँ इसी प्रकार की व्यवस्था की योजना इंगलैंड के लिए भी है। मैंने लोगों को कहते हुए सुना है कि नयी अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य यह है कि 16 वर्ष की आयु तक सबको पूर्णकालिक शिक्षा तथा 18 वर्ष की आयु तक के लिए अंशकालिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय। हाँ, प्रत्येक आयुवर्ग का लगभग 15 प्रतिशत 18 वर्ष की आयु तक पूर्णकालिक

तालिका 7

अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली (1951)

इंगलैंड और वेल्स में पूर्णकालिक तथा अंशकालिक आधार पर स्कूलों तथा दूसरी शिक्षा संस्थाओं में पढ़नेवाले लड़कों तथा नवयुवकों का वितरण

(शिक्षा समाप्त करने के पहले सैनिक सेवा में न जाने वाले)

नाम दर्ज आयु वर्ग (पुरुष की प्रतिशत संख्या)

आयु वर्ग	पूर्णकालिक स्कूल				पूर्णकालिक (अन्य शिक्षा संस्थायें)			योग	अंशकालिक शिक्षा		योग†
	सरकार द्वारा पोषित	सरकारी सहायता प्राप्त	स्वाधीन मान्य	स्वाधीन अन्य	उच्च-शिक्षा संस्थायें	अध्यापक प्रशिक्षण कालेज	विश्व विद्यालय		दिवस	साय	
14	88.5	2.5	4.5	3.5	—	—	—	99.5	—	—	—
15	23.5	2.0	4.0	2.0	1.0	—	—	32.0	11.0	35	40
16	9.0	1.5	3.0	1.5	1.0	—	—	16.0	15.0	38	45
17	4.0	0.5	2.1	1.0	1.0	—	—	8.5	14.0	36	43
18	2.0	0.5	0.5	0.5	1.0	1·0	0.2	7.5	9.0	22	26
19	—	—	—	—	1.0	1.0	4.5	6.5	5.5	18	22
20	—	—	—	—	1.0	—	4.5	5.5	4.0	11	13
21	—	—	—	—	1.0	—	4.0	5.5	3.0	9	10
22	—	—	—	—	0.5	—	2.5	3.0	2.5	9	10
23	—	—	—	—	0.5	—	1.0	1.5	2.0	9	10

† पूर्णयोग दिवस तथा सायंकालीन कक्षाओं में पढ़ने वाले छात्रों के योग से कम है, क्योंकि कुछ छात्र दोनों समय की कक्षाओं में पढ़ते हैं। ध्यान रहे कि पूर्णकालिक तथा अंश कालिक नाम दर्ज छात्रों की 15 वर्षीय आयुवर्ग की कुल संख्या 72 प्रतिशत, 16 वर्षीय की 61 प्रतिशत, 17 वर्षीय की 52 प्रतिशत। संयुक्त राज्य के लिए आयुवर्गों की संख्याएं क्रमशः 88, 76 तथा 61 प्रतिशत हैं (तालिका 1, अध्याय 1, पृ० 3) अधिक आयु वर्ग के स्कूलों और कालेजों में पढ़ने वाले लड़कियों और लड़कों की सं० रा० की संख्याएँ (1940 जनगणना परिणाम के अनुसार) : 18 वर्ष 36 प्रतिशत, 19 वर्ष 20 प्रतिशत 20 वर्ष 12 प्रतिशत। संयुक्तराज्य के अंशकालिक प्रवेश के विषय में पर्याप्त आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

शिक्षा प्राप्त करेगा। युवकों के लिए 1951 की स्थिति तालिका नं० 7 के आंकड़ों से स्पष्ट है। 15.19 के आयुवर्ग में अंशकालिक शिक्षा प्राप्त करने वालों की उच्च प्रतिशत-संख्या बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

अंशकालिक प्रणाली व्यवस्था के और अधिक विश्लेषण के लिए आस्ट्रेलिया के कुछ आंकड़े (तालिका 8, 9) काम के हैं। लड़कों की स्थिति पर समीक्षण लड़कियों से पृथक् करना कई दृष्टियों से वांछनीय है। यह विशेषतया अंशकालिक व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वृत्तिक शिक्षा के विषय में सत्य है। सिडनी के लिए (राजधानी क्षेत्र, जनसंख्या लगभग 20 हज़ार) आंकड़े मैंने देख लिए हैं। इनसे पता चलता है कि शिक्षा संस्थाओं में पढ़ने वाले लड़कों का आयुवर्ग के अनुसार वितरण लगभग वैसा है जैसा तालिका 9 में दिखाया गया है।

तालिका 8

न्यू साउथ वेल्स के स्कूलों, विश्वविद्यालयों और प्राविधिक कालेजों के छात्रों तथा छात्राओं का सानुमानित वितरण †

	पूर्णकालिक छात्रों की संख्या					अंशकालिक छात्रों की संख्या			
आयु वर्ग	राज्य स्कूल	प्राइवेट स्कूल	सिडनी विश्व०	अध्या. कालेज	योग	सिडनी विश्व०वि०	विश्व०विद्या प्राविधिक	प्रावधिक कालेज	योग
14	72	23	—	—	95	—	—	——	——
15	24	14	—	—	38	—	—	10-20	10-20
16	10	7	—	—	17	—	—	20-30	20-30
17	2	4	3	1	10	0.5	0.8	15-20	15-20
18	—	1	4.5	1	6.5	0.5	0.8	10-15	10-15
19	—	—	4.5	1	5.5	0.5	0.8	10-15	10- 5

† सिडनी विश्वविद्यालय तथा अध्यापक प्रशिक्षण कालेज के आयुवर्ग की प्रतिशत संख्या का अनुमान लगाना इसलिए कठिन है कि विद्यार्थी यहाँ एक निश्चित आयु में प्रवेश नहीं लेते अपितु दो वर्ष से भी अधिक समय लगाते हैं। प्रवेश की संख्याओं से पता चलता है कि अंशकालिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या केवल 10 प्रतिशत है। प्राविधिक कालेजों के अंशकालिक छात्रों की संख्या सानुमानित है।

आप देखें कि यहाँ आयुवर्ग की दृष्टि से विश्वविद्यालय छात्रों की संख्या अधिक से अधिक 8 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। यह संख्या केवल युवकों की सिडनी के राजधानी क्षेत्र की है। तालिका नं० 8 में दिए अल्प अनुमान से युवकों और युवतियों के बीच के अन्तर का आभास मिल जाता है, आम तथा साथ ही साथ इस प्रसिद्ध तथ्य का भी कि ग्रामीण क्षेत्र के लोग विश्वविद्यालय के लिए उतने विद्यार्थी नहीं भेजते जितने नगर क्षेत्र के। तालिका 8 के अन्तिम स्तम्भ में दी गई संख्याएँ सर्टीफिकेट और डिप्लोमा सम्बन्धी अंश-कालिक शिक्षा के विद्यार्थियों के आधिक्य की द्योतक हैं। हम देखते हैं कि

तालिका नं० 9 के किसी भी आयु वर्ग के अन्तिम दो स्तम्भों का योग अधिक उतरता है (जैसा इंगलैण्ड के बारे में है—तालिका 8)। यह अंशकालिक शिक्षा रात्रि के समय हफ्ते में कुछ घंटे की हो सकती है। यह परीक्षाओं के आधार पर 'प्रमाणित शिक्षा अनुभव' के, जिसकी चर्चा मैं कर चुका हूँ, सर्टीफिकेट या डिप्लोमा दिलाती है। किन्तु ब्रिटिश राष्ट्रों में, जैसा कि हम देख रहे हैं, यह सफल नहीं होगी।

तालिका 9

सिडनी, न्यू साउथ वेल्स में प्रत्येक आयुवर्ग के अंशकालिक या पूर्णकालिक छात्रों की प्रतिशत संख्या

आयु वर्ग	राज्य स्कूल	प्राइवेट स्कूल	दो विश्वविद्यालय‡		योग	प्रावि० कालेज
			पूर्णकालिक	अंशकालिक	पूर्णकालिक	अंशकालिक
15	29	21	—	—	50	20
16	9	14	1.1	—	24	20
17	3.5	6.5	5.5	0.5	16	30
18	1.0	1.0	6.5	1.5	8.5	30

‡ सिडनी विश्वविद्यालय और न्यू साउथ वेल्स प्राविधिक विश्वविद्यालय।

औद्योगीकृत समाज द्वारा अपेक्षित वृत्तियों में जनता के खर्च पर युवकों को प्रशिक्षण दिलाने की धारणा उन्नीसवीं शताब्दी के इंगलैंड की देन मानी जानी चाहिए। करदाता के धन द्वारा अंशकालिक प्रशिक्षण रात्रि की पारी में भी हो सकता है और दिन की पारी में भी। यह बहुत कुछ मालिक की इच्छा पर निर्भर करता है। कौशलपूर्ण वृत्तियों के लिए ब्रिटेन में यह प्रशिक्षण प्रणाली एपरेण्टिस प्रशिक्षण (Apprentice training) के साथ सम्बद्ध है। आस्ट्रेलिया में इस योजना को चलाने के लिए प्रत्येक राज्य की अपनी व्यवस्था है। इस प्रकार नौकरी के साथ-साथ चलने वाली शिक्षा विशेषरूप से उसी समाज के लिए उपयुक्त है जिसकी अधिकाँश जनसंख्या नगरों में रहती है। किन्तु आस्ट्रेलिया में तकनीकी स्कूलों और कालेजों की शाखाएँ छोटे नगरों में भी काम कर रही हैं और विशेष

रूप से इसी उद्देश्य से एक रेल गाड़ी एक प्रशिक्षण-केन्द्र के रूप में काम करने के लिए दूर-दूर के क़स्बों को भेजी जाती हैं।

जीविकोपार्जन के साथ शिक्षा चलाने के ब्रिटिश तथा अमरीकी दृष्टिकोण में अभी कुछ समय पूर्व तक लगभग मतभेद-सा रहा है। सच पूछा जाय तो अमरीकी युवक या युवती स्कूल काल में तो पूर्णकालिक छात्र बना रहता है किन्तु अक्सर कालेज जाते ही वह साथ ही साथ धनोपार्जन शुरू कर देता है विशेषतया गर्मी की छुट्टियों में। बिटिश राष्ट्रों में कम से कम पुराने समय में तो स्कूल या विश्वविद्यालय काल में विरले ही युवक या युवती धनोपार्जन करते थे। हाँ पूर्णकालिक शिक्षा छोड़ने के बाद तथा कोई काम कर लेने के बाद वे साथ-साथ आगे की शिक्षा जारी रख सकते थे। इस आगे की शिक्षा का प्रायः सामान्यरूप से, व्यक्ति के पद अथवा उसकी व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षा से घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

स्कूल या कालेज जीवन में अंशकालिक कार्य करके जीविकोपार्जन करने वाले तथा नौकरी करके अंशकालिक शिक्षा ग्रहण करने वाले लोगों को पृथक् करने वाली एक स्पष्ट किन्तु चलती रेखा है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड वालों ने मुझे बताया कि उनकी और हमारी अंशकालिक और पूर्णकालिक व्यवस्था का अन्तर बहुत कुछ, काल्पनिक व्यवस्था है। उक्त भेद-रेखा पतली होते हुए भी, सच पूछिए, तो बड़ी महत्त्वपूर्ण है। अंशकालिक शिक्षा तथा अंशकालिक रोज़गार का यह भेद, वस्तुतः सामान्य शिक्षा के महत्त्व या इस बात पर निर्भर करता है कि (जैफर्सन के शब्दों में) सर्वसामान्य को 'किस प्रकार की शिक्षा' दी जाय कि उनके हाथों में स्वतन्त्रता सुरक्षित रहे।

यदि यह मान लिया जाय कि किशोरों के लिए कर-पोषित शिक्षा का एक मात्र लक्ष्य उनमें कौशल का विकास करना तथा उनको व्यावसायानुकल ज्ञान प्रदान करना है तो जीविकोपार्जन के साथ-साथ चलने वाली ब्रिटिश शिक्षा पद्धति इसके बहुत अनुकूल पड़ेगी। किन्तु आस्ट्रेलिया के अनुभव से मुझे पता चलता है कि एक कर्मचारी आमतौर से, अंशकालिक व्यावसायिक शिक्षा को ज्यादा पसन्द करेगा। मैं जानता हूँ कि खासतौर से, इंगलैंड के सांस्कृतिक प्रौढ़ शिक्षा के हिमायती, इस बात को आसानी से स्वीकार नहीं करेंगे। किन्तु प्राप्त तथ्यों के आधार पर मुझे अपने उक्त निष्कर्ष के विषय में कोई सन्देह नहीं।

यदि एक लोकतन्त्र में सभी नागरिकों के लिए समृद्ध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का वास्तव में महत्त्व है तब तो तरुणवर्ग को कालेज या स्कूल की ओर निष्ठावान होना चाहिए, नौकरी की ओर नहीं। पूर्णकालिक विद्यार्थी आसानी से कार्यानुभव प्राप्त कर सकता है और सभी आयु-वर्ग के अधिक से अधिक विद्यार्थियों को प्रयत्नशील होना चाहिए। इन परिस्थितियों में ही लोकतन्त्रीय जीवन-पद्धति भौतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों के विकास तथा अमरीकी इतिहास और आदर्शों के ज्ञान की प्रेरणा देनेवाली शिक्षा जारी रह सकती है। एक बार युवक में नौकरी के लिए आकर्षण उत्पन्न हुआ; उसकी शिक्षा अंशकालिक हुई तो यह प्रायः निश्चित समझिए कि वह व्यावसायिक प्रशिक्षण का रूप ले लेगी। अस्तु, जहाँ हम यह आशा कर सकते हैं, और करनी चाहिए भी, कि 16 से लेकर 20 वर्ष की आयु तक अधिक से अधिक नवयुवक राष्ट्र के सृजनात्मक कार्यों में हाथ बटायें, वहीं मेरी यह भी धारणा है कि पूर्णकालिक शिक्षा के अमरीकी स्वरूप के प्रति हमारी निष्ठा अटल रहनी चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा में अनेकता और एकता

यहाँ तक मैंने अमरीका की माध्यमिक शिक्षा के भविष्य के बारे में एक अनुमान मात्र लगाया है। इस पर आगे विचार करने की आवश्यकता है। मैंने यह मान लिया है कि संयुक्तराज्य का प्रत्येक वर्ग स्थानीय नियन्त्रण-बद्ध कर-पोषित पब्लिक स्कूलों के माध्यम से अपने युवक समाज को यथेष्ठ शिक्षा प्रदान कर रहा है। यह संयुक्तराज्य की माध्यमिक तथा प्राथमिक शिक्षा का एक विशिष्ट रूप है जो इसी शताब्दी की देन है। हाई स्कूल या इसके समकक्ष शिक्षा संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या में से लगभग 90 प्रतिशत पब्लिक स्कूलों में से कोई 8 या 9 प्रतिशत साम्प्रदायिक प्राइवेट स्कूलों से तथा 2 प्रतिशत से भी कम धर्म-निरपेक्ष माध्यमिक स्कूलों से सम्बद्ध हैं। प्राइवेट माध्यमिक शिक्षा को चलाने में कर-निधि का प्रयोग नहीं किया जाता।

अमरीकी शिक्षा का यह स्वरूप अन्य अंग्रेजी भाषी राष्ट्रों से बिलकुल भिन्न है। हमने पहले ही देख लिया कि यहाँ के नवयुवक एक बहुत बड़ी संख्या में पूर्णकालिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त हमारी शिक्षा पद्धति की यह विशेषता है कि प्राइवेट स्कूलों में हमारे बहुत कम नवयुवक जाते हैं।

इंगलैंड और स्काटलैंड की भाँति यहाँ करपोषित साम्प्रदायिक स्कूल नहीं हैं। क्या अमरीकी शिक्षा पद्धति इतनी लोकप्रिय हो गई है कि इसके असफल होने की कोई आशंका नहीं ? आज से 20 या 30 साल पहले इसका उत्तर 'हाँ' में मिल सकता था। लेकिन आज परिस्थिति भिन्न हो गई है। संयुक्तराज्य की शिक्षा के भविष्य पर यदि निष्पक्ष विचार-विमर्श करना है तो हम बहुत-से सशक्त धार्मिक नेताओं के अस्तित्व को नहीं भुला सकते जो वर्तमान शिक्षा पद्धति को अमरीकी जीवन के लिए स्थायी मानने को तैयार नहीं। हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि इस समय यदि देश का 10 प्रतिशत छात्र प्राइवेट स्कूल में पढ़ता है तो कुछ नगरों में यह संख्या 40 प्रतिशत तक पहुँच जाती है। इसके अतिरिक्त देश के कुछ भागों में प्राइवेट स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या बढ़ रही है। अतः आज यह प्रत्येक नागरिक के लिए आवश्यक है कि वह बुनियादी मसले—अर्थात् अमरीकी शिक्षा पद्धति के भविष्य पर ध्यानपूर्वक विचार करे।

पिछले कुछ वर्षों (1949 से 1952 तक) पब्लिक स्कूलों पर आलोचना की जो बौछार हुई है उसको प्रस्तुत करके में यहाँ पाठक का समय बर्बाद नहीं करना चाहता। बहुत-से क्षेत्रों में पब्लिक स्कूलों के सुरक्षित रखने के उद्देश्य से संगठित नागरिक समितियाँ पब्लिक स्कूलों की ओर उनकी आस्था की परिचायक हैं। अनुत्तरदायित्वपूर्ण आक्षेपों पर कड़ी निगाह रखी जायगी। किन्तु इन कठोर तथा पूर्वाग्रहपूर्ण आक्षेपों से हमारी शिक्षा पद्धति को कुछ धक्का तो अवश्य पहुँचेगा, पर इसमें कोई मूल परिवर्तन नहीं होगा। लेकिन अमरीका की सामान्य शिक्षा पद्धति पर मूलभूत समालोचनाओं पर विचार करने में कोई हर्ज नहीं। हो सकता है कि आलोचकों के सुझाव के अनुरूप विकल्प निकल आये। सुविधा की दृष्टि में ऐसे विकल्पों को आस्ट्रेलियाई और अंग्रेजी पद्धति कहेंगे। इनमें से एक तो ऐसा है जिसके अनुसार 15 से लेकर 17 वर्ष के विद्यार्थियों की बहुत बड़ी संख्या ऐसे धार्मिक प्राइवेट स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करेगी जो कर से प्राप्त धन पर नहीं पलेंगे। दूसरे विकल्प के अनुसार ऐसे प्राइवेट स्कूल धार्मिक हों या न हों कर से धन प्राप्त कर सकेंगे।

जन-शिक्षा के लिए भी अन्य शिक्षाओं तथा दूसरी जन-संस्थाओं की भाँति आलोचना अपेक्षित है। किन्तु अमरीकी शिक्षा के आलोचक दो प्रकार के हैं :

एक तो वे जो वर्तमान पद्धति के चलते रहने के पक्ष में हैं तथा केवल स्कूलों के ढांचे में सुधार चाहते हैं; दूसरे वे जो शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति लाना चाहते हैं। इन दोनों में स्पष्ट विभाजन होना चाहिए। अतः मैं इस बात पर जोर देना उचित समझूँगा कि हमारे पब्लिक स्कूलों के आलोचकों को दो प्रमुख बातों पर अपना विचार स्पष्ट कर देना चाहिए। अपने पब्लिक स्कूलों की व्यवस्था को सन्देह की दृष्टि से देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति से मैं पूछना चाहूँगा—"क्या आप प्राइवेट स्कूलों की संख्या तथा क्षेत्र को बढ़ाना चाहते हैं?" यदि उत्तर मिलेगा, 'हाँ', तो मेरा दूसरा प्रश्न यह होगा—"क्या आप उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब इन स्कूलों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कर-धन से सहायता मिलेगी।" यदि उत्तर पुनः 'हाँ' में मिलता है तो उक्त विभाजन स्पष्ट हो जाता है और हम इस महत्त्वपूर्ण प्रश्न पर युक्तिपूर्ण ढंग से विचार-विमर्श कर सकते हैं।

कहना न होगा कि मैं उक्त दोनों पक्षों का विरोधी हूँ। किन्तु मेरा अधिक आग्रह इस बात पर है कि पब्लिक स्कूल के आलोचकों को अपना असली रूप प्रकट कर देना चाहिए। यह किसी एक सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखने वाला मसला नहीं। साम्प्रदायिक माध्यमिक स्कूलों के विस्तार के प्रचार आपको बहुत-से ईसाई गिरजाघरों में मिल जाएँगे। पब्लिक स्कूलों का अत्यन्त स्पष्टवादी आलोचक एक प्रोटेस्टेण्ट पादरी है। इस सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करता हुआ वह कहता है, "सच पूछा जाय तो कम्युनिस्ट अधिक क्रान्तिकारी नहीं है। वह तो केवल जान ड्यूई के हठमूलक धर्मनिरपेक्षवाद (Progmatic secularism of John Dewey) के स्थान पर कार्ल मार्क्स के तर्कमूलक धर्मनिरपेक्षवाद (Logical Secularism of Karl Marx) की स्थापना करना चाहते हैं।" यदि वह पादरी आधुनिक अमरीकी शिक्षा पर आक्षेप करना शुरू कर दे और यह कहे कि उसकी दृष्टि में शिक्षा को धर्म निरपेक्षता तथा कम्यूनिज्म से समान खतरा है तो पाठक को यह समझना आसान हो जायगा कि इस पुस्तक को लिखने का मेरा क्या उद्देश्य है।

बहुत-से ऐसे निष्ठावान प्रोटेस्टेण्ट, यहूदी तथा कैथोलिक हैं जिनके विचार में धार्मिक आधार से विरहित शिक्षा अत्यन्त असन्तोषजनक शिक्षा है। मैं समझता हूँ कि यह उन लोगों की भ्रान्त धारणा है कि, चूंकि करपोषित स्कूलों को साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों से मुक्त होना चाहिए, अतः उनसे नैतिक तथा आध्यात्मिक

मूल्यों के विकास की आशा नहीं करनी चाहिए। यह विचार वस्तुतः आस्ट्रेलियाई हैडमास्टरों का है। इसकी चर्चा मैं प्रथम अध्याय में कर चुका हूँ।

धार्मिक दृष्टिकोण को विशुद्ध साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से मिलाना, मैं समझता हूँ, बिलकुल ग़लत है, फिर भी उन्हें अपने स्कूलों का संगठन करने का पूरा अधिकार है। संयुक्तराज्य के सर्वोच्च न्यायालय ने औरगन के प्रसिद्ध मुकदमे (Oregan Case) को लेकर इस विषय में क़ानून बना दिया। किन्तु हमारे समाज में अनेकता की सहिष्णुता की मौलिक भावना बड़ी पुरानी है तथा यह क़ानूनी-व्यवस्था से कहीं बढ़कर है। आज एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो प्राइवेट स्कूलों की प्रगति में बाधा पहुँचाना चाहता हो। यदि कोई ऐसा हुआ भी तो इस बात को अमल में लाने पर उस पर ऐसी कठोर वैधानिक कार्यवाही होगी जो संभवतः हमारी स्वतन्त्रता की मौलिक भावना के भी विपरीत जायगी।

लेकिन प्राइवेट स्कूल की प्रगति में बाधक व्यक्ति के लिए राज्य अथवा राष्ट्र की वैधानिक प्रक्रिया पर विचार तक करने की अनिच्छा एक बात है और उनके विकास में उदासीनता दिखाना दूसरी बात। यह प्राइवेट स्कूलों के पोषणार्थ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में कर-धन को खर्च करने के विषय में अपनी सलाह देने से तो निश्चय ही अत्यन्त भिन्न बात है।

इंगलैंड और स्काटलैंड के स्कूलों, यहाँ तक साम्प्रदायिक स्कूलों, को भी कोष से सहायता दी जाती है। संयुक्तराज्य में अंग्रेजी पद्धति के अपमान की पूरी छूट है। वास्तव में जो लोग यह सोचते हैं कि साम्प्रदायिक नियन्त्रण से मुक्त शिक्षा अच्छी शिक्षा नहीं, उनको यह बात बहुत ही युक्तियुक्त प्रतीत होगी। इस बात पर अमरीका के प्रत्येक नागरिक को अत्यन्त निष्पक्ष भाव से विचार करना चाहिए। इससे उसे अपने वास्तविक दृष्टिकोण का पता चलेगा। बात यह है कि सामाजिक ढाँचे के बदलने के तो कई ढंग हैं। हम धीरे-धीरे ऐसी स्थिति तक आसानी से पहुँच सकते हैं जिसमें कुछ राज्यों में अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति लागू करना अनिवार्य हो जाय। यदि कुछ नगरों तथा क़स्बों में अब पब्लिक हाईस्कूलों को समर्थन नहीं मिलता तो उनके सफल प्रतिद्वन्द्वी प्राइवेट स्कूलों को जन कोष से सहायता मिलना स्वाभाविक है। किसी न किसी भांति धार्मिक स्कूलों के लिए जनकोष के प्रयोग के वर्तमान वैधानिक नियन्त्रण दूर हो ही जाएँगे।

पिछले 75 वर्षों में कुछ बच्चों को छोड़कर सभी ने पब्लिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की है। कई विदेशी शिक्षा समीक्षकों का यह विचार है कि हम इन स्कूलों के बिना उन्नीसवीं शताब्दी में अपने देश में आई हुई विभिन्न संस्कृतियों में इतनी तीव्रता से तादात्म्य नहीं स्थापित कर सकते थे। हमारे स्कूलों ने एक निश्चित भौगोलिक सीमा के अन्तर्गत सभी सम्प्रदायों तथा सभी वर्गों के लोगों को लाभ पहुँचाया है। मेरे विचार में तो इस प्रणाली का जारी रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस दृष्टि से व्यापक (Comprehensive) हाई स्कूलों को अमरीकी करदाता का हार्दिक समर्थन मिलना चाहिए। हमारे जितने ही युवक पब्लिक स्कूलों में जाना बन्द करेंगे तथा अन्यत्र शिक्षा प्राप्त करेंगे, हमारी लोकतान्त्रिक एकता उतनी ही अधिक खतरे में होगी। करदाता के धन का प्राइवेट स्कूलों पर प्रयोग करने का अभिप्राय तो यह हुआ कि अमरीकी समाज अपने ही हाथों अपने पैर में कुल्हाड़ी मारना चाहता है। यह बात मैं उन लोगों से कहना चाहता हूँ जो अमरीकी शिक्षा-पद्धति को अंग्रेजी बाना पहनाने का ढिंढोरा पीट रहे हैं।

आप पूछ सकते हैं कि मुझे आस्ट्रेलियाई तथा अंग्रेजी शिक्षा पद्धति से इतनी चिढ़ क्यों है। या, दूसरे शब्दों में यों कहें—कि सर्वसामान्य के लिए निःशुल्क शिक्षा के लाभ क्या हैं ? इन प्रश्नों का उत्तर, संभवतः, प्रश्नों से ही मिल जाता है। यदि आप उस लोकतन्त्रीय, आदर्श को स्वीकार करते हैं जिसके प्रवहमान समाज में कम से कम वर्ग भेद हो, अधिकाधिक अस्थिरता हो तथा विभिन्न व्यावसायिक वर्गों में अधिकाधिक सामंजस्य की भावना हो; तो आपको व्यापक पब्लिक हाईस्कूल की प्रणाली को स्वीकार करना पड़ेगा। इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं है। इसके विपरीत, यदि आप पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक एक निश्चित पैतृक-स्थिति पर आघृत वर्गभेद की भावना को जारी रखना चाहते हैं तो आपको आँख बन्द करके द्विविध स्कूलों की माँग करनी चाहिए। क्यूबेक (Quebec) प्रान्त में यही स्थिति काम कर रही है। वहाँ के अधिकांश लोग दो सांस्कृतिक वर्गों के पक्ष में हैं। ब्रिटिश प्रणाली वर्गभेद की भावना को बढ़ावा देती है। इसका अभाव उस भावना को समाप्त करता है। मैं उन लोगों से निवेदन करूँगा, जो जानबूझ कर अपने बच्चों को साम्प्रदायिक स्कूलों में भेजने में अटक हैं, कि वे इस प्रकार की शिक्षा प्रारम्भिक वर्षों तक ही सीमित रखें।

जहाँ तक संख्या का प्रश्न है हमारी वर्तमान द्विविध प्रणाली के छात्रों की संख्या अभी कम है—हमारे माध्यमिक स्कूलों के लगभग 92 प्रतिशत छात्र पब्लिक स्कलों में हैं। आर्थिक तथा धार्मिक आधार पर समाज के स्तर-विन्यास की दृष्टि से द्विविध प्रणाली का प्रभाव अवश्य दृष्टिगोचर होने लगा है। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से हम अंग्रेजी 'पब्लिक स्कूल' प्रणाली से उतने दूर नहीं हैं जितना शायद हम अक्सर सोचते हैं। बफेलो विश्वविद्यालय के कुलपति मैंकोनेल (Chancellor McConnel of the University of Buffalo) ने अंग्रेजी शिक्षा पर विवरण प्रस्तुत करते हुए 1948 में आक्सफोर्ड में प्रवेश लेने वाले छात्रों में ग्रामर स्कूल के छात्रों के ऊपर 'पब्लिक स्कूल' के छात्रों के प्राध्यान्य का उल्लेख किया है। संयुक्त राज्य के लगभग आधे दर्जन ईस्टर्न कालेजों में भी यही स्थिति देखने को मिलती है। उनमें प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के कोई आधे विद्यार्थी प्राइवेट प्रोटेस्टेण्ट स्कूलों के होते हैं जो पूरे आयुवर्ग के कुछ प्रतिशत के आसपास होते हैं। किन्तु यहीं यह बता देना आवश्यक होगा कि ये ही कालेज पिछले 25 वर्षों से पब्लिक हाई स्कूल के काफी छात्रों को आकर्षित करने का प्रयास करते रहे हैं। ये छात्र भौगोलिक दृष्टि से राष्ट्रभक्त बनना चाहते हैं तथा प्रत्येक आयु-वर्ग का प्रतिनिधित्व करना चाहते हैं। मेरे लिए यह आशापूर्ण लक्षण हैं कि ये अपने इस लक्ष्य के बहुत निकट पहुँच गए हैं।

बड़े दुख की बात है कि कुछ निश्चित नगर क्षेत्रों में ऐसे स्थानों पर प्राइवेट स्कूलों की स्थापना की गई है जहाँ एक पीढ़ी पहले पब्लिक स्कूल नगर अथवा कस्बे के समस्त युवकों को शिक्षा देते थे। विशेषतया हमारे कुछ पश्चिमी नगरों में धनी घरानों के बच्चों के लिए प्राइवेट शिक्षा की प्रवृत्ति अभी कुछ दिनों पहले शुरू हुई है। लेकिन पब्लिक हाई स्कूलों के लिए काम करने वालों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। पब्लिक स्कूल तो सर्वसामान्य के स्कूल हैं। इनके कार्यकर्ता लोग स्कूलों के उदय से न तो प्रसन्न हुए हैं ना ही दुखी। पर एक ही क्षेत्र में नए स्वाधीन स्कूल की स्थापना जन शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए चुनौती अवश्य है। माना, कि कुछ नए स्वाधीन स्कूलों के 'आकर्षक निवेदन' ने भी कुछ काम किया होगा कि यदि स्थानीय हाईस्कूलों का प्रबन्ध बुद्धिमत्तापूर्ण होता तो इनका जन्म कभी नहीं हो सकता था। शिक्षा

एक सामाजिक प्रक्रिया है। संयुक्तराष्ट्र एक स्वतन्त्र देश है और यहाँ की जनता शिक्षकों के बहकावे में नहीं आ सकती। हाई स्कूलों से सम्बद्ध सभी लोगों को चाहिए कि वे इनमें समुचित सुधार करें। अब पब्लिक स्कूल के प्रशासकों को यह महसूस करना चाहिए कि मेधावी छात्रों की शिक्षा को लेकर इनकी जो आलोचना की जाती है वह निराधार नहीं है। यह समस्या विशेषतया, राजधानी क्षेत्र में अधिक जटिल है। आस्ट्रेलियाई पब्लिक स्कूलों की सफलता से हमको सीख लेनी चाहिए।

संयुक्त राज्य में प्राइवेट स्कूल रहे हैं और रहेंगे। यह बात अभिभावकों पर है कि वे अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में भेजते हैं अथवा पब्लिक स्कूलों में। यदि वे धर्मनिरपेक्ष स्कूलों को छात्रों में नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने में अक्षम समझते हैं तो उनको यह नहीं भुला देना चाहिए कि यहाँ सभी सम्प्रदायों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इसी प्रकार यदि किसी परिवार को सन्देह है कि स्थानीय हाईस्कूल मेधावी छात्रों को विश्वविद्यालयीय शिक्षा के लिए यथेष्ट योग्य नहीं बना सकते तो उनको इसका सन्तुलन इस बात से करना चाहिए कि केवल इन्हीं स्कूलों में सभी वर्गों के छात्रों को परस्पर मिलने और एक-दूसरे को समझने की सुविधा है। हम यहाँ इस विवाद में नहीं पड़ते कि संयुक्त राज्य की वर्तमान परिस्थितियों में सभी पब्लिक स्कूल इतने उत्कृष्ट बन पायेंगे या नहीं कि प्राइवेट असाम्प्रदायिक स्कूलों के चलने का अवसर समाप्त हो जाय। प्राइवेट स्कूलों में काम कर रहे अधिकाँश लोगों को आशा है कि उनके प्रयासों का पब्लिक स्कूलों पर इतना प्रभाव पड़े कि अधिकाँश अभिभावक अपने मेधावी बच्चों को प्राइवेट स्कूलों में ही भेजना पसन्द करेंगे।

कुछ सीमाओं के अन्दर प्राइवेट तथा पब्लिक स्कूलों की होड़ से पब्लिक का लाभ हो सकता है। मैंने 'कुछ सीमाओं के अन्दर होड़' जानबूझ कर कहा है। बात यह है कि एक प्राइवेट स्कूल जब तक लगातार छात्रों को भर्ती नहीं करेगा उसका चलना कठिन है; और छात्रों को भर्ती करना तब तक संभव नहीं जब तक करपोषित स्कूलों की ओर से जनता का विश्वास कम न किया जाय। चूँकि, जनशिक्षा के लिए धन-राशि बहुत कुछ करदाता के उत्साह पर निर्भर करती है, प्राइवेट स्कूलों के उत्साही प्रचारकों के लिए समाज में जनशिक्षा विरोधी अभियान चलाना स्वाभाविक है। साम्प्रदायिक स्कूल के विषय में यह अक्षरशः सत्य

है। यदि कोई धार्मिक वर्ग किसी लोक समाज क्षेत्र में स्कूल खोलता है तो उसके प्रस्थापकों के लिए स्थानीय पब्लिक स्कूल के प्रति अपना अपमानजनक दृष्टि-कोण छिपाना कठिन है। इस प्रकार यद्यपि उक्त वर्ग के सदस्य अपने प्राइवेट स्कूल के लिए कर-धन नहीं चाहते, फिर भी उनकी पब्लिक स्कूलों की आलो-चना करदाता के उत्साह को कम कर सकती है। प्राइवेट स्कूलों का परीक्षाफल भी इसी प्रकार की स्थिति उत्पन्न कर सकता है; क्योंकि समृद्ध माँ-बाप अपने बच्चों को बहुत कुछ स्कूल के परीक्षाफल के आधार पर पढ़ने भेजते हैं। प्राइवेट शिक्षा के कर्मठ कार्यकर्ता, संभवतः, यह बात भुला देते हैं कि छात्रों की संख्या पर दृष्टि रखे बिना प्राइवेट स्कूलों के विकास से जन-शिक्षा-अभियान की प्रगति में बाधा पहुँचती है।

प्राइवेट कालेजों तथा विश्वविद्यालयों और राज्य अथवा नगरपालिका की संस्थाओं में ऐसी होड़ नहीं दृष्टिगोचर होती। राज्य विश्वविद्यालयों पर ऐसे आक्षेप नहीं किये गए जैसे पब्लिक माध्यमिक स्कूलों पर। जहाँ तक मुझे पता है जनकोष द्वारा पोषित साम्प्रदायिक कालेजों या विश्वविद्यालयों की अब तक कोई योजना नहीं है। विश्वविद्यालय या कालेजों का सम्बन्ध एक सीमित आयु-वर्ग से होता है। ये संस्थाएँ राज्य सरकारों द्वारा संचालित हों अथवा प्राइवेट इनका स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि ये छात्रों में एकता की भावना उत्पन्न करने में व्यापक हाई स्कूलों की बराबरी नहीं कर सकतीं। प्राइवेट माध्यमिक स्कूलों के विस्तार के कुछ प्रचारकों ने कालेज तथा स्कूल की स्थिति एवं कार्य पद्धति में समानता स्थापित करके कुछ प्राइवेट कालेजों से सम्बन्ध जोड़ लिया है। प्रश्न यह उठता है कि यदि एक प्राइवेट कालेज का पोषण किया जा सकता है तो सभी प्राइवेट स्कूल अच्छे क्यों नहीं हैं। इस युक्ति में विवादास्पद बात तो उठाई ही नहीं गई है। वह यह कि समाज में किसी स्कूल का मूल्य तभी बढ़ता है जब वह समाज के पूरे तरुणवर्ग को अपने यहाँ स्थान देता है।

यदि हमारी दृष्टि उस समाज पर जाती है जहाँ केवल एक व्यापक हाई-स्कूल कार्य कर रहा है तो एक बौद्धिक विचार विमर्श के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो जाती है। प्रश्न यह है "क्या आप वर्तमान छात्र-समाज की एक बहुत बड़ी संख्या को समकक्ष निःशुल्क धार्मिक और सशुल्क धर्मनिरपेक्ष प्राइवेट स्कूलों में बिखेरना पसन्द करेंगे ?" यदि आपका उत्तर "हाँ" में आता है तो दूसरा प्रश्न

तुरन्त उठता है, आप वर्तमान आस्ट्रेलियाई-प्रणाली (जहाँ के प्राइवेट स्कूल कर-धन नहीं लेते) के समर्थक हैं या अंग्रेजी प्रणाली के। किन्तु अधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न पहला है। वस्तुतः यह प्रश्न अमरीकी पब्लिक स्कूलों के उस पहलू को सामने लाता है जिसके द्वारा वे राष्ट्रीय एकता की भावना को दृढ़ बनाते हैं। यदि किसी समाज विशेष में व्यापक हाई स्कूल नहीं है या है तो बड़े निम्न स्तर का तो प्रश्न उठता है, "आप उच्चकोटि का पब्लिक स्कूल स्थापित करने का प्रयास करेंगे या प्राइवेट स्कूलों के समह का।" इसमें भी मूल-भावना वही है।

हम लोग अपने स्कूलों द्वारा राष्ट्रीय जीवन में एकता लाना चाहते हैं। साथ ही साथ हम वह अनेकता भी चाहते हैं जो नागरिकों के छोटे-छोटे समूहों की भावना तथा कार्य की स्वतन्त्रता में पनपती है। हम शिक्षा के एकांगी ढांचे के पक्ष में नहीं। हम माध्यमिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों में एकरूपता एवं क्रम-बद्धता भी नहीं चाहते। यदि हमारे पब्लिक स्कल हमारे तरुणों की शिक्षा के प्रधान माध्यम रहें तथा यथासंभव समाज के सभी युवक पारिवारिक सम्पत्ति तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भूल कर एक ही स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते रहें तो एकता की भावना उत्पन्न करने में कोई कठिनाई नहीं होगी। नए प्रयोगों में अनेकता को हमने अपने स्कूलों के लिए स्थानीय उत्तरदायित्व की विचार-धारा पर लगातार बल देकर अपनाया है। मानव सभ्यता के विकास में ये दोनों विचार, बहुत हद तक नए हैं। संयुक्तराज्य के बाहर इन दोनों का समवेत स्वरूप कहीं भी देखने को नहीं मिलेगा।

अपने निःशुल्क स्कूलों का अत्यन्त व्यापक स्तर पर संगठन करके हम अपने तरुणों में लोकतन्त्रीय भावना जगाते रह सकते हैं। धार्मिक सहिष्णुता, विभिन्न व्यावसायिक वर्गों में पारस्परिक सम्मान की माध्य तथा व्यक्ति के अधिकारों में विश्वास महान् गुण है जो हमारे हाईस्कूल आज युवकों में भर रहे हैं। हमारे संघीय शासन के राजनीतिक संगठन, ऐंग्लो-सैक्सन-परम्परा के सामान्य विधान के महत्त्व, तथा 'सामान्य प्रक्रिया' एवं सामाजिक दबावों और नियन्त्रणों द्वारा पहुँचे गए निर्णयों के भेद का ज्ञान इत्यादि सारी उपलब्धियाँ बहुत हद तक इस देश के करपोषित निःशुल्क स्कूलों की देन हैं।

इंगलैण्ड के महान् 'पब्लिक स्कूलों' ने जो कुछ उन्नीसवीं शताब्दी में अपने देश के भावी शासक वर्ग के लिए किया आज वही बात अमरीकी हाई-

स्कूल संयुक्तराज्य के शासक वर्ग के लिए कर रहे हैं और वह शासक वर्ग है पूरी जनता। निःशुल्क स्कूलों में भावी डाक्टर, वकील, प्राध्यापक, राजनीतिज्ञ, साहूकार, औद्योगिक अफसर, श्रमिक नेता तथा श्रमिकों ने शिक्षा प्राप्त की तथा 15 से लेकर 17 वर्ष की आयु तक एक साथ खेलते-कूदते रहे, इससे यहाँ के विभिन्न वर्गों का पता चलता है। और ये स्कूल अमरीका की अपनी विशेष देन हैं। इस लोकतन्त्र के भविष्य के लिए इन स्कूलों के निर्वाह तथा इनको और अधिक प्रजातान्त्रिक बनाने की आवश्यकता है।

लोग ये सारी बातें स्वीकार करते हैं पर धार्मिक आधार पर हमारे निःशुल्क स्कूलों की आलोचना करते हैं। इस सम्बन्ध में अभी हाल में प्रकाशित पब्लिक स्कूलों में नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य नामक पुस्तक उल्लेखनीय है। हममें से बहुतों का दृढ़ विश्वास है कि अपने असाम्प्रदायिक स्वरूप के बावजूद भी हमारे करपोषित स्कूलों का एक महान् तथा अविराम उद्देश्य है और वह है नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का विकास।

यदि हम स्थानीय नियन्त्रण के सिद्धान्त पर लगातार ज़ोर देते रहे तो अमरीकी माध्यमिक शिक्षा में अनेकता अवश्यम्भावी है। हमारी माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में हज़ारों स्थानीय शिक्षा-मंडलों द्वारा प्रस्तुत कुछ नियन्त्रण भी हैं। एक विदेशी से हमारी अनेकता एक अव्यवस्था प्रतीत होगी। किन्तु यह हमारे नमनीय तथा विकेन्द्रित लोकतन्त्र की देन है। ऐसा समय आ सकता है कि कोई राज्य अथवा संघीय शासन इस विचारधारा को समाप्त कर दे, किन्तु जहाँ तक माध्यमिक शिक्षा का प्रश्न है मुझे कोई खतरा नज़र नहीं आता। राष्ट्रीय युवक प्रशासन (National Youth Administration) का खतरा 1930 में प्रतीत हुआ था पर वह अब भुला दिया गया है। संक्षेप में प्रश्न उठता है "क्या अपने पब्लिक स्कूलों के माध्यम से हम अनेकता के साथ ही साथ राष्ट्रीय एकता प्राप्त कर सकते हैं? उत्तर मिलता है—"हाँ", पर यदि हम चाहते हैं तो। मेरा अपना व्यक्तिगत उत्तर होगा—अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

अन्त में भावी कार्यक्रमों पर एक अन्तिम दृष्टि डालना चाहूँगा। हमारे हाईस्कूल के बहुत से कार्यक्रमों की कमियों तथा द्विवर्षीय स्थानीय कालेजों के स्वरूप के बावजूद हमें पिछले 25 वर्षों में समस्त अमरीकी तरुणों के लिए

यथेष्ठ स्कूलों की व्यवस्था करने में काफी सफलता मिली है। आगे के लिए हमको 'प्रतिभा के सहज अभिजात्य' के प्रशिक्षण की ब्रिटिश-भावना तथा समस्त भावी नागरिकों के लिए सामान्य शिक्षा पर अमरीकी धारणा को एक साथ मिलाने के लिए प्रयास करना होगा। यदि हम ऐसा कर सके तो हमारा औद्योगीकृत समाज ऊँचा उठेगा तथा साथ ही साथ हम समस्त जनता को आवश्यक शिक्षा प्रदान कर सकेंगे जिससे उनके हाथों में 'हमारी स्वतन्त्रता सुरक्षित रह सके।'

●